जीवजंतु बोलते भी हैं, सोचते भी हैं

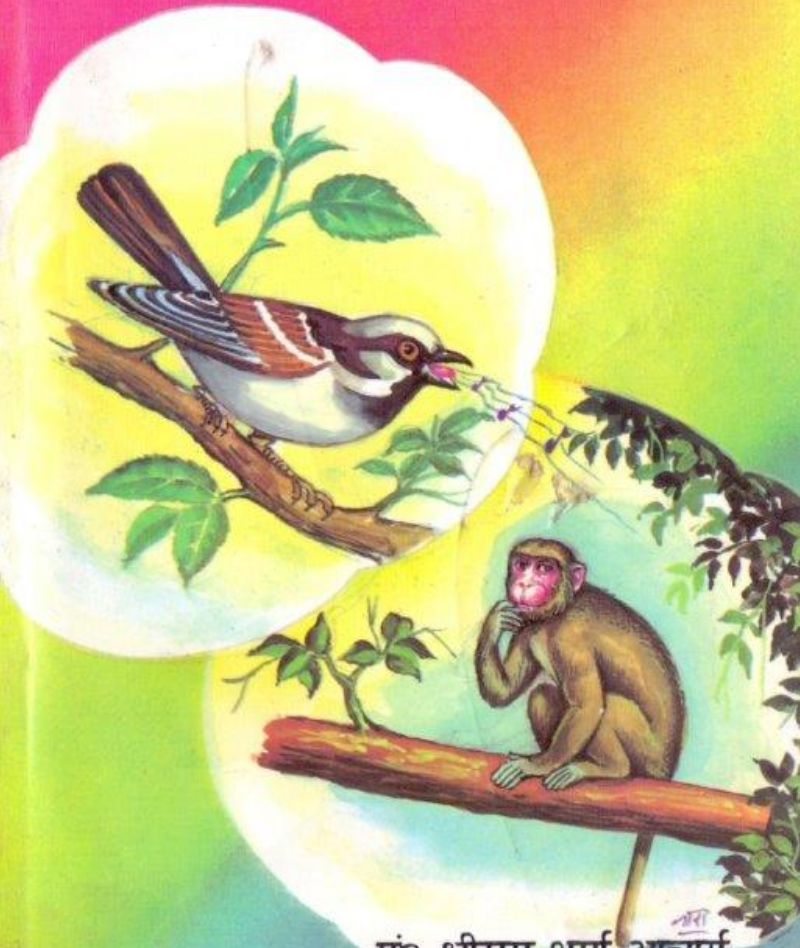

-पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

जीव-जंतु बोलते भी हैं, सोचते भी हैं

❋

लेखक :
वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

❋

प्रकाशक :
युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट
गायत्री तपोभूमि, मथुरा
फोन : (०५६५) २५३०१२८, २५३०३९९
मो. ०९९२७०८६२८७, ०९९२७०८६२८९
फैक्स नं०- २५३०२००

❋

पुनरावृत्ति सन् २०११ मूल्य : २१.०० रुपये

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विषय-सूची

१.	क्या मनुष्य सचमुच सर्वश्रेष्ठ प्राणी है ?	३
२.	बुद्धिमान होने के कारण मनुष्य सबसे बडा नहीं	२४
३.	मनुष्य जीवन भी एक प्रयास	३७
४.	भाव संवेदनाएँ—आत्म चेतना की प्रतीक	५२
५.	आनंद और उन्नति का आधार	६५
६.	वे भी बोलते हैं कोई समझे तो	८२
७.	बदलती परिस्थितियों में स्वयं भी बदलें	९८

शरीर बुद्धि भावनायें, उनकी अभिव्यक्ति और भाषा की दृष्टि से मनुष्य का अन्य प्राणियों की तुलना में बढ़ा-चढ़ा होना मात्र एक भ्रम है। यह आभास जरूर होता है कि वह अन्य प्राणियों से बढ़ा-चढ़ा और उन्नत है। संभव है यह भ्रम अन्य प्राणियों में भी हो। जिन आधारों पर मनुष्य की श्रेष्ठता सिद्ध की जाती है, वे तो झूठ हैं ही, परंतु उसका यह अर्थ नहीं है कि वस्तुतः मनुष्य अन्य प्राणियों के समान ही है। निस्संदेह मनुष्य अन्य प्राणियों की तुलना में श्रेष्ठ और परमात्मा का सबसे बड़ा पुत्र है, क्योंकि मनुष्य जीवन एक अवसर है, जिसमें यह सिद्ध किया जा सकता है कि परमात्मा ने हमें जो वस्तुएँ, जो विशेषताएँ और जो अधिकार दिये हैं, उनका हम सदुपयोग कर सकते हैं और अपनी प्रामाणिकता कर्त्तव्य परायणता के आधार पर और अधिक उच्च स्थिति प्राप्त करने के योग्य सिद्ध कर सकते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

क्या सचमुच मनुष्य सर्वश्रेष्ठ प्राणी है ?

मनुष्य द्वारा अपनी सर्वश्रेष्ठता को ढेरों प्रमाणों और अनेकों तथ्यों के आधार पर चाहे जिस ढंग से सिद्ध कर लिया जाये, पर इसमें कोई तथ्य है भी अथवा नहीं यह भी विचार किया जाना चाहिए।

मनुष्य की सर्वश्रेष्ठता का आधार यही तो माना जाता है कि उसमें बुद्धि एवं विवेक का तत्त्व विशेष है। उसमें कर्त्तव्यपरायणता, परोपकार, प्रेम, सहयोग, सहानुभूति, सहृदयता तथा संवेदनशीलता के गुण पाये जाते हैं, किंतु इस आधार पर वह सर्वश्रेष्ठ तभी माना जा सकता है, जब सृष्टि के अन्य प्राणियों में इन गुणों का सर्वथा अभाव हो और मनुष्य इन गुणों को पूर्ण रूप से, क्रियात्मक रूप से प्रतिपादित करें। यदि इन गुणों का अस्तित्व अन्य प्राणियों में भी पाया जाता है और वे इसका प्रतिपादन भी करते हैं, तो फिर मनुष्य को सृष्टि के सर्वश्रेष्ठ प्राणी मानने के अहंकार का क्या अर्थ रह जाता है ?

शेर, हाथी, गैंडा, चीता, बैल, भैंसे, गीध, शतुरमुर्ग, मगर, मत्स्य आदि न जाने ऐसे कितने थलचर, नभचर और जलचर जीव परमात्मा की इस सृष्टि में पाये जाते हैं, जो मनुष्य से सैकड़ों गुना अधिक शक्ति रखते हैं। मछली जल में जीवन भर तैर सकती है, पक्षी दिन-दिन भर आकाश में उड़ते रहते हैं। क्या मनुष्य इस विषय में उनकी तुलना कर सकता है ? परिश्रमशीलता के संदर्भ में हाथी, घोड़े, ऊँट, बैल, भैंसे आदि उपयोगी तथा घरेलू जानवर कितना परिश्रम करते और उपयोगी सिद्ध होते हैं, उतना शायद मनुष्य नहीं हो सकता। जबकि इन पशुओं तथा मनुष्य के भोजन में बहुत बड़ा अंतर होता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पशु-पक्षियों के समान स्वावलंबी तथा शिल्पी तो मनुष्य हो ही नहीं सकता। पशु-पक्षी अपने जीवन तथा जीवनोपयोगी सामग्री के लिए किसी पर कभी भी निर्भर नहीं रहते। वे जंगलों, पर्वतों, गुफाओं तथा पानी में अपना आहार आप खोज लेते हैं। उन्हें न किसी पथ-प्रदर्शक की आवश्यकता पड़ती है और न किसी संकेतक की। पशु-पक्षी स्वयं एक-दूसरे पर भी इस संबंध में निर्भर नहीं रहते। अपनी रक्षा तथा आरोग्यता के उपाय भी बिना किसी से पूछे ही कर लिया करते हैं। जीवन के किसी भी क्षेत्र में पशु-पक्षियों जैसा स्वावलंबन मनुष्यों में कहाँ पाया जाता है ? यहाँ तो मनुष्य एक-दूसरे पर इतना निर्भर है कि यदि वे एक-दूसरे की सहायता न करते रहें तो जीना ही कठिन हो जाये।

विलक्षण बौद्धिक क्षमतायें आदि काल से ही वैज्ञानिकों और जीवशास्त्रियों के लिए एक प्रकार की चुनौती रही हैं। बुद्धि, ज्ञान, चिंतन की क्षमता—यही वह तत्त्व हैं जो मृत और जीवित का अंतर स्पष्ट करते हैं। अतएव जीवन को बौद्धिक क्षमता में केंद्रित कर वैज्ञानिक प्रयोगों की प्रणाली अपनाई गयी। इस दिशा में मस्तिष्क की जटिल संरचना एक बहुत बड़ी बाधा है। इस कारण रहस्य अभी तक रहस्य ही बने हुए हैं, तथापि अब तक जितना जाना जा सका है, उससे वैज्ञानिक यह अनुभव करने लगे हैं कि बुद्धि एक सापेक्ष तत्त्व है अर्थात सृष्टि के किसी कोने से समष्टि मस्तिष्क काम कर रहा हो तो आश्चर्य नहीं, जीवन जगत उसी से जितना अंश पा लेता है उतना ही बुद्धिमान होने का गौरव अनुभव करता है।

वैज्ञानिक अब इस बात को अत्यधिक गंभीरता से विचारने लगे हैं कि मानव-मस्तिष्क और उसकी मूलभूत चेतना का समग्र इतिहास अपने इन कम विकसित समझे जाने वाले जीवों के मस्तिष्क की प्रक्रियाओं से ही माना जा सकता है। इसके लिए अब तरह-तरह के प्रयोग प्रारंभ किये गये हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मनुष्य की तरह ही देखा गया कि कई बार एक कुत्ता अत्यधिक बुद्धिमान पाया गया। जबकि उसी जाति के अन्य कुत्ते निरे बुद्धू निकले। चूजे अपने बाप मुर्गे की अपेक्षा अधिक बुद्धि-चातुर्य का परिचय देते हैं। डाल्फिन मछलियों की बुद्धिमत्ता की तो कहानियाँ भी गढ़ी गयी हैं। बुद्धि परीक्षा के लिए कोई बहुत संवेदनशील यंत्र तो अभी तक नहीं गढ़े जा सके, किंतु स्वादिष्ट भोजन की पहचान, जटिल परिस्थितियों के हल आदि के लिए जो विभिन्न प्रयोग किये गये, उनसे पहली दृष्टि में यह स्पष्ट हो गया कि बंदर, डाल्फिन, काली की अपेक्षा लाल लोमड़ी अधिक चतुर होते हैं। नीलकंठ, संघकाक और कौवों की बुद्धि स्वार्थ प्रेरित जैसी होती है—विवेक जनक नहीं। रूस के प्रसिद्ध वैज्ञानिक प्रो. लियोनिद क्रुशिन्स्का ने अपने विचित्र प्रयोगों से यह सिद्ध किया है कि जिस तरह चिंतन से मानवीय शक्ति का ह्रास होता है, पशु-पक्षियों में भी यह प्रक्रिया यथावत होती है। इनमें कुछ तो डर जाते हैं, कुछ बीमार पड़ जाते हैं। संभवतः इन्हीं कारणों से वे जीवन की गहराइयों में नहीं जाकर प्राकृतिक प्रेरणा से सामान्य जीवन यापन और आमोद-प्रमोद के क्रिया-कलापों तक ही सीमित रह जाते हैं।

प्रो० क्रुशिन्स्की के अनुसार तर्क, विवेक और प्राकृतिक हलचलों के अनुरूप अपने को समायोजित करने की बुद्धि अन्य प्राणियों में भी यथावत होती है। इसी कारण वे पर्यावरण की समस्याओं को झेलते हुए भी अपना अस्तित्व बनाये हुए हैं, जबकि मनुष्य उनमें बुरी तरह जकड़ता जा रहा है। उसके अपने ही कारनामे चाहे वह विशाल औद्योगिक प्रगति हो या अणु-आयुधों का निर्माण, उसके अपने ही विनाश के साधन बनते जा रहे हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पेट ही मनुष्य का साध्य हो, तब तो उससे अच्छा कर्कट है, जो रहता तो समुद्र में है, किंतु वह नारियल वृक्ष पर चढ़कर फल तोड़ लाता है।

जीवों की बुद्धिमत्ता अपने विकसित रूप में तब अभिव्यक्त होती है, जब उनके सामने कोई संकट आ जाता और आत्म रक्षा की आवश्यकता आ पड़ती है। हिरन, खरगोश, चीते और कंगारू बहुत तेज दौड़ते हैं, किंतु जब इन्हें अपने सामने कोई संकट आता दिखाई देता है, तब वे जानते हैं कि उस स्थिति में सामान्य गति से बचाव नहीं किया जा सकता। अतएव वे अपनी गति को अत्यधिक तीव्र कर देते हैं। चीता उस स्थिति में १०० किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से दौड़ जाता है, कंगारू उस स्थिति में हवा में जोरदार कुलाचें लगाता है, जिससे उसकी मध्यम गति अपनी प्रखरता तक पहुँच जाती है। यदि भागने में भी जान न बचे तो वह खड़े होकर अपना शक्ति प्रदर्शन करते हैं। बिल्ली अपने बाल फुलाकर तथा गुर्राकर यह प्रदर्शित करती है उसकी शक्ति कम नहीं। कुछ जानवर दाँत दिखाकर शत्रु को डराते हैं, तो कुछ घुड़ककर, कुछ पंजों से मिट्टी खोदकर इस बात के लिए भी तैयार हो जाते हैं कि आओ जब नहीं मानते तो दो-दो हाथ कर ही लिये जायें। साही तो मुँह विपरीत दिशा में करके अपने नुकीले तेज काँटे इस तरह फर्राकर फैला देती है कि शत्रु को लौटते ही बनता है। अमेरिका में पाई जाने वाली स्कंक नामक गिलहरी अपने शरीर से एक विलक्षण दुर्गंध निकाल कर शत्रु को भगा देती है। आस्ट्रेलिया के कंगारू रैट तो सचमुच ही आँखों में धूल झोंकना, जो कि बुद्धिमत्ता का मुहावरा है, जानता है। कई बार साँप का उससे मुकाबला हो जाता है तो यह अपनी पिछली टाँगों से इतनी तेजी से धूल झाड़ता है कि कई बार तो सर्प अंधा तक हो जाता है। उसे अपनी जान बचाकर भागते ही बनता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कछुआ, कर्कट तथा अमेरिका में पाये जाने वाले पैंगोलिन व आर्मडिलो शत्रु-आक्रमण के समय अपने सुरक्षा कवच में दुबककर अपनी रक्षा करते हैं, तो बारहसिंगा युद्ध में दो-दो हाथ की नीति अपनाकर अपने पैने सींगों से प्रत्याक्रमण कर शत्रु को पराजित कर देता है।

कहते हैं कि भालू मृत व्यक्ति पर आक्रमण नहीं करते। इसकी पहचान के लिए वे नथुनों के पास मुँह ले जाकर यह देखते हैं कि अभी साँस चल रही है या नहीं। चतुर लोग अपनी साँस रोककर उसे चकमा दे जाते हैं। यह बात कहाँ तक सच है कहा नहीं जा सकता, किंतु ओपोसम सचमुच ही विलक्षण बुद्धि और धैर्य का प्राणी है। वह संकट के समय अपनी आँखें पलटकर जीभ लटका कर मृत होने का ऐसा कुशल अभिनय करता है, जैसा "सिनेमा के नायक"। इस तरह अपनी सूझबूझ से वह अपने को मृत्यु के मुख में जाने से बचा लेता है।

मोर आक्रमण की स्थिति से नृत्य मुद्रा में निबटता है। अपने पंखों को छत्र की तरह बनाकर वह आक्रमणकारी रोष प्रकट कर शत्रु को धमका देता है। कुछ छोटे-छोटे पक्षी तो और भी चतुराई दिखाते हैं। आक्रामक को देखकर ये लँगड़ाकर चलने का नाटक करते हैं। इससे इस बात का भ्रम होता है कि पहले ही इसे किसी ने घायल कर दिया है। इस स्थिति में आगंतुक सीधे आक्रमण करने की अपेक्षा पीछा करने की नीति अपनाता है। काफी दूर तक तो वह इसी तरह पीछे-पीछे भगाता है। इसी बीच वह एकदम फुर्र से उड़ जाता है और शिकारी टापता ही रह जाता है।

वर्ल्ड वाइल्ड लाइफ (विश्व वन्य जीवन) त्रैमासिक पत्रिका के एक संस्करण में मलेशिया में पाई जाने वाली मछली एक्रोबेट का वर्णन छपा है; जिसमें बताया गया है कि यह मछली भोजन की तलाश में अपने बड़े-बड़े पंखों के सहारे वृक्षों पर भी चढ़ जाती है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

यही नहीं वह थूथनों में पानी भरकर इस तरह की क्रिया करती है कि वह थूथना बंदूक का-सा काम करता है और पानी गोली का। अपनी इस प्राकृतिक गन से वह अपने भोजन के उपयुक्त जीवों का स्वयं शिकार कर लेती है। उसमें यह भी समझ होती है कि किस जीव को मारने के लिए कितनी बड़ी गोली प्रयुक्त की जाये। दागते समय वह उतने ही जल का प्रयोग करती है।

डेव हेड होव-कीट विलक्षण ध्वनियाँ निकाल लेने में बड़ा चतुर होता है। उसे यदि कहीं मधुमक्खी का छत्ता दीख जाये तो वह रानी मक्खी की-सी आवाज निकालता है। अन्य मक्खियाँ भुलावे में आ जाती हैं और यह महोदय चुपचाप छत्ते में घुसकर शहद चोरी कर लाते हैं।

हाथी की खोपड़ी ही बड़ी नहीं होती, अपितु उनमें उसी अनुपात की बुद्धिमत्ता भी है। वे सूक्ष्म संकेतों को भी थोड़े प्रशिक्षण के बाद ही समझने लगते हैं। यही कारण है कि उसे भूतकाल में युद्ध भूमि में प्रयुक्त किया गया था। आज भी सवारी के काम में, सागौन के जंगलों में स्लीपर ढोने तथा सरकसों में विविध करतब दिखाने में प्रयुक्त होते हैं। जगपति चतुर्वेदी ने अपनी पुस्तक 'जीव जंतुओं की बुद्धि' में लिखा है एक हाथी ने एक बच्चे की जेब में सूँड़ डाली। पता चला कि उसकी जेब में चीनी है। हाथी उसे ही लेना चाहता था। हाथी को मिष्ठान्न अधिक प्रिय है। संभवतः इसी से उसकी तुलना मोदक प्रिय गणेश जी से की जाती है। हाथी अपने गिरोह की प्रधान किसी वयोवृद्ध हथिनी को बनाते हैं। इससे उनके मातृत्व के प्रति सम्मान का परिचय मिलता है।

सामान्य बुद्धि से देखें तो चींटियों का ही क्या मनुष्य जीवन भी खा-पीकर वासना, तृष्णा, अहंता में बिताया जाने वाला बेकार-सा जीवन है पर उपयोगिता और उपादेयता तब स्पष्ट होती है, जब जीवन-प्रक्रिया सूक्ष्म-तत्त्वों का भी बारीकी से अध्ययन, चिंतन और मनन किया जाये। चीटियाँ यों ढेर में बिलबिलाती दीखती हैं, पर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उनका हर कार्य व्यवस्थित-नियंत्रित और अपनी प्रभुसत्ता संपन्न रानी के इंगित पर चलता है। कोई भी चींटी न तो कभी निष्क्रिय होगी, न व्यर्थ के कार्य करेगी। जो कार्य जिसे सुपुर्द है वह वही करेगी। नर का काम है परिश्रमपूर्वक खाद्यान्न व्यवस्था, सैनिक पहरेदारी करते, मजदूर बोझा ढोते—शव बाहर निकालते और शिल्पी भवन-निर्माण में जुटे रहते हैं। यही व्यवस्था मधुमक्खियों में भी समान रूप से पाई जाती है। मनुष्य की तरह पेट और प्रजनन में व्यस्त रहने पर भी उनमें अव्यवस्था और उच्छृंखलता के लिए कोई स्थान नहीं।

इंजीनियरिंग दक्षता विज्ञान युग की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। भारी-भारी बाँधों के निर्माण से लेकर नहर निकालकर जन-सुविधायें बढ़ाने के अनेक बुद्धिमत्तापूर्ण कार्य हो रहे हैं, किंतु इस तरह का बुद्धि कौशल अन्य जीवों में भी कम नहीं। ऊदबिलाव को तो जीवशास्त्रियों ने कुशल इंजीनियर की पदवी तक दे डाली है। यह सुरंगी नहरें बनाने तथा मिट्टी के पुल निर्माण करने में बड़ा पटु होता है। हैंपटन नगर में इस ऊदबिलाव के कारनामों से तो लोग बहुत ही तंग रहते हैं। नगर के बाहर एक झील है। ऊदबिलावों ने वहाँ से नगर के भीड़ वाले इलाकों तक में भीतर-भीतर सुरंगें बना रखी हैं। बहुत प्रयत्न करने के बाद भी आज तक न तो ऊदबिलाव ही पकड़े जा सके और न ही वह नहरे बंद की जा सकीं, जो इन्होंने जमीन के अंदर-अंदर बना रखी हैं।

मनुष्य शिल्प शिक्षा, अनुकरण तथा उपकरणों पर निर्भर रहता है। वह कोई भी वस्तु अथवा स्थान का निर्माण बिना किसी से सीखे, देखे अथवा औजारों के अभाव में नहीं कर सकता, जबकि पशु-पक्षी अपना निवास स्वयं अपनी अंतःप्रेरणा से बना लिया करते हैं। न तो वे उसके लिए किसी के पास शिक्षा लेने जाते हैं और न उन्हें किन्हीं उपकरणों की आवश्यकता होती है। लोमड़ी,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बिलाव तथा शृंगालों आदि के निवास कक्ष देखते ही बनते हैं। वे अपनी मादों तथा विवरों में सब प्रकार की सुविधा का समावेश कर लेते हैं। पक्षियों के घोंसले तथा कोटर तो उनकी निर्माण कला के जीते जागते नमूने ही होते हैं। बया का घोंसला, मधुमक्खी का छत्ता, मकड़ी का जाला तथा चींटी का विवर देखकर तो यही कहना पड़ता है कि परमात्मा ने इन क्षुद्र समझे जाने वाले जीवों को गजब की निर्माण बुद्धि दी है। यह सूक्ष्म शिल्प देखकर मनुष्य का मन ईर्ष्या कर उठता है।

पशु-पक्षी अपनी घ्राण तथा दृष्टि शक्ति से ऋतुओं तथा आपत्तियों का ज्ञान इतना शीघ्र, सच्चा और यथार्थ रूप से कर लेते हैं कि मनुष्य के बनाये वैज्ञानिक बैरोमीटर आदि यंत्र भी नहीं कर सकते। लोग पक्षियों एवं पशुओं की गतिविधियाँ देखकर ऋतु तथा संभाव्य के संबंध में बड़े-बड़े निर्णय कर लेते रहे हैं और उस संबंध में उन्हें कभी धोखा नहीं हुआ है। आजकल के प्रशिक्षित कुत्तों ने तो अपराधों तथा अपराधियों की खोज में चतुर से चतुर जासूसों को मात दे दी है। पशु-पक्षी किसी भी ज्योतिषी से बढ़कर आकाश की गतिविधियों का अध्ययन कर लेते हैं। उन्हें मनुष्य की तरह किसी वेधशाला की आवश्यकता नहीं होती। उनकी वेधशाला उनकी नासिका तथा आँखों में ही बनी हुई है। पशु-पक्षियों से अधिक मार्ग का ज्ञान मनुष्यों के लिए किसी प्रकार भी संभव नहीं। एक स्थान के पक्षी को किसी भी स्थान पर ले जाकर क्यों न छोड़ दिया जाये, वह बिना किसी भूल अथवा भ्रम के अपने स्थान पर लौट आयेगा। इसी विशेषता के कारण बहुत समय तक कबूतर तथा हंस आदि पक्षी पत्र-वाहक का उत्तरदायित्व निर्वाह करते रहे हैं।

यदि पशु-पक्षियों को प्रशिक्षित करने पर ध्यान दिया जाय तो वे भी मनुष्यों की तरह बुद्धिमान हो सकते हैं। मनुष्य भी आदिम काल में अन्य प्राणियों की तरह ही अनपढ़ था। सहयोग की वृत्ति

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अधिक रहने से एक ने दूसरे की सहायता की और संचित अनुभव का लाभ अपने साथियों को मिल सके, इसका प्रयत्न किया। एक का अनुदान दूसरे को मिलने की पुण्य-प्रक्रिया ने मनुष्य को पीढ़ी दर पीढ़ी अधिक बुद्धिमान और अधिक क्रियाकुशल बनाया है। यदि यही आधार अन्य प्राणियों को मिल सके, तो वे भी अब की अपेक्षा कहीं अधिक बुद्धिमान हो सकते हैं। उनमें भी वे सब तत्त्व मौजूद हैं, जो मनुष्य की तरह बुद्धिमान बन सकने का द्वार खोल सकते हैं। मनुष्य चाहे तो इस दिशा में अन्य प्राणियों की बहुत सहायता कर सकता है। अविकसित मस्तिष्क के बालकों को कुशल अध्यापक लिखा-पढ़ा कर बुद्धिमान बना देता है, तो कोई कारण नहीं कि अन्य प्राणियों को प्रशिक्षित बनाने के लिए किये गये प्रयत्नों में सफलता न मिले।

इस संदर्भ में अमेरिका में मिसिसिपी राज्य के अंतर्गत पोपरबिल नामक कस्बे के निवासी केलर ब्रिलैंड नामक एक अधेड़ सज्जन ने विशेष रूप से प्रयत्न किया। यों वे मनोविज्ञान शास्त्र के स्नातक हैं, पर उन्होंने अपना प्रमुख कार्य तरह-तरह के प्राणियों को उनके वर्तमान स्तर से आगे की शिक्षा देकर, अधिक बुद्धिमत्ता का परिचय दे सकने योग्य बनाने का अपनाया। पशु मनोविज्ञान शास्त्र में उनके प्रयत्नों ने नई कड़ियाँ सम्मिलित की हैं।

ब्रिलैंड की पत्नी मेरियन ने भी इस प्राणी प्रशिक्षण कार्य में पूरी सहायता की। उन्होंने लगभग ४० किस्म के जीवों को अपने स्कूल में भर्ती किया। जिनमें मछली, चूहे, कुत्ते, मुर्गे, तोते आदि सभी किस्म के प्राणी सम्मिलित हैं। उनके स्कूल से हजारों प्राणी आश्चर्यजनक कार्य कर सकने और आकर्षण केंद्र बन सकने योग्य विशेषताएँ प्राप्त करके विदा हो चुके हैं। प्रशिक्षित जीवों को खरीदने वाले शौकीनों की कमी नहीं रहती। वे अपने मनपसंद के प्राणी अच्छा मूल्य देकर खरीद ले जाते हैं और मनोरंजन का आनंद लेते

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हैं। शिक्षकों को भी इस धंधे से अच्छी आजीविका प्राप्त होती रहती है।

इस विद्यालय की एक कक्षा की मुर्गियाँ आज्ञा देने पर म्यूजिक-बॉक्स का स्विच दबाकर फिल्मी रिकार्ड चालू कर देती हैं और उनकी ध्वनि पर तालबद्ध नृत्य करती हैं।

मुर्गे टीम बनाकर खिलाड़ियों की तरह अपने-अपने मोर्चे पर आमने-सामने खड़े होते हैं और उस क्षेत्र में प्रचलित 'बैसवाल' खेल, सही कायदे, कानून के अनुसार खेलते हैं। उनमें से न कोई बेईमानी, चालाकी करता है और न लापरवाही। जो पार्टी हार जाती है वह बिना अपमान अनुभव किये, पर फैलाकर रेत में बैठ जाती है।

रेनडियर प्रेस की मशीन चलाते हैं। कुत्ते बास्केट बॉल खेलते हैं। बतखें स्वसंचालित ढोल बजाने की मशीन को चलाती हैं, दर्शक उस बाजे का आनंद लेते हैं।

खरगोश पियानो बजाते और दस फुट दूरी तक ठोकर मारकर गेंद फेंकते हैं। बकरियाँ कुत्ते के बच्चों को पालतीं और अपना दूध पिलाती हैं।

यह सारी शिक्षा ब्रिलैंड ने पुरस्कार का प्रलोभन दैकर पूरी कराने की तरकीब निकाली। वे इन प्राणियों को आरंभ में एक कार्य सिखाते थे। पीछे जब वे मालिक की मर्जी समझने और निवाहने का संकेत समझ लेते हैं, तो प्रत्येक सफलता पर स्वादिष्ट भोजन देने का उपहार दिया जाने लगता था। उन्हें सामान्य रीति से भोजन नहीं मिलता। उपहार पर ही उन्हें निर्वाह करना पड़ता था। लोभ से, आवश्यकता से अथवा विवशता से प्रेरित होकर वे सिखाये गये कार्मों को पूरा करते थे और दर्शकों का मनोरंजन तथा शिक्षकों का पारिश्रमिक जुटाते थे। काम करो तो खाना मिलेगा अन्यथा नहीं। यह तरीका सारी प्रशिक्षण प्रक्रिया की धुरी है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कुछ जानवर स्वभांवतः चतुर होते हैं और कुछ मंद बुद्धि। चतुर अपनी सीखी विधि को फुर्ती के साथ इशारा पाते ही पूरा कर देते हैं, पर कुछ या तो भूल जाते हैं या उपेक्षा करते हैं। उन्हें कठिन और बढ़िया काम से हटाकर सरलता से हो सकने वाले खेल सिखा दिये जाते हैं। एक रैकून को जब बचत के पैसे जमा करने वाले डिब्बे में गिनती के पैसे डालने में अभ्यस्त न बनाया जा सका तो सीटी बजाने की सरल शिक्षा देकर छुट्टी दे दी गयी, संदेशवाहक कबूतर, नियमित रूप से नियत स्थानों पर पहरेदारी करने वाले कुत्ते, बिखरे सामान को इकट्ठा करने वाली बिल्लियाँ, रेडियो बजाने के शौकीन रैकून अपने बताये हुए काम ठीक तरह करते हैं।

अधिक समझदार जानवरों में कुत्ते और बंदर आते हैं। वे किसी छोटी फैक्ट्री या दुकान के मालिक का पूरी तरह हाथ बँटाते हैं। ढेर की वस्तुओं को छाँटकर अलग-अलग कर देना, उन्हें अलग-अलग स्थानों पर यथाक्रम लगा देना, उन्हें कुछ ही दिन में आ जाता है। घड़ी देखकर नियत समय का अनुमान कर लेना और तदनुसार अपनी ड्यूटी में हेर-फेर कर देना उनमें से अधिकांश को आ जाता है। प्रेशर कुकर में भोजन पकते छोड़कर मालिक चला जाता है और जब पक जाने की सीटी बजती है तो बंदर द्वारा स्विच बंद करके उस काम को पूरा कर देना सहज ही आता है। ऐसे-ऐसे अनेक काम वे सीख जाते हैं। तोता, मैना मनुष्य की नकल करने के लिए प्रसिद्ध थे और अन्य कई पशु-पक्षियों को भी थोड़ा बहुत मानवी भाषा और उसका तात्पर्य समझने का अभ्यास होने लगा है।

ब्रिलैंड केलर का २८० एकड़ भूमि पर बना प्राणी-प्रशिक्षण गृह—"एनीमल बिहेवियर एंटरप्राइस" के नाम से प्रसिद्ध है। अब तक सरकस वालों को ही पद-श्रेय प्राप्त था कि वे खतरनाक जानवरों को कुछ खेल दिखाने के लिए प्रशिक्षित करते हैं। इस

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दिशा में ब्रिलैंड के प्रयोग प्राणियों के बौद्धिक विकास की समस्या सुलझाने की दृष्टि से हुए। उनकी शिक्षण पद्धति को 'कंडीशनिंग थियरी' कहा जाता है, जिसका आधार प्राणियों को यह समझा देना है कि 'ऐसा करने से ऐसा होगा।' कर्मफल का सिद्धांत जानकर पशु-पक्षी भी यह समझ जाते हैं कि हमारे लिए क्या करना लाभदायक है और क्या करना हानिकारक ? एक मनुष्य ही ऐसा है जो सब कुछ सीखकर भी, जीवन समस्याओं को सुलझाने में भूल पर भूल करता रहता है और कर्मफल के सिद्धांत का जानकार होते हुए भी नशे बाजी जैसे अनेक प्रसंगों में उसकी पूरी उपेक्षा करता है।

प्रशिक्षण से पशु-पक्षी बौद्धिक विकास की दिशा में अग्रसर हो सकते हैं और अपने लिए तथा दूसरों के लिए अधिक उपयोगी हो सकते हैं। ऐसा ही उपयोगी शिक्षण ६०० करोड़ आबादी वाले संसार में रहने वाले ५०० करोड़ पिछड़े लोगों को भी मिल सके, तो वे आज की स्थिति से निस्संदेह कहीं ऊँचे उठ सकते हैं।

● मानवीय उत्कर्ष में उनका योग

इसमें जरा भी संदेह नहीं है कि यदि प्रयत्न किये जायें तो मानवीय सभ्यता के विकास में पशु-पक्षियों से काफी योगदान प्राप्त किया जा सकता है। पिछले दिनों कबूतर में पायी जाने वाली विलक्षण परीक्षण बुद्धि, स्मरण शक्ति का पता चला तो मास्को के एक इंजीनियरिंग कारखाने के विशेषज्ञों ने उनकी इस अद्‌भुत क्षमता का उपयोग करने का निश्चय किया। एक बाल-बियरिंग कारखाने में बनने वाले बाल-बियरिंग में से कुछ खरोंच व चोट खाये बियरिंगों को छाँटकर अलग करने की समस्या थी। कुशल से कुशल कारीगर भी उन्हें खोजने में चूक जाते थे, किंतु कुछ कबूतरों को कुल ३ सप्ताह की ट्रेनिंग देकर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इस कार्य में लगाया गया तो उन्होंने कुशल कारीगरों को भी एक ओर धकेल दिया। अब इनमें से प्रत्येक कबूतर एक घंटे में औसत ३५०० बाल-बियरिंगों की जाँच कर लेता है। विलक्षण बात तो यह है कि अभी तक उनमें चूक का प्रतिशत शून्य से ऊपर नहीं उठ पाया। मनुष्य के मस्तिष्क में "न्यूरोन" जिनमें स्मृति के बीज विद्यमान होते हैं, कणों की संख्या अरबों-खरबों होती है। कबूतर की तुलना में इस मस्तिष्क का यदि पूर्ण विकास किया जा सके तो सारे संसार की जितनी लाइब्रेरियाँ हैं, उन्हें केवल एक ही मनुष्य अपने एक ही जीवन काल में आसानी से कंठस्थ कर सकता है।

स्मरण-शक्ति में मधुमक्खियाँ, बर्रे तथा चींटियाँ अद्वितीय सामर्थ्यवान जीव हैं। इन पर कई प्रयोग करके यह देखा गया है कि वे चाहे जितना भटका दी जायें, उन्हें अपने घर तक पहुँचने में कोई दिक्कत नहीं होती। ध्वनि और गंध पहचानने की तो इनमें बहुत ही विचित्र क्षमतायें पाई जाती हैं। जर्मनी में एक विचित्र प्रयोग किया गया। टेलीफोन के एक रिसीवर से एक फीट दूर, एक मादा झींगुर और एक मादा टिड्डे को रखा गया। वहाँ से बहुत दूर पहले एक नर झींगुर को ट्रांसमीटर के पास रखा गया। जैसे ही उसने ट्रांसमीटर के पास ध्वनि की और वह ध्वनि रिसीवर तक पहुँची, मादा झींगुर तुरंत अपने स्थान से भागकर रिसीवर में जा घुसी। यद्यपि रिसीवर में उसे अपना प्रेमी नहीं मिला, पर अपने प्रेमी की आवाज पहचानने में उसने भूल नहीं की। मादा टिड्डा अभी अपने स्थान पर ही जमा था। दुबारा ट्रांसमीटर के पास टिड्डे की ध्वनि कराई गयी, तो इस बार रिसीवर में मादा टिड्डा भागकर आई और यह सिद्ध कर दिया कि वे अपने वंश को पहचानने की सूक्ष्म बुद्धि से पूरी तरह ओत-प्रोत हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पानी के अंदर घंटों तक बने रहने का वैज्ञानिक आविष्कार मनुष्य अब इस बींसवीं शताब्दी में कर पाया है, पर यह विद्या, जलमकड़े को अनादि काल से ज्ञात है। वह पानी के अंदर की शैवाल के सहारे अपना मकान बनाती है और उसमें चिरकाल तक ऑक्सीजन प्राप्त करते रहने के लिए, सतह से बुलबुले पकड़-पकड़ कर जमा लेती है। यह बुलबुले ही उसे वायु देते रहते हैं और इस तरह मकड़ी वर्षों तक जल के भीतर बनी रहती है। मनुष्य ने आज जो जल में रहने की वैज्ञानिक पद्धति का विकास किया है, इसकी मार्गदर्शक यह जलमकड़ी ही है। फिर भी मनुष्य एक सीमित अवधि तक ही जल में रह सकता है, वहाँ नियमित बस्तियाँ बसाने और आनंदमय जीवन जीने योग्य परिस्थितियों के विकास में उसे वर्षों लग जायेंगे।

लंबे समय तक जीव-जंतुओं के इस तरह सुव्यवस्थित, विवेकपूर्ण और सुसंस्कृत जीवन क्रम का अध्ययन करने के सुप्रसिद्ध जीवशास्त्री हेनरी बेस्टन ने बहुत ही मार्मिक और भावपूर्ण समीक्षा प्रस्तुत की है। वे लिखते हैं; "प्रकृति से परे बनावटी जीवन जीने वाला इंसान, इन नन्हें प्रकृति पुत्रों को ज्ञान के चश्मे से देखता, उनकी अपूर्णता पर दया दिखाता, उनकी निम्नतर योनि के जीव होने की विवशता पर तरस खाता है, किंतु यह उसकी भूल ही नहीं-जबर्दस्त भूल है। वह यह भूल जाता है कि वे हमारी दुनिया से अधिक प्राचीन और एक परिपूर्ण जगत के प्राणी हैं। वे कहीं अधिक समर्थ, सुव्यवस्थित और इंद्रिय क्षमताओं से संपन्न हैं, जो हम या तो खो चुके या जिन्हें प्राप्त करने में मनुष्य जाति को अभी सदियों की साधना करनी पड़ेगी। वे न तो हमसे तुच्छ हैं, न दया के भिखारी। इस धरती की शोभा और शान में वे हमारे समान सहचर और सहभागी हैं। मनुष्य चाहे तो उनसे स्वयं भी बहुत कुछ सीख सकता है।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

● हम लें ही नहीं योगदान दें भी

ज्ञान अनायास ही किसी को प्राप्त नहीं हो जाता। प्रयत्न, परिश्रम, इच्छा और परिस्थिति के आधार पर उसे पाया और बढ़ाया जाता है। मनुष्य को बुद्धिमान कहा जाता है पर यह बुद्धिमत्ता सापेक्ष है, ग्रहण करने का, समझने का तंत्र। दूसरे प्राणियों को भी अवसर और साधन मिलें, तो वे भी विकासोन्मुख हो सकते हैं और क्रमशः आगे बढ़ते हुए आज की अपेक्षा कहीं आगे पहुँच सकते हैं।

कुत्ते को अपनी श्रेणी के दूसरे जानवरों की तुलना में अपेक्षाकृत अधिक बुद्धिमान माना जाता है। उसने यह स्थिति अकस्मात ही प्राप्त नहीं कर ली। मुद्दतों से वह मनुष्य का साथी बनकर रहता चला आया है। कुछ तो मनुष्य ने अपनी आदतों और आवश्यकताओं के अनुरूप उसे ढाला है। कुछ वह अपने अन्नदाता का अनुग्रह पाने के लिए स्वयं ढला है। संयोग और परस्पर आदान-प्रदान ने उसे इस स्थिति में पहुँचाया है। जंगली कुत्ते अभी भी योरोप के कई देशों में झुंड के झुंड पाये जाते हैं। नस्ल उनकी भी लगभग वैसी ही है, पर स्वभाव में जमीन-आसमान जितना अंतर। पालतू और जंगली कुत्तों की शकल भले ही मिलती-जुलती है, आदतों में जरा भी साम्य नहीं होता। पालतू बिल्ली और जंगली बिल्ली में भी यही अंतर मिलेगा। पालतू बिल्ली ने मनुष्य की आदतों को पहचानकर अपने को बहुत कुछ अनुकूलता के ढाँचे में ढाला है, जबकि जंगली बिल्ली बिल्कुल जंगली की जंगली बनी हुई है। इसे शिक्षण-प्रक्रिया का श्रेय कहना चाहिए।

भारत के अतिरिक्त अफ्रीका आदि देशों में ऐसे कई बालक भेड़ियों की माँद में पाये गये हैं, जो उन्होंने खाये नहीं, पाल लिए। इन बालकों को जब बड़ी उम्र में पकड़ा गया, तो उनमें मनुष्य जैसी कोई प्रवृत्ति न थी। वे चारों हाथ-पैरों से भेड़ियों की तरह चलते थे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कच्चे मांस के अतिरिक्त और कुछ खाते न थे, आवाज भी उनकी अपने पालन करने वालों ही जैसी थी। अन्य आदतों में भी उन्हीं के समान। ज्ञान ग्रहण का माद्दा बेशक उनमें रहा होगा पर परिस्थितियों की अनुकूलता के अभाव में उसका विकास संभव ही न हो सका।

दूसरी ओर अल्प विकसित पशु-पक्षी समुचित शिक्षण प्राप्त करके ऐसे करतब दिखाते हैं, जिन्हें देखकर आश्चर्यचकित रह जाना पड़ता है। मदारी लोग रीछ, बंदरों को सिखाते हैं और उनके तमाशे गली, मुहल्लों में दिखाकर लोगों का मनोरंजन करते हुए अपनी जीविका कमाते हैं, सरकसों में सिखाये-सधाये शेर, हाथी, घोड़े, ऊँट, बकरे, रीछ, बंदर आदि ऐसे कौतुक करते हैं जैसे मनुष्य भी कठिनाई से ही कर सके। इससे यही सिद्ध होता है कि शिक्षा और शिक्षक में—शिक्षा का महत्त्व असाधारण है। उसके द्वारा अल्प बुद्धि या बुद्धिहीन समझे जाने वाले पशु भी बहुत कुछ कर सकते हैं, जबकि बुद्धिमान समझा जाने वाला मनुष्य शिक्षण का उचित अवसर न मिलने पर, मूर्ख और निकृष्ट कोटि की गंदी आदतों वाला बना रहता है।

पशुओं को प्रशिक्षित करने, उन्हें अधिक उपयोगी और समुन्नत बनाने का प्रयत्न जहाँ भी किया गया है, वहाँ आशाजनक सफलता मिली है। मस्तिष्कीय विकास के अनुसार शिक्षा ग्रहण करने की मात्रा तथा अवधि में अंतर हो सकता है, पर इतना निश्चित है कि शिक्षा निरर्थक नहीं जाती। प्रयत्न किया जाये तो पालतू पशुओं को अब की अपेक्षा अधिक बुद्धिमान तथा उपयोगी बनाया जा सकता है और जंगली आदतों वाले जानवरों को सभ्यता, अनुशासन तथा जानकारी की दिशा में अधिक शिक्षित किया जा सकता है। लगभग हर प्राणी में ज्ञान प्राप्त कर सकने की मूल प्रवृत्तियाँ मौजूद हैं। मनुष्य का कर्त्तव्य है कि उन्हें भी अपना

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

छोटा भाई माने और बौद्धिक प्रगति की दिशा में आगे बढ़ने में सहयोग प्रदान करें।

प्रसन्नता की बात है कि इस दिशा में अब अधिक ध्यान दिया जा रहा है और विभिन्न पशु-पक्षियों को इस योग्य बनाने का प्रयत्न किया जा रहा है कि वे अधिक बुद्धिमान बन सकें और मनुष्य के लिए अधिक सहायक एवं उपयोगी सिद्ध हो सकें। जर्मनी के मुन्स्टर विश्वविद्यालय के प्रोफेसर रेन्स तथा उनकी सहयोगी कुमारी उकर इस विषय में बहुत दिनों के अनुसंधान कर रहे हैं और पशुओं को प्रशिक्षित करने की विधियों का आविष्कार करने में निरत हैं।

मलाया में पाई जाने वाली एक विशेष प्रकार की बिल्ली 'सियेट' तथा 'मंगूस' नाम के एक अन्य पशु को उन लोगों ने प्रशिक्षित करने में बड़ी सफलता पाई। वे रंगों की भिन्नता तथा दूसरी कई बातों में प्रवीण हो गये।

कोहलर ने पक्षियों को गिनती सिखाने तथा वस्तुओं की भिन्नता स्मरण रखने में शिक्षित कर लिया। वे शब्दों का भावार्थ भी समझने लगे।

प्रोफेसर सन्स की छात्रा 'सियेट' निरंतर रुचिपूर्वक पढ़ती रही और करीब ३० प्रकार के पाठ पढ़कर उत्तीर्ण होती रही। उससे ३४ हजार बार प्रयोग कराये गये, जिसमें वह ७० से लेकर ८४ प्रतिशत तक सफल होती रही। प्रोफेसर महोदय ने अपनी पुस्तक में उपरोक्त बिल्ली को पढ़ाने और उसकी भूल सुधारने की विधियों पर विस्तृत प्रकाश डाला है।

हाथी को दिखाई देने वाली वस्तु और सुनाई देने वाली ध्वनियों का सही तरीके से विश्लेषण करना नहीं आता, पर वह इशारे समझने में बहुत प्रवीण है। संकेतों के आधार पर उसे भविष्य में बहुत आगे तक प्रशिक्षित किया जा सकेगा और उसे मनुष्य का उपयोगी साथी, सहायक बनाया जा सकेगा। बंदर के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बारे में भी ऐसी ही आशा की जा सकती है। उसकी चंचल प्रकृति और अस्थिर मति को सुधारा जा सकता है और मानव परिवार में कुत्ते की तरह, उपयोगी जीव की तरह सम्मिलित किया जा सकता है।

कुत्ते का भौंकना सुनकर उसका मालिक यह आसानी से बता सकता है कि उसके चिल्लाने का मतलब क्या है ? भूख, प्यास, थकावट, शीत, गुस्सा, चेतावनी आदि कारणों को लेकर भौंकने के स्वर तथा स्तर में जो अंतर रहता है, उसे पहचान लेना कुछ कठिन नहीं है। कुत्ते की भाषा मनुष्य समझता हो, सो बात ही नहीं है। कुत्ते भी मनुष्य की भाषा समझ सकते हैं। अभ्यास कराने पर उन्हें १०० शब्दों तक का ज्ञान कराया जा सकता है और उन आदर्शों के आधार पर उन्हें काम करने के लिए अभ्यस्त किया जा सकता है। ६० शब्द समझने तक में तो अभी भी कई कुत्ते सफलता प्राप्त कर चुके हैं। शब्द के साथ-साथ उसके कहने का विशेष ढंग और भाव मुद्रा का स्वरूप मालिक को भी सीखना पड़ता है। कानों से बहरे लोग सामने वाले के होठों का संचालन तथा मुखाकृति का उतार-चढ़ाव देखकर लगभग आधी बात पकड़ लेते हैं। उसी प्रकार कुत्ते को आदेश देते समय, मात्र शब्दों का उच्चारण ही काफी नहीं, वरन् मालिक को अपना लहजा, अदा और तरीका भी शब्द के साथ मिश्रित करके आदेश की एक नई शैली का आविष्कार करना पड़ता है। कुत्ते को ऐसी ही भाव और शब्द मिश्रित भाषा से ही आज्ञानुवर्ती बनाया जा सकता है।

कुत्ते रास्ता चलते बीच-बीच में पेड़-पौधे, खंभे आदि पर बार-बार पेशाब करते चलते देखे गये हैं। इस आधार पर वे अन्य साथियों को उस मार्ग से गुजरने की सूचना देते हैं। यह मूत्र गंध उस क्षेत्र पर उस कुत्ते के आधिपत्य की सूचना देती है और लौटते समय उसी रास्ते का संकेत देती है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लंदन चिड़ियाघर के अधिकारी डॉ० डंसमंड मारिस का कथन है कि कुत्ते का दुम हिलाना, उसके मनोभावों के प्रकटीकरण से संबंधित है। विभिन्न मनःस्थितियों में उसकी पूँछ अलग-अलग ढग से हिलती है। उसे समझा जा सके तो स्काउटों की 'झंडी संकेत पद्धति' के अनुसार कुत्ते के मनोभावों को समझा जा सकता है।

कुत्ते में एक अद्‌भुत क्षमता निकटवर्ती भविष्य-ज्ञान की है। वे ऋतु-परिवर्तन की पूर्व सूचना दे सकते हैं और कई बार तो दैवी विपत्तियों की पूर्व सूचना भी देते हैं। कुछ समय पूर्व लिन माडल के डेवन प्रदेश में विनाशकारी बाढ़ आई थी, जिसमें भारी धन-जन की हानि हुई। दुर्घटना से ४ घंटे पूर्व सारे नगर के कुत्तों ने इकट्ठे होकर इस बुरी तरह रोना शुरू किया कि लोग दंग रह गये और तंग आ गये। जब बाढ़ आ धमकी तब समझा गया कि कुत्तों का इस प्रकार सामूहिक रूप से रोना, विपत्ति की पूर्व सूचना के लिए था।

बिल्लियाँ भी कुत्तों से पीछे नहीं। मस्तिष्कीय सक्षमता की दृष्टि से वे कई बातों में और भी आगे हैं। उन्हें सिखा-पढ़ाकर उपयोगी बनाया जाना अन्य छोटे पशुओं की अपेक्षा अधिक सरल है।

पशुओं में ज्ञान के मूलतत्त्व ही विद्यमान नहीं हैं, वरन् उनमें भावों की अभिव्यक्ति का भी माद्दा है। टूटी-फूटी उनकी भाषा भी है, जिसके आधार पर वे अपनी जाति वालों के साथ विचार-विनिमय कर सकते हैं। इस भाषा को और अधिक विकसित किया जा सकता है। इस विकास के आधार पर मनुष्य के साथ अन्य प्राणियों के विचार-विनिमय का द्वार भी खुल सकता है।

वैटजेल नामक एक प्राणी प्रेमी ने सन् १८०१ में कुत्ते, बिल्ली तथा कई पक्षियों की भाषा का एक शब्द कोष बनाया था। फ्रांस निवासी द्‌यूपो नेमर्स ने कौओं की आवाज पर एक पुस्तक प्रकाशित

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

की थी। योरोप के कई विश्वविद्यालयों ने इस संबंध में अपना अनुसंधान कार्य किया है।

'चिपेंजी इंटेलीजेन्स एंड इट्ज वोकल एक्सप्रेशन' पुस्तक के लेखक द्वय श्री ईयर्कस और श्रीमती लर्नेड ने चिपेंजी बंदरों की लगभग ३० ध्वनियों का संग्रह और विश्लेषण करके एक प्रकार से उनका भाषा विज्ञान ही रच दिया है।

हरमन फ्रेवुर्ग ने अपनी पुस्तक 'आउट ऑफ अफ्रीका' में ऐसे अनेक संस्मरण लिखे हैं, जिसमें गोरिल्ला और मनुष्य के बीच बातचीत, भावों का आदान-प्रदान और सहयोग-संघर्ष का विस्तृत परिचय मिलता है। साधारणतया जानवर अपनी ही जाति के लोगों से विचार-विनिमय कर पाते हैं, पर यदि सिखाया जाय तो न केवल मनुष्य के साथ हिल-मिल सकते हैं वरन् एक जाति का दूसरी जाति वाले अन्य जीवों के साथ भी व्यवहार-संपर्क बनाया और बढ़ाया जा सकता है।

जानवरों का भाषा कोष तैयार करने में कई संस्थाओं ने बहुत काम किया है और कितने ही अन्वेषक निरत हैं। केंब्रिज की 'दी एशियाटिक प्राइमेट एक्सपेडीशन' संस्था ने इस संबंध में बहुत खोज की है। इस संस्था के शोधकर्त्ता विश्व भर में घूमे हैं और विभिन्न पशुओं की आवाजें रिकार्ड की हैं। मोटे तौर पर यह आवाज कम होती हैं, पर बारीकी से उनके भेद-प्रभेद करने पर वे इतनी अधिक हो जाती हैं, कि उनके सहारे उन जीवों के दैनिक जीवन की पारस्परिक सहयोग के लिए आवश्यक बहुत-सी जरूरतें पूरी हो सकें। पैरिस के प्रो० चेरोंड और अमेरिका के डॉ० गार्नर ने अपनी जिंदगी का अधिकांश भाग इसी शोध कार्य में लगाया है।

बंदरों की भाव-भंगिमा उनकी मनःस्थिति को अच्छी तरह प्रकट करती है। जरा गंभीरता से उसके चेहरे पर दृष्टि जमांई जाये तो सहज ही पता चल जायगा कि वह इस समय किस 'मूड'

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

में है। उसके डरने, प्रसन्न होने, क्रोध करने, थक जाने, दुःख व्यक्त करने, साथियों को बुलाने आदि के स्वर ही नहीं भाव भी होते हैं, जिन्हें आसानी से पहचाना जा सकता है।

चिपेंजी बंदर तो हँस भी सकता है। बच्चों के वियोग में चिपेंजी मादा रोती देखी गई है। नीचे वाला होठ आगे निकला हुआ देखकर आँखों को ढके बैठी हुई मादा चिपेंजी को शोकग्रस्त समझा जा सकता है। इस स्थिति में उससे सहानुभूति प्रकट करने दूसरे साथी भी इकट्ठे हो जाते हैं और संवेदना प्रकट करते हैं।

गोरिल्ला अपने क्रोध की अच्छी अभिव्यक्ति कर सकता है। गिव्वन बंदर सवेरे ही उठकर शोर करते हैं, जिसका मतलब है कि यह क्षेत्र हमारा है। कोई दूसरे इस क्षेत्र में प्रवेश करने का प्रयत्न न करें।

अन्य प्राणियों को उपेक्षा के गर्त में पड़ा रहने देने या उनके शोषण करते रहने में मनुष्यता का गौरव बढ़ता नहीं। अपनी प्रगति से ही संतुष्ट न रहकर हमारा यह भी प्रयत्न होना चाहिए कि अन्य प्राणियों के बौद्धिक उत्कर्ष में समुचित ध्यान दें और सहयोग प्रदान करें।

❐ ❐

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बुद्धिमान होने के कारण मनुष्य सबसे बड़ा नहीं है !

मनुष्य को परमात्मा की सर्वश्रेष्ठ रचना कहा गया है। परमात्मा ने उसमें वे सभी विशेषताएँ और क्षमताएँ समाहित कर दी हैं, जिनके आधार पर यह कहा जा सके कि ईश्वर ने अपने इस प्रिय पुत्र पर अपना विशेष प्यार-दुलार लुटाया है। स्थूल दृष्टि से देखने पर यही दिखाई देता है कि मनुष्य को सर्वसमर्थ शरीर तंत्र के अलावा बौद्धिक सामर्थ्य का विशेष अनुदान मिला है। लेकिन मनुष्य को प्राप्त हुई शारीरिक सामर्थ्य से अन्य प्राणियों की तुलना की जाये तो कितने ही प्राणी उससे अधिक बलवान और शक्तिशाली सिद्ध होंगे। बौद्धिक सामर्थ्य और सूझबूझ की तुलना में चींटी, कौआ, खरगोश, कुत्ता, बिल्ली आदि कितने ही प्राणी मनुष्य से इक्कीस सिद्ध होंगे।

कहा जाय कि इन सब प्राणियों में सीखने की क्षमता नहीं होती, तो यह सोचना भी गलत है, क्योंकि शरीर-रचना में उससे समानता रखने वाले प्राणी उससे अधिक अच्छी तरह सीख समझ सकते हैं। मनुष्य की शरीर संरचना और बौद्धिक सामर्थ्य से निकटतम अनुरूपता रखने वाला प्राणी खोजा जाय तो वह लंगूर ही होगा। लंगूरों की प्रायः तीन श्रेणियाँ बतायी जाती हैं एक—ओरगुंटान, दूसरी-गोरिल्ला और तीसरी श्रेणी में चिपांजी आते हैं।

इनमें से भी ओरगुंटान के लंगूर कम होते जा रहे हैं। अब ये केवल इंडोनेशिया के जंगलों में ही मिलते हैं और बंदरों की तरह वृक्षों पर एक टहनी से दूसरी टहनी पर कूदते हैं। इनकी भुजाएँ अन्य लंगूरों की तुलना में अधिक सशक्त होती हैं तथा इनके पाँव

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अन्य लंगूरों की अपेक्षा छोटे और कमजोर। ओरगुंटान को पकड़कर यदि किसी पिंजड़े में बंद कर दिया जाये तो चुपचाप उदास मुद्रा में बैठ जाते हैं, जैसे ये अपनी बंधक स्थिति से क्षुब्ध हों और उसकी पीड़ा-छटपटाहट अनुभव करते हों।

ओरगुंटान से कुछ अधिक विकसित लंगूर है गोरिल्ला। ये प्रचुर संख्या में पाये जाते हैं। सीधे खड़े होने पर ५ फीट के दिखाई देते हैं। अफ्रीका में पाये जाने वाले गोरिल्लों में से कुछ का वजन तो दो क्विंटल तक है, लेकिन ये कभी-कभी ही सीधे खड़े होते हैं।

मनुष्य के सर्वाधिक समीप लंगूर है चिपांजी। चिपांजी और मनुष्य के रक्त में इतनी समानता पाई जाती है कि यह आदमी का रक्त है अथवा चिपांजी का, यह अंतर कर पाना कठिन होता है। यही नहीं चिपांजियों को भी मनुष्य में होने वाले रोगों यथा-यस्पिंड, पोलियो जैसी बीमारियों का शिकार होता देखा गया है।

चिपांजी को एक भाषा ही नहीं मिली है अन्यथा कई मामलों में यह मनुष्य की न केवल बराबरी करता है, वरन् उसे पीछे भी छोड़ देता है। चिपांजी जंगल में अपने आस-पास के वायुमंडल के संबंध में बहुत अधिक सतर्क रहते हैं। जंगल में जब ये एक-दूसरे को पुकारने के लिए किल्कारी करते हैं, तो मनुष्य के लिए उसकी आवाज कान फाड़ देने वाली सिद्ध होती है। जब इन्हें पकड़कर कहीं रख लिया जाता है और ये नये व्यक्तियों को देखते हैं तो इतनी जोर से चीखते हैं कि इनके रखवालों को कनटोप पहन लेना पड़ता है।

चिपांजी मनुष्य के हाव-भाव और सिखाई जाने वाली बातों का बहुत शीघ्र अनुकरण करने लगते हैं। उनकी प्रकृति का अध्ययन करने वालों में गार्डनर तथा उनकी पत्नी बीट्राइस प्रमुख रही हैं। ३० वर्ष पूर्व गार्डनर दंपत्ति ने एक आठ मास के चिपांजी को सिखाना आरंभ किया। चिपांजी को बाकायदा नाम भी दिया गया—वाशोई। गार्डनर दंपत्ति ने वाशोई को अमेरिकी सांकेतिक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भाषा सिखाई, जो प्रायः गूँगों, बहरों को सिखाई जाती है। जब वह चिपांजी ५ वर्ष का हो गया तो उसे इस भाषा के १३२ संकेतों का अच्छी तरह अभ्यास हो गया।

बाशोई के अलावा गार्डनर दंपत्ति ने चार और चिपांजी पाले, जिनमें से एक का नाम है भोजा। भोजा अब चित्र भी बनाने लगा है। उसने अपनी प्रतिभा का प्रथम परिचय श्यामपट पर एक चाक से दिया। भोजा प्रायः अपने मानव संबंधियों को चित्र बनाते हुए देखता रहता था। एक दिन भोजा को न जाने क्या सूझी, कि उसने चाक उठाया और लगा ब्लैकबोर्ड पर एक डिजायन बनाने। जब यह डिजायन बना चुका तो उसने संकेत दिया कि मेरा काम खत्म हो गया है।

यह पूछा जाने पर, कि यह क्या है ? तो भोजा ने सांकेतिक भाषा में उत्तर दिया—यह पक्षी है।

सिखाने पर कोई भी व्यक्ति कुछ भी समझ-सीख सकता है, परंतु उसमें जटिलता के अनुसार सीखने-समझने की सामर्थ्य में भी अंतर आ जाता है। उदाहरण के लिए कंप्यूटर की कार्य प्रणाली इतनी जटिल है कि उसे चलाना हर किसी के बस की बात नहीं होती, परंतु एक तीन वर्षीय चिपांजी 'लाना' कंप्यूटर चलाने में भी समर्थ है। उसकी विशेषता यह है कि वह अनुसंधानकर्त्ताओं के प्रश्नों का उत्तर मशीन से मनुष्य चालकों की अपेक्षा अधिक शीघ्रता और कुशलता से देता है।

इन घटनाओं को अपवाद भी कहा जाय, तो रोजमर्रा के जीवन में चौराहों पर मजमा लगाकर मदारी के इशारों पर खेल दिखा रहे बंदरों को देखा जा सकता है। अपने मास्टर का इशारा पाकर वे बंदर कैसे-कैसे आश्चर्यजनक करतब कर लेते हैं—देखते ही बनता है। भालू भी बंदरों की ही तरह कोई आदत या अभ्यास को तुरंत ग्रहण कर लेता है। सरकस में तो घोड़े, शेर, बकरी, हाथी तक मनुष्यों से न हो सकने वाले काम सीख लेते हैं और अपने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मास्टर के निर्देशन में खेल दिखाकर लोगों को चमत्कृत कर देते हैं।

कहा जा सकता है कि किसी कार्य का अभ्यास करना या बार-बार दोहराकर उसे सीख लेना बुद्धिमत्ता नहीं है। बुद्धिमानी का अर्थ मौलिक सूझबूझ है, जो किसी भी अवसर या घटना विशेष पर तुरंत निर्णय लेकर अमल में ले आये। इस मौलिक सूझबूझ को प्रत्युत्पन्नमति भी कहा जा सकता है। अन्य प्राणियों में प्रत्युत्पन्नमति नहीं होती। जैसे किसी तोते को रटा दिया जाय कि "डर मत-डर मत।" तोता हमेशा यही दोहराता रहे—"डर मत-डर मत" परंतु बिल्ली दिखाई देते ही तोता टें-टें करने लगता है। उस समय न इससे उड़ते बनता है न 'डर मत-डर मत' का पाठ करते।

आकस्मिक घटनाओं में फँसकर तुरंत निर्णय लेने की क्षमता तो मनुष्य में भी बहुत कम होती है। शौर्य, पराक्रम और साहस पर घंटों भाषण देने वाले लोग, स्वयं संकट के समय घबड़ाकर भागते या हड़बड़ाहट में उस संकट को और गंभीर बनाते देखे गये हैं। वस्तुतः मनुष्य में जो कुछ बुद्धिमत्ता दिखाई देती है, इसका अस्सी प्रतिशत भाग सीखा और दोहराया गया भर होता है। बार-बार अभ्यास से यह बात उसके दिमाग में डाल दी गयी भर होती है। उदाहरण के लिए चार-पाँच वर्ष का होते ही बच्चे को अक्षर ज्ञान कराया जाता है; पाठों को दोहराना और अक्षरों को पहचानना सिखाया जाता है। जो भाषा वह बचपन में सीख लेता है, वह उसे आजीवन याद रहती है। इसी प्रकार आदतें, स्वभाव और प्रकृति भी बहुत कुछ दूसरों के देखा-देखी सीखी जाती हैं।

जिसे मौलिक बुद्धि कहा जा सके, वह क्षमता बहुत कम लोगों में होती है, क्योंकि मनुष्य जो कुछ भी सीखता, समझता और जिस आधार पर सभ्य, समझदार दिखाई देता है; वह समाज में रहने के कारण ही है। जिस वातावरण में वह रहता है, वह वातावरण उसे अनुरूप बनने के लिए प्रेरित करता है। बचपन से ही

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उसे सिखाया जाता है, इसलिए वह आगे चलकर बिना सिखाये भी बहुत कुछ सीख सकता है।

यही बात अन्य जीव-जंतुओं के बारे में भी देखी जा सकती है। जीवशास्त्र के पन्ने पलटते चलिये, जीव-जंतुओं का अध्ययन करते जाइये तो एक से एक बढ़कर ऐसे उदाहरण मिलते जायेंगे जो मनुष्य की बौद्धिक क्षमता को लजाते हैं।

● न विद्यालय न शास्त्र

सृष्टि के अन्य जीवों में मनुष्य की सैकड़ों विशेषताएँ हैं। वह सफाई पसंद करता है, करना भी चाहिए, क्योंकि जो साफ-सुथरा रहता है, गंदगी से बचता है, वही केवल स्वस्थ व नीरोग रह सकता है। स्वास्थ्य विज्ञान की लंबी जानकारियों के आधार पर यह नियम बनाया गया है, पर मधुमक्खी के पास इस तरह का ज्ञान देने वाला कोई विद्यालय नहीं, स्वास्थ्य के नियमों का उसे पता नहीं, रोग कौन-कौन से होते हैं, इसका उसे कोई ज्ञान नहीं, फिर भी मधुमक्खी के उपनिवेश में सफाई का उतना ही ध्यान रखा जाता है, जितना रानी की सुरक्षा का। कोई मधुमक्खी मर जाये तो उसके सड़ने-गलने और बदबू फैलाने से पूर्व ही मधुमक्खियाँ उसके शव को छत्ते से १५-२० गज की दूरी पर बाहर फेंक आती हैं। उनमें एक क्रम रहता है, प्रतिदिन नियत समय पर मक्खियाँ उड़ान करती हैं और छत्ते से बाहर टट्टी कर आती हैं। इसका अर्थ है कि यदि मकान की सफाई न रखी गयी, उसमें गंदगी फैलने दी गई तो उससे सारी कॉलौनी में महामारी फैल सकती है। यह ज्ञान शरीर का नहीं, उस आत्मा का है, जो मनुष्य और मधुमक्खी दोनों में एक समान है।

श्री रक्षपाल लिखित पुस्तक "कीटों में सामाजिक जीवन" में बताया गया है कि यदि कोई चूहा किसी दीमक के किले में घुस जाता है, तो रक्षक दीमक उस पर अपने डंकों का प्रहार करके

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उसे मार डालते हैं। संगठित आक्रमण और प्रकृतिदत्त साधनों के उपयोग से वे शत्रु पर विजय पा जाते हैं, पर बेचारे कण-कण के कीट उतने वजन के चूहे के शव को बाहर किस तरह करें ? जब तक वह सड़-गलकर समाप्त हो तब तक तो उनके कमरे में इतनी बदबू फैल सकती है, जो उन सबका ही नाश कर दे। इसलिए वे दूसरी युक्ति से काम लेते और मनुष्य से अधिक चतुरता का परिचय देते हैं। लोग तो जंगल-टट्टी जाते हैं और टट्टी खुली छोड़ आते हैं, जिससे वातावरण दूषित होता है। उसे गड्ढा खोद कर टट्टी करने और उसमें मिट्टी पटक देना भी लज्जास्पद लगता है। इस दृष्टि से अधिक बुद्धिमान दीमक हैं, क्योंकि वे तुरंत एक प्रकार का द्रव प्रोपोसिल बनाते हैं और उसकी मोटी परत वाली वार्निश उसके शरीर में कर देते हैं, इससे उसकी गंदगी का एक झोंका भी बाहर नहीं जा पाता। एक बार कपूर की डेली इनके महल में फेंककर देखा गया। जितनी देर में कपूर की गंध उपनिवेश में फैले दीमकों में उसे इस द्रव से कीलित कर दिया।

मनुष्य बड़ा भारी इंजीनियर है, भाखड़ा से लेकर चंद्र रॉकेट तक की डिजाइनिंग में उसने जो बुद्धि खर्च की है, उसे देखकर लगता है, यह दूसरा परमात्मा है। पर यदि यही योग्यता किसी तुच्छ प्राणी में हो तो उसे भी परमात्मा का अंश ही कहा जायगा। जीव-वैज्ञानिक डॉ० बेल्ट ने हिमालय की ४००० फुट ऊँची एक चोटी पर चढ़कर एक ऐसे चींटी परिवार का अध्ययन किया, जो गृह-निर्माण कर रहा था। जहाँ वे घर बना रही थीं, वह एक नदी का कगार था। बिल से निकाली हुई मिट्टी नीचे गिर जाती थी और इस कारण मकान का सहन उम्दा नहीं बन पा रहा था। अंत में इस स्थिति से निपटने का काम कुछ विशेषज्ञ चींटियों को सौंपा गया। उन्होंने उस स्थान का विधिवत निरीक्षण कर एक योजना बनाई। उस योजना के अनुसार मजदूर चींटियों को भीतर के काम से हटाकर पहले छोटी-छोटी कंकड़ियाँ बीनकर लाने का आदेश

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दिया गया। वह सब कंकड़ बीनकर लाईं और इस तरह पहले एक मजबूत पथ बना दिया गया, तब आगे का काम प्रारंभ हुआ। अब मिट्टी को लुढ़कने की कोई गुंजाइश नहीं रही।

● जीव-जंतुओं की विलक्षणता मनुष्योचित

बुद्धि और ज्ञान-शक्ति की दृष्टि से मनुष्य की अन्य जीव-जंतुओं से कोई तुलना नहीं की जा सकती, फिर भी अनेक जीव-जंतुओं में ऐसी विशेषताएँ मिलती हैं, जिनकी समता कोई सामान्य दर्जे का मनुष्य नहीं कर सकता। उदाहरण के लिए कुत्ते की सूँघने की, गिद्ध की देखने की, शेर की उछलने की, मधु-मक्खियों की सामूहिकता की शक्तियों का उदाहरण मनुष्य कभी उपस्थित नहीं कर सका और भी अनेक जीव आहार प्राप्त करते या आत्म-रक्षा के लिए ऐसी-ऐसी विधियों से काम लेते हैं, जो आश्चर्यजनक जान पड़ती हैं। साथ ही अनेक पशु समय-समय पर ऐसी सूझ-बूझ का परिचय देते हैं, जिसे देखकर उनको कभी 'जड़ पदार्थ' की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता। अनेक अन्वेषण करने वालों का तो यह कथन है कि मनुष्य ने कितनी ही बातों का ज्ञान जीव-जंतुओं से ही प्राप्त किया है।

● बुनने वाली चिड़ियाँ

बुनने के कार्य में कई तरह की चिड़ियों ने बड़ी उन्नति की है। हमारे देश में इसके लिए 'बया' पक्षी का घोंसला प्रसिद्ध है। वह घास के तिनकों को ऐसी कारीगरी से बुनती है कि उसका घोंसला एक दर्शनीय वस्तु बन जाता है। उसके भीतर न तो पानी जाता है और न कोई शत्रु साँप, बंदर, कौआ आदि भीतर घुसकर अंडों या बच्चों को कुछ हानि पहुँचा सकता है।

इससे गिलती-जुलती एक चिड़िया अमेरिका में भी होती है, जो अपना घोंसला बड़ा सुंदर बनाती है। कितने ही लोग इनकी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कारीगरी देखने के लिए रंग-बिरंगा ऊन उनके निवास स्थान के पास रख देते हैं। चिड़ियाँ इसी का प्रयोग अपने घोंसले बनाने में करती हैं। जब ये रंग-बिरंगे घोंसले पेड़ों में लटकते हुए दिखाई पड़ते हैं, तो उनकी शोभा विचित्र दिखाई देती है। उनमें अनायास ही ऐसे अद्‌भुत और आकर्षक डिजायन बन जाते हैं कि फिर स्त्रियाँ और पुरुष उनकी नकल करने लगते हैं। भारतवर्ष में एक 'दर्जी चिड़िया' भी पाई जाती है। यह अपने घोंसले को केवल बुनती ही नहीं वरन् लटकती हुई पत्तियों को घास का प्रयोग करके इस प्रकार सी देती है, जैसे दो फीतों के बीच कोई झूला (हिंडोला) लटक रहा हो। इसी लटकते हुए 'कटोरे' के बीच उसका घोंसला टिका रहता है।

● बिजली

कई प्रकार की मछलियों ने अपने शरीर में बिजली के बैट्रीनुमा अंग विकसित करके उनके द्वारा आत्म-रक्षा और आहार संग्रह की विधि निकाली है। अमेरिका की अमेजन नदी में पाई जाने वाली 'एल' मछली की पूँछ बहुत बड़ी होती है। उसमें बिजली की बैट्री के तीन समूह होते हैं। इसके द्वारा यह मछली कई सौ 'वोल्ट' की ताकत का धक्का मार सकती है, जिससे कभी-कभी घोड़े और मनुष्य भी गिरकर पानी में डूब जाते हैं। इस बिजली का प्रयोग वह संवाद प्रेषक तार के रूप में भी करती है, क्योंकि जैसे ही एक मछली किसी शिकार पर आघात करती है, वैसे ही उसके सभी दूरवर्ती साथियों को उसका पता लग जाता है और दौड़कर उसी स्थान पर आ जाती हैं।

अरब समुद्र और नील नदी में 'कैट फिश' (बिल्ली मछली) नाम की एक भारी और दो फीट के लगभग लम्बी मछली होती है, जिसका रंग पीला होता है और उस पर भूरे धब्बे पड़े होते हैं। इसका सारा शरीर एक लिफाफे की तरह बिजली के अंग से ढका

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

रहता है। इसमें भी काफी शक्ति होती है और प्रायः आपस में लड़कर एक-दूसरे पर विद्युत-शक्ति द्वारा आघात पहुँचाया करती हैं।

एक और मछली 'टारपीडो' नाम की होती है, जिसमें हल्की विद्युत-शक्ति होती है और जो काफी संख्या में सारे गरम समुद्रों में पाई जाती है। यह कोमल मछलियों को बिजली का धक्का देकर पकड़ लेती है। पुराने जमाने में हकीम लोग इससे गठिया रोग का इलाज करने का काम लेते थे। इसके लिए रोगी को मछली के ऊपर तब तक खड़ा रहना पड़ता था, जब तक के लिए चिकित्सक आज्ञा देता था या रोगी बिजली के झटके को सहन कर सकता था।

मानव-इतिहास में सुरंगों का भी बड़ा महत्त्व है। शत्रुओं से बचने अथवा बहुमूल्य वस्तुओं के भंडार आदि को गुप्त रखने के लिए पुराने जमाने में सुरंगें खोदी जाती थीं। भारत के कितने ही प्राचीन किलों में सुरंगें देखने में आती हैं, जिनके भीतर अब भय के कारण कोई नहीं घुसता। इससे उनके विषय में तरह-तरह के किस्से सुनने में आते रहते हैं। पर इनमें से अधिकांश किसी घेरे या आक्रमण के समय बाहर निकलने के गुप्त मार्ग के रूप में ही प्रयुक्त होती थीं।

इन सुरंगों को बनाने का विचार संभवतः मनुष्यों ने जीव-जंतुओं से ही ग्रहण किया है, क्योंकि वे आत्म-रक्षा अथवा आहार की खोज में सुरंगें बनाया करते हैं।

सुरंग बनाने वाले कीड़ों में केंचुआ बहुत प्रसिद्ध है। वह अपने एक सिरे से भूमि में प्रवेश करता है और जो कुछ मिलता है, उसे निगल कर दूसरे सिरे से मिट्टी के रूप में ही बाहर फेंकता जाता है। इस प्रकार से वे अपना निर्वाह करते हैं और साथ ही नीचे की मिट्टी को ऊपर लाकर छोटे पेड़-पौधों की वृद्धि में भी सहायक होते हैं। कहते हैं कि इस प्रकार केंचुये किसी बगीचे की एक एकड़

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भूमि की ४०० मन मिट्टी को एक वर्ष के भीतर नीचे से ऊपर ले आते हैं और भी कितने ही छोटे कीड़े इसी प्रकार धरती में छेद करके नीचे की मिट्टी को ऊपर लाया करते हैं।

इन कीड़ों के अतिरिक्त नेवला, चूहे, छछूँदर, झींगुर और साही, सियार आदि जंगली पशु भी सुरंग खोदते रहते हैं। इन सब प्राणियों का शरीर लंबाई में अधिक होता है, जिससे उन्हें खोदने के काम में सहायता मिलती है। अफ्रीका का चींटी खाने वाला रीछ तो अपने पैरों से सुरंग बनाने में इतनी तेजी से मिट्टी काटता है, जितना कि दो मजदूर फावड़ा या गैती लेकर भी नहीं काट सकते।

जीव-जंतु एक प्रकार के जड़-जीव हैं, इस मान्यता का खंडन उन अनेक पशुओं की बुद्धिमानी से होता है, जो वे समय-समय पर प्रकट करते हैं। कुत्तों की स्वामिभक्ति और चोरों का पीछा करके गाढ़े हुए धन का पता लगा आना और फिर स्वामी को वहाँ ले जाना आदि घटनाओं के सच्चे किस्से आमतौर से प्रसिद्ध हैं। बंदर भी अपने किसी साथी को बचाने के लिए बहुत समझदारी का परिचय दिया करते हैं। कहते हैं कि बंदर का बच्चा कुएँ में गिर गया तो कई बंदर एक-दूसरे के पैर पकड़कर कुएँ में लटक गये और बच्चा उन पर चढ़कर बाहर आ गया। घोड़ों की बुद्धिमानी और स्वामिभक्ति की कथाएँ भी प्रसिद्ध हैं। जब एक सेनाध्यक्ष बहुत घायल होकर रणक्षेत्र में गिर गया, तो उसका घोड़ा उसके कमरबंद को मुँह में पकड़कर घर तक उठा लाया, जो दस-पंद्रह मील दूर था।

भिन्न-भिन्न जाति के पशुओं में पारस्परिक प्रेम के समाचार प्रायः सामयिक पत्रों में छपा करते हैं, जिनसे सिद्ध होता है कि उनमें प्रेम की भावना और एक-दूसरे के प्रति सहानुभूति भी होती है। एक विलायती अखबार में एक मेंमना तथा नर बतख की दोस्ती का वर्णन छपा था, जो कभी अलग नहीं होते थे। इसी तरह एक बिल्ली तथा डौमकौवे में घनिष्ठ मित्रता हो गई थी। कौआ अपनी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शरारती आदत के अनुसार सोने की इच्छुक बिल्ली की पूँछ मरोड़कर जगा देता था। तब थोड़ी देर के लिए दोनों में खट-पट भी हो जाती थी।

स्मरण-शक्ति और बदला लेने की घटनाओं से भी पशुओं के मानसिक विकास का कुछ पता चलता है। कुछ वर्ष पहले अखबारों में एक हाथी की घटना इस प्रकार छपी थी—

"धुवरी राज्य में एक हाथी को खीला सूत्रधार नामक महावत ने पीटा था। इसके कुछ समय बाद खीला ने अन्यत्र नौकरी कर ली और वह एक नये हाथी का महावत बनाया गया। कई वर्ष बाद संयोग से खीला का नया हाथी और वह हाथी जिसे उसने पीटा था, काम पर से साथ-साथ वापिस आ रहे थे। दोनों महावत परस्पर परिचित थे और मार्ग में उनमें से एक ने हाथी को जरा ठहराकर तंबाकू की चिलम अपने साथी को दी। उसी समय मौका देखकर पीटे गये हाथी ने एकाएक सूँड़ उठाकर खीला को नीचे खींच लिया और महावत द्वारा बहुत रोके जाने पर भी तुरंत ही कुचलकर मार डाला।"

कानपुर में चैतू नामक गड़रिये ने किसी बात पर एक गाय को बहुत मारा। गाय ने इस घटना को स्मरण रखा और कई महीने बाद जब उसे अवसर मिला, उसने चैतू को गिराकर सींगों से खूब मारा।

● प्रेम और स्नेह 'सद्भाव भी'

संपर्क में आये मनुष्यों, जीव-जंतुओं को स्मरण रखने व समय आने पर उनसे व्यवहार करने में सचमुच ही जीव-जंतुओं की कोई समझ है। इतना ही नहीं वे प्रेम करने और स्नेह, सद्भाव रखने में मनुष्य से पीछे नहीं है। अन्य जीव भी प्रेम करते हैं, प्रेम ही नहीं, शुद्ध और नितांत पवित्र प्रेम। उदाहरण के लिए कुछ गर्म देशों के समुद्र में मछली की सी आकृति का एक जीव पाया जाता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

है, उसे मनाती कहते हैं। उसे अपने बच्चे से इतना प्यार होता है कि कैसी भी परिस्थिति में वह उसे अपने से अलग नहीं करती। उसके शरीर में दो झिल्लियाँ होती हैं, जो हाथों का काम देती हैं। इनसे ही वह अपने बच्चे को छाती से चिपकाए रहती है और उसे हमेशा दूध पिलाती रहती है। कभी-कभी इसका बच्चा छूट जाता है तो वह ऐसे रँभाती है जैसे लवाई (हाल की ब्यायी) गाय अपने बच्चे के लिये रँभाती है। संभवतः इसी गुण के कारण उसे समुद्री गाय (सी काऊ) भी कहते हैं। १ टन वजन से भी भारी मनाती संसार के दुर्लभ जीवों में से है। इसीलिए उसकी रक्षा के लिए कड़े नियम बनाये गये हैं। अंतर्राष्ट्रीय कानून के अंतर्गत इसे अबध्य घोषित कर दिया गया है।

मनुष्य अपने आपको सामाजिक प्राणी कहला सकता है, तो छोटे-छोटे जीव भी कम सामाजिक नहीं। यह केवल प्राकृतिक प्रेरणा से ही नहीं, उनकी बुद्धिमत्ता से भी होता है।

उत्तरी यूरोप का बीवर जंतु इसका बहुत अच्छा उदाहरण है। यह बड़ा बुद्धिमान जीव है, पानी में बाँध बनाकर रहता है। बाँध बाँधने में तो इंजीनियर भी चकराते हैं, फिर उन्हें भी परेशान होना चाहिए—पर नहीं। कई बीवर मिलकर योजना बनाते हैं, एक लकड़ी इकट्ठा करता है तो दूसरे छोटी-छोटी डालियाँ, कुछ मिट्टी ढोते हैं, कुछ खोदते हैं। पत्थरों के भार से ये लट्ठों को पानी में डुबा देते हैं और फिर उन पर मिट्टी थोपकर अपने लिए कमरे बना लेते हैं। एक-दूसरे से मिलते-जुलते रहने के लिए यह कमरों में दरवाजे भी रखते हैं। एक इंजीनियर जैसी व्यवस्था यह सब मिलकर कर लेते हैं। चींटी, मधुमक्खी, दीमक, मनाती, बीवर आदि के शरीर में अवतरण, निश्चित रूप से अज्ञान, अंधकार और अचेतनता में जन्म लेना है, पर यह एक विलक्षण सत्य है कि इस नन्हें से शरीर में रहने वाली नन्हीं सी चेतना में भी वह सारी क्षमताएँ भरी पड़ी हैं, जो किसी भी योग्य मनुष्य में संभव हैं। शरीर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जीवन साधनों के यंत्र हैं और प्रत्येक जीव को उसकी प्रकृति और स्वभाव के अनुरूप मिले होते हैं। यह मनुष्य शरीर की ही विशेषता है कि उसमें प्रकृति के परंपरागत विषयों को भी विजय करने की क्षमता है। यदि वह ऐसा न करके अन्य जीवों का सा ही निम्नगामी जीवन जीता है और अपने स्वभाव को ऊर्ध्वमुखी नहीं बनाता तो निश्चित रूप से उसे भी अज्ञान, अंधकार और अचेतना में भटकता हुआ एक सामान्य जीव मात्र समझना चाहिए, जबकि वह एक शाश्वत सर्वव्यापी और सनातन पराशक्ति है, यदि वह अपने इस रूप को समझ ले तो भगवान् हो जाये। पर यदि वह महत्त्वाकांक्षाओं में ही भटकता है, तब तो उसे भी कीट-पतंगे की श्रेणी का ही एक जीव कहना चाहिए।

इन सब बातों से सिद्ध होता है कि पशुओं का मानसिक और बौद्धिक विकास भले ही मनुष्य की तुलना में कम हुआ हो; फिर भी उनमें प्रेम, सहानुभूति, कृतज्ञता, स्वामिभक्ति आदि गुण पाये जाते हैं और कितने ही पशु समय-समय पर बुद्धिमानी का प्रमाण भी देते हैं। ये सब बातें किसी चैतन्य तत्त्व के अभाव में संभव भी नहीं हो सकतीं। इसलिए पशुओं को जड़ अथवा मनुष्यों का श्रेष्ठ समझ लेना एक बड़ी भूल है। वरन् वस्तुतः तथ्य तो यह है कि मानसिक विकास में पिछड़े होने के कारण ये जीव-जंतु मानव के छोटे भाई हैं, जिनके साथ उसे सहृदयता और सहानुभूति का व्यवहार करना चाहिए।

❐ ❐

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मनुष्य जीवन भी एक प्रयास

सृष्टि में विद्यमान जीवन-व्यवस्था को, जन्म-मरण के चक्र को शास्त्रीय भाषा में आवागमन का चक्र कहा जाता है। आवागमन अर्थात आना और जाना, अर्थात किसी स्थान पर पहुँचना और कुछ समय रहकर, अभीष्ट कार्य पूरे करने के बाद वापस लौट जाना। भारतीय मनीषियों की मान्यता है कि परमात्मा प्रत्येक जीव को किसी प्रयोजन की पूर्ति के लिए निश्चित अवधि का समय देकर इस संसार में भेजता है और फिर वापस बुला लेता है।

मनुष्येतर जीव-जंतुओं को तो भोग योनि कहा गया है और मनुष्य को कर्म-योनि का प्राणी माना गया है। भोग योनि के संबंध में बताया गया है कि जीव इस प्रकार अपने पूर्वकृत कर्मों का ही परिणाम या दंड भोगता है। लेकिन मनुष्य को अपने जीवन में कर्मों की स्वतंत्रता भी प्रदान की है और उस स्वतंत्रता के साथ अन्य कई विशेषताएँ देकर मनुष्य को इस लोक में भेजा गया है। इस स्वतंत्रता और जीवेत्तर विशिष्टताओं के साथ उसे कुछ विशिष्ट दायित्व भी सौंपे गये हैं और उन दायित्वों को पूरा करने के लिए संसार में भेजा जाता है। अफसर जिस प्रकार किसी दौरे पर जाते हैं और अपने अधिकारों का उपयोग कर सुपुर्द कामों को निबटाकर आते हैं, व्यापारी जिस प्रकार अपने व्यापार-व्यवसाय के उद्देश्य से कहीं जाते हैं और उन कामों को पूरा करने के बाद लौट आते हैं, मनुष्य को भी उसी प्रकार कुछ विशिष्ट दायित्वों को पूरा करने के लिए जीवन-यात्रा पर भेजा जाता है। भारतीय दर्शन की यह मान्यता स्पष्ट है और इसी कारण जीवन को आवागमन के चक्र के रूप में व्याख्यायित किया गया है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

● यात्राएँ मानव स्वभाव का अंग

सामान्य जीवन-चक्र में भी यात्राएँ मानव स्वभाव का एक अंग ही बनी हुई हैं। जीवन में यात्राओं का यह स्थान उस समय भी था जब पृथ्वी पर यातायात के साधनों का उतना विकास नहीं हुआ था। तब न केवल आजीविका, रोजगार, अध्ययन के लिए, अपितु प्राकृतिक सुषमा के दर्शन, जीवन-चक्र में आई एकरसता को तोड़ने के लिए देशाटन से लेकर योग्यता बढ़ाने, सत्संग करने और ज्ञानप्राप्ति के लिए भी एकाकी तथा सामूहिक यात्राएँ आयोजित हुआ करती थीं। संसाधनों के विकास के साथ-साथ इस प्रवृत्ति का भी विकास हुआ है। यात्राओं की सफलता के लिए प्रचुर भौगोलिक ज्ञान, स्थान विशेष के रीति-रिवाज, रहन-सहन योग्य विश्राम-स्थलों की जानकारियाँ पूर्व में ही उपलब्ध हो जाने के कारण, यह यात्राएँ अब सब तरह से आराम देह हो गई हैं।

दूसरी ओर पशु-पक्षी हैं, उनमें भी प्रवास का नैसर्गिक गुण आदिकाल से चला आया है। उनकी यात्राएँ पहले की अपेक्षा अब अधिक संकटपूर्ण हो गई हैं। उन्हें कोई भौगोलिक ज्ञान भी नहीं मिला होता है, किंतु यह प्रकृति का एक चमत्कार ही है कि प्रतिवर्ष हजारों पक्षी—जंगली जीव न केवल पड़ौसी राज्यों की, अपितु सुदूर देशों की भी यात्राएँ करते हैं। मनुष्यों में भाषावाद, जातिवाद, रहन-सहन की भिन्नता के कारण उनके हृदय परस्पर मिल नहीं पाते, पर इन जीवों में ऐसा कोई अंतर्द्वंद्व नहीं। विशेष स्थानों में अनेक देशों से आये भिन्न जाति के पक्षी और जीव-जंतु परस्पर सहिष्णुता, आदर भावना और भाईचारे की स्वस्थ परंपरा से जीवन निर्वाह कर नियत समय पर अपनी मातृभूमि को लौट जाते हैं। मनुष्य जीवन भी एक सुनिश्चित और विराट प्रवास का लघुसंस्करण है। जीव-जंतुओं के माध्यम से हम पता लगा सकें कि इस नैसर्गिक क्षमता का कारण क्या है, तो एक अनौखी जीवन दृष्टि का विकास नितांत संभव है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रवासी पक्षियों में ह्वाइट स्टार्क, गोल्डन प्लोवर, आर्कटिक टर्न, सेंड पाइपर, सारस और बोवालिक मुख्य हैं। यह अधिकांश समुद्र के ऊपर उड़ान भरते हैं। इस कारण इन्हें उबाऊ दूरी लगातार उड़कर पार करनी पड़ती है। गोल्डन प्लोवर टुंड्रा से पंपास तक की १२००० किलोमीटर, श्वेत स्टार्क को समूचा स्टार्क जिब्राल्टर जलडमरुमध्य आर्कटिक टर्न को तो समूची धरती की परिक्रमा करनी पड़ जाती है। जब ये उत्तरी ध्रुव से दक्षिणी ध्रुव की लगभग २५ हजार किलोमीटर दूरी तय कर एक स्थान से दूसरे स्थान जाते हैं, जहाजों की तरह यह भी नियमित रूप से समुद्रों में पाये जाने वाले टापुओं में कुछ समय विश्राम कर अपनी आगे की यात्रा की तैयारी करते हैं।

योरोपीय देशों के सारस शरदऋतु में अफ्रीका आ जाते हैं और वसंत ऋतु में पुनः लौट जाते हैं। एक बार पूर्व प्रशा (जर्मनी) से अनभिज्ञ सारसों के कुछ बच्चे ऐसेन नामक स्थान पर ले जाकर छोड़ दिये गये। उस समय तक वहाँ के अन्य प्रवासी सारस जा चुके थे। अत्यधिक चक्करदार रास्ता होने पर भी वे किसी अंतःप्रेरणा से एक निश्चित दिशा से प्रशा जा पहुँचे। इसी तरह कुछ कौवों को उत्तरी जर्मनी और वाल्टिक के पार उत्तर-पूर्व की दिशा से ले जाकर छोड़ा गया, पर वे ५०० मील की वापसी यात्रा समानांतर मार्ग से संपन्न कर यथा पूर्व स्थान पर लौट आये। आश्चर्य तो तब होता है, जब इनके अंडे भी यदि एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचा दिये जायें, तो उनसे निकलने वाले बच्चे भी अपने जन्म स्थान लौट आते हैं। ऐसा पैत्रिक गुण-सूत्रों की प्रेरणा से होता है, इससे संस्कारों की महत्ता प्रतिपादित होती है।

इंगलैंड से अफ्रीका की दूरी ६००० मील है पर वहाँ की अबाबीलें कष्ट उठाकर भी यह देशांतर करती हैं। अमेरिका से दक्षिणी अमेरिका जाने वाली स्वर्ण टिटहरी को २००० मील यात्रा करनी पड़ती है। पैंग्विन उड़ नहीं सकते पर वे समुद्र में तैरकर ही

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अंटार्कटिक से दक्षिणी अमेरिका की यात्रा करती हैं। वे जिस रास्ते जाती हैं, उसी से लौट आती हैं। विशेष ध्वनि से गाते हुए चलने वाली इनकी टोलियाँ दर्शकों का मन उसी तरह मोहती हैं, जैसे मेले-ठेले वाली स्त्रियों की गीत गाती टोलियाँ।

अपने जन्म स्थान की कुत्तों को भी विलक्षण पहचान होती है। वे गंध के सहारे सैकड़ों मील दूर से अपने घर लौट आते हैं। न्यूयार्क (अमेरिका) का कुत्ता एल्वनी विश्व भ्रमण की ख्याति प्राप्त कर चुका है। इसने अकेले रेल और समुद्री जहाजों से जापान, चीन, योरोप देशों की यात्रा की और अंततः सकुशल न्यूयार्क वापस लौट आया।

मनुष्य कहाँ से आया ? उसका यथार्थ क्या है ? यह न तो समझने का प्रयास करता है न लक्ष्य प्राप्ति के प्रयत्न, पर यह पक्षी हैं जो दूर-दूर तक जाकर भी समय पर प्रयत्नपूर्वक खुशी-खुशी लौट आते हैं। शरद ऋतु में उत्तरी-पश्चिमी ध्रुव प्रदेशों के पक्षी भारत, दक्षिणी अफ्रीका, श्री लंका तक फैल जाते हैं, पर ग्रीष्म ऋतु आते ही अपनी जन्म-भूमि लौट जाते हैं। द्वितीय विश्वयुद्ध के समय जीव वैज्ञानिकों ने जर्मनी के ब्रिमेन नगर में एक प्रयोग किया। उन्होंने सात अबाबीलें पकड़ीं और उन्हें लाल रंग से रंग दिया। फिर उन्हें विमान में बैठाकर लंदन लाकर हवाई अड्डे के पास छोड़ दिया गया। पीछे पाया गया कि उनमें से पाँच अबाबीलें सुरक्षित अपने पूर्ववर्ती घोंसलों में पहुँच गईं।

हममें से अनेकों मनुष्यों को परमात्मा कुछ विशेष बौद्धिक और आत्मिक गुणों से संपन्न कर पृथ्वी पर भेजता है और यह आशा करता है कि वे सृष्टि को सुंदर बनाने की उसकी कल्पना को साकार बनायेंगे, पर वह ऐसा करना तो दूर, अपने बुद्धि-कौशल को अपने ही स्वार्थ साधनों में उलझाकर यह कामना करता रहता है कि उसे संसार से जाना नहीं पड़ेगा। अपनी हठ बुद्धि के कारण

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वह न केवल संसार को कुरूप बनाता है, अपितु पश्चात्ताप भरी जिंदगी लेकर लौटने को विवश होता है।

नवीनता के प्रति आकर्षण जीवन का नैसर्गिक गुण है। यह गुण भी जीवन की पृथक्-पृथक् इकाइयों में सामंजस्य प्रस्तुत करता है और मनुष्य को उसके चिंतन के लिए भावभरी विराट् सामग्री प्रदान करता है। जीवों की भाँति मनुष्यों में भी यह गुण पाया जाता है, किंतु सांसारिकता के भार इस तरह के आह्लाद प्रदान करने वाले गुणों को भी नष्ट कर देते हैं। तब उनकी पाशविकता उभरकर सामने आ जाती है। अच्छे और नए के स्वागत की दृष्टि ने ही भारतीय मनीषा को अचानक कर्मयोग का दर्शन दिया है। इस परंपरा को बनाए रखने में न केवल प्रसन्नता, अपितु पवित्रता भी निहित है। अमेरिका के आरेगन राज्य में सिलबर्टन नाम के एक कस्बे के निवासी फ्रेंक ब्रेजियर ने कोली जाति का एक कुत्ता पाला, नाम रखा गया ''बॉबी''। बॉबी बड़ा ही स्वामिभक्त कुत्ता था, वह न केवल तरह-तरह के करतबों से घर वालों का मनोरंजन करता, अपितु वह एक स्वामिभक्त सेवक के सभी कर्त्तव्य निबाहता। घर की रखवाली के अतिरिक्त बच्चों को स्कूल पहुँचाना, जगली जानवरों से खेतों की रक्षा करना उसकी दिनचर्या में सम्मिलित कार्य थे। एक बार ब्रेजियर को इंडियाना जाना पड़ा, साथ में बॉबी भी था। दुर्भाग्य से कुत्ता वहाँ खो गया। बहुत खोजने पर भी बॉबी न मिला तो निराश ब्रेजियर वापस सिलबर्टन लौट आए, किंतु बॉबी निराश नहीं हुआ। नितांत अपरिचित ३००० मील का कष्ट भरा मार्ग उसने अगणित बाधाओं के बावजूद पार कर ही लिया और अंततः एक दिन अपने मालिक तक पहुँचने में सफलता प्राप्त कर ली। इसे कुत्तों की यात्रा का सबसे बड़ा रिकार्ड माना गया है। साथ ही उसकी स्वामिभक्ति का अद्भुत उदाहरण भी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इसी तरह भावनाओं के अलौकिक जगत के सत्य से हमें भी इंकार नहीं करना चाहिए। यह सत्य दृष्टि में निरंतर बना रहे तो अनायास ही दुष्कर्मों और खोटे कृत्यों से छुटकारा मिल जाता है, पर उसी के साथ ही व्यावहारिकता का आधार भी नष्ट न हो तो ही संतुलन बना रह सकता है। नवीन के प्रति अनन्य जिज्ञासा का अर्थ पलायनवाद नहीं होना चाहिए। अपनी इसी त्रुटि के कारण भारतीय जीवन ने धक्का खाया और शिरोमणि तत्त्वदर्शन को धरती की धूल चाटनी पड़ी। आकाश की कल्पना करते समय धरती के यथार्थ से मुँह न मोड़ें, जन्म स्थान बार-बार लौटने में जीवों की प्रकृति का यही संदेश संकेत हो सकता है।

● प्रकाश की खोज की ललक मनुष्येतर जीवों में भी

प्रकाश चिरकाल से ही मानवीय प्रेरणा का स्रोत रहा है। प्रकाश जितना दिव्य और स्निग्ध होता है, उतना ही मोहक लगता है। चैत्र की नवरात्रियों के समय आकाश से आने वाले प्रकाश में कुछ ऐसी दिव्यता होती है कि उसका अनुभव कर आँखें चमकने लगती हैं। ब्याह-शादियों के समय छूटने वाली फुलझड़ियाँ देखकर न केवल बच्चे अपितु बड़े भी प्रसन्न होते हैं। प्रकाश का मानवीय चेतना से कोई सीधा संबंध है, तभी हम अंधकार बर्दाश्त नहीं कर पाते। परमात्मा से "अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलने" की प्रार्थना करते हैं। प्रकाश ही जीवन और अंधकार अविद्या है। यह बात प्राण चेतना पर समान रूप से लागू होती है, चाहे वह मनुष्य हो या मनुष्येतर जीव।

पक्षियों के प्रवास संबंधी वैज्ञानिक अनुसंधानों ने यह सिद्ध कर दिया है कि पक्षियों का प्रवास जिन कारणों से प्रेरित होता है उनमें ऋतु-परिवर्तन को अनुकूल बनाये रखना, भोजन प्राप्त करना गौण है। अधिक समय तक प्रकाश की उपलब्धि ही प्रमुख है। जिन प्रदेशों में चौबीसों घंटे या अधिक से अधिक समय सूर्य का प्रकाश

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

रहता है, वहाँ पक्षी अधिक रहना पसंद करते हैं। ध्रुवों के समीपवर्ती प्रदेश इसी कोटि के हैं। आर्कटिक टर्न तथा गोल्डेन प्लोवर ऐसे ही पक्षी हैं, जो ध्रुवों की यात्रा गर्मियों में ही करते हैं, क्योंकि उन दिनों वहाँ से सूर्य चौबीसों घंटे दिखाई देता है। केवल मौसम की ही बात होती तो उसमें आये दिन उतार-चढ़ाव आते रहते हैं, किंतु वे ऐसा नहीं करते। अमेरिका के एक सर्वेक्षण में यह पाया गया है कि वहाँ सैन जुआन कैपिस्ट्रान स्थान में आने वाले स्वालो पक्षी प्रतिवर्ष एक ही निर्धारित तिथि को पहुँचते हैं।

न्यूयार्क में एक पक्षी पाया जाता है ब्रॉंज कक्कू—इनके बच्चे पैदा होते ही आत्मनिर्भर जीवन बिताते हैं। माता-पिता इन्हें अपने साथ यात्राओं में भी नहीं ले जाते, जबकि वे प्रतिवर्ष सोलोनद्वीप समूह की यात्राएँ करते हैं। न जाने कौन-सी सूक्ष्म अंतःप्रेरणा है कि बच्चे अपने आप ही अपने पूर्वजों की तरह यात्राएँ करते और उन स्थानों में स्वतः पहुँच जाते हैं, जहाँ उनके पितामह आते जाते रहते हैं। वैज्ञानिकों का अनुमान है कि प्रकाश किरणों की दिशा, विद्युत चुंबकीय क्षेत्र तथा पृथ्वी के घूमने की स्थिति को पक्षी भली प्रकार अनुभव करते हैं, इसी कारण वे इतनी लंबी यात्राएँ बिना किसी जान-पहचान और यंत्र के संपन्न करते हैं, नक्षत्रों की स्थिति सूर्य के परिभ्रमण के आधार पर भी वे अपनी यात्राएँ संपन्न करते हैं ? किंतु जितना ही उनका यह सूक्ष्म बोध आश्चर्यजनक है उसी तरह यह तथ्य भी है कि वे रात में बिना पूर्वज्ञान और मार्गदर्शन से उन्हें इन सभी परिस्थितियों की जानकारी किस स्रोत से उपलब्ध होती है ?

● जीव-जंतुओं की संस्कृति

मैरीटेरियन सागर में गर्मी के प्रारंभिक दिनों में मछलियों की बहुतायत देखने को मिलती है। मैकरल, पिलचर्ड और हैरिंग नाम की रंग-बिरंगी मछलियाँ इधर-से-उधर खेलती, कूदती, उछलती, फुदकती हुई बहुत अच्छी लगती हैं। इन्हें देखकर ऐसा लगता है

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कि क्रीड़ा और मनोरंजनपूर्ण जीवन ही यथार्थ है। पैसा और प्रजनन की चिंता में पड़े घिसी-पिटी जिंदगी जीना कोई बुद्धिमत्ता नहीं।

कुछ ही सप्ताह बाद वहाँ जायें तो फिर एक भी मछली दिखाई न देगी। चहल-पहल वाला वह क्षेत्र बिल्कुल सूना-वीरान दिखाई देने लगता है। प्रलय के बाद पृथ्वी की-सी नीरवता और निर्जनता का साम्राज्य देखकर लगता है—जीवन पृथ्वी से बँधा हुआ नहीं, वह परमात्मा की एक कलात्मक सत्ता है, जो इन मछलियों की तरह आनंद के लिए कभी पृथ्वी में आ जाता है तो कभी अन्य लोकों में। उसे सांसारिक बंधनों से बाँधना बेवकूफी है। मुक्ति के इच्छुक जीवन को तो प्रवासी होना चाहिए। आज यहाँ, कल वहाँ—उसके लिए तो सारा संसार ही अपना घर है।

स्कांबर नाम की मछलियों का जीवन बनजारे की तरह होता है। शीत ऋतु में स्कांबर उत्तरी समुद्र में बड़ी संख्या में देखने को मिलती हैं। ग्रीष्म ऋतु आई और जैसे ही किनारों का पानी गर्म होना प्रारंभ हुआ, वे बड़े-बड़े समुदाय बनाकर उत्तरी अटलांटिक महासागर के दोनों तटों पर पहुँच जाती हैं। जीवशास्त्रियों का मत है कि मछलियाँ खाने और प्रजनन के लिए प्रवास (माइग्रेशन) करती हैं, पर स्कांबर उन भारतीयों की तरह हैं जो आत्म-कल्याण के लिए ही अंतेवास करते हैं। ब्रह्मचर्य और गृहस्थ दो आश्रम सामुदायिक संगठन में एक स्थान पर रहकर बिताने के बाद वे सांसारिक प्रलोभनों को ठुकराकर विराट सीमा के सौंदर्य का रसपान करने निकल पड़ते हैं और वानप्रस्थ व संन्यासी जीवन जंगलों, पहाड़ों, घाटियों और सुदूर देशों में भ्रमण करते हुए व्यतीत करते हैं। एक स्थान पर रहकर सांसारिक गंदगी बढ़ाने का पाप हम भारतीयों ने स्कांबर के समान ही कभी नहीं बढ़ने दिया। इस तरह हम एक स्थान पर रहते हुए भी सारे संसार के बने रहे।

स्कांबर भी ऐसा ही करती हैं। तरीके में थोड़ी-ही भिन्नता है। मई-जून में वे उत्तरी समुद्र में ही अंडे-बच्चे देती हैं और फिर वहाँ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

से अकेले नहीं, अपने संपूर्ण समुदाय को लेकर वहाँ से निकल पड़ती हैं। "अकेले नहीं, हम सब" का सिद्धांत रखकर लगता है ये मछलियाँ श्रेष्ठता में मनुष्य से आगे निकल गईं।

एक बार गुरु नानकदेव एक ऐसे गाँव में पहुँचे, जहाँ के लोग बड़े उद्दंड और गँवार थे। उन्होंने नानक की आवभगत भी अच्छी तरह नहीं की, फिर भी जब वे चलने लगे तो ग्रामवासियों को आशीर्वाद दिया—'तुम लोग इसी तरह आबाद रहो।' नानक अगले दिन अगले गाँव में रुके। वहाँ के लोग बड़े नेक, शांतिप्रिय, अहिंसावादी और मिलनसार थे। उन्होंने नानक का यथेष्ट आदर-सत्कार किया। नानक विदा होने लगे तो वे लोग उन्हें कुछ दूर पहुँचाने भी गये। प्रणाम कर जब ग्रामवासी लौटने लगे तो नानक ने आशीर्वाद दिया—'तुम लोग उजड़ जाओ, तुम लोग उजड़ जाओ।'

नानक के एक शिष्य को यह बात नहीं भायी, उसने कहा—महात्मन् ! बुरे लोगों को अच्छा आशीर्वाद और अच्छे लोगों को बुरा—बात कुछ समझ में नहीं आई। नानक हँसे और बोले—बात यह है कि बुरे लोग संसार में फैलें तो उससे बुराई भी उसी तरह फैलती है, पर यदि अच्छे लोग एक ही स्थान पर जमे बैठे रहें—लोक-सेवा के उद्देश्य से वे घर न छोड़ें तो संसार में भलाई के विस्तार का अवसर ही कहाँ आयेगा ?

शिष्य की समझ में सारी बात स्पष्ट हो गयी पर हम अभी तक यह बात नहीं समझ पाये। आजीविका और अपने बच्चों के विकास की दृष्टि से भी हमें संसार में फैलना पड़े तो एन्ग्रालिश मछली की तरह फैलना ही चाहिए। विश्व की विशदता का और अपने आप को अच्छी तरह अध्ययन करने का अवसर तो तभी मिलता है, जब हम औरों के पास जाकर अपनी तुलना करें। हिंदू, मुसलमान आदि जातियाँ कोई ईश्वरीय विधान नहीं। जाति एक सापेक्ष वस्तु है, उसकी अच्छाई-बुराई का आधार गुणों की श्रेष्ठता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ही हो सकती है, वंश नहीं। यह पता हमें और सारे संसार को तभी चल सकता है, जब हमारे संपर्क का दायरा विस्तीर्ण हो।

एन्ग्रालिश मछली बसन्त ऋतु में अपने चैनेल में पाई जाती हैं, किंतु अंडे देने के लिए वह 'ज्वाइडर जा' के बाहरी हिस्से में पहुँच जाती हैं। सारडिना मछली जुलाई से दिसंबर तक कार्नवेल में रहती हैं पर जाड़ा प्रारंभ होते ही वह गरम स्थानों की ओर चल देती हैं। सामों मछली समुद्र में पाई जाती है, पर उसे गंगा और यमुना नदी के जल से अपार प्रेम है। अपने इस अपार प्रेम को प्रदर्शित करने और अच्छे वातावरण में अपने बच्चों के पालन-पोषण के लिए वह हजारों मील की यात्रा करके गंगा, यमुना पहुँचती हैं। अंडे-बच्चे सेने के बाद भोजन के लिए वह फिर अपने मूल निवास को लौट आती हैं। इस स्वभाव के कारण ही सामों दीर्घजीवी और बड़ी चतुर मछली होती हैं। हमारी तरह उनके बच्चे भी सामाजिक संकीर्णता में पले होते तो इस अतिरिक्त विकास का अवसर उसे कहाँ मिल पाता।

हमारी कमजोरी यह है कि विपरीत परिस्थितियों और संघर्षों से टकराना हमें अच्छा नहीं लगता। शांतिपूर्ण दिखाई देने वाली यह स्थिति वस्तुतः एक भ्रम है और हमारे विकास का मुख्य अवरोध भी। यों तो संसार की अधिकांश सभी जातियों की मछलियाँ उल्टी दिशा में चलती हैं, पर योरोप में पाई जाने वाली एन्ग्युला बहाव की उल्टी दिशा में चलकर लंबी यात्रा करने वाली उल्लेखनीय मछली है। ज्ञान और सत्य की शोध में हिमालय की चोटियों तक पहुँचने वाले भारतीय योगियों के समान एक एन्ग्युला मछली अटलांटिक महासागर पार करके गहरे पानी की खोज में बरमुडा के दक्षिण में जा पहुँचती है। बरमुडा अमेरिका के उत्तरी कैरोलाइना राज्य से ६०० मील पूर्व में स्थित ३५० छोटे-छोटे द्वीपों का समूह है।

वहाँ अंडे-बच्चे देकर यह अपने घर लौट आती है। उसके प्रवासी बच्चों में अपने माता, पिता, पूर्वजों और संस्कृति के प्रति

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इतनी प्रगाढ़ निष्ठा होती है कि ढाई-तीन साल के होते ही वे वहाँ से चल पड़ते हैं और ५-६ महीने की यात्रा करते हुए अपने जाति भाइयों से जा मिलते हैं और इस तरह बहुत दूर-दूर होकर भी उनका अपनी जाति से सांस्कृतिक संबंध उसी प्रकार बना रहता है, जिस तरह सैकड़ों मॉरिशस, ट्रिनिडाड, केन्या, यूगांडा, मलेशिया थाई, इंडोनेशिया, नैटाल, डर्बन, सुवाफीजी, लंका, बर्मा, इंगलैंड और अमेरिका में रहने वाले भारतीय आज भी अपने धर्म और अपनी संस्कृति की आदि भूमि भारतवर्ष से संबंध बनाये हुए हैं।

● प्रवासी पक्षियों का सांस्कृतिक प्रेम

कार्तिक लगा और भरतपुर की झीलें तरह-तरह के रंगीन चहल-पहल करने वाले प्रवासी पक्षियों से भरनी प्रारंभ हुईं। कहते हैं, भरतपुर आने वाले अधिकांश पक्षी रूस के साइबेरिया प्रांत से आये हुए होते हैं। पक्षियों का यों विश्व के भिन्न-भिन्न स्थानों से यह प्रेम विलक्षण है और कौतूहलवर्द्धक भी। उससे ज़ीव मात्र की एकता और संपूर्ण पृथ्वी के एक परिवार, एक इकाई होने का जो प्रमाण मिलता है, वह भी कम कौतूहलवर्द्धक नहीं।

बड़ौदा के आस-पास तथा कच्छ के नल सरोवर में भी शेष भारत और विश्व के अनेक भागों से आये हुए पक्षी जाड़े के दिन किस हँसी-खुशी से काटते हैं, उसे देखकर लगता है कि संसार के लोग भी ऐसे ही परस्पर मिल-जुलकर रहने का अभ्यास कर सके होते, तो विश्व कितना खुशहाल दिखाई देता।

पक्षियों के प्रवासी जीवन (माइग्रेशन) का अपना एक विचित्र ही इतिहास है। जहाँ मनुष्यों में थोड़ी-थोड़ी जमीन, भाषावार प्रांत, देश-देशांतरों के मध्य सीमा-विवाद उग्र रूप धारण करते और रक्तपात की परिस्थितियाँ उत्पन्न करते हैं, वहाँ पक्षी हैं—मनुष्य से बहुत नेक, जिन्हें न तो भाषा का भेदभाव करना आता है, न प्रांत

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

और देश का। थोड़े दिन का आयुष्य, बड़ी हँसी-खुशी के साथ बिता लेते हैं।

पक्षी-विशेषज्ञों का मत है कि वे यह सब अंतःप्रेरणा से करते हैं। इस प्रेरणा का उद्देश्य मौसम की अनुकूलता प्राप्त करना, भोजन और आजीविका की खोज, बच्चे पैदा करने के लिए उपयुक्त वातावरण प्राप्त करना होता है। कई पक्षी प्रकाश की कमी अनुभव करने पर उसी प्रकार एक स्थान छोड़कर दूसरे स्थानों में चले जाते हैं, जिस प्रकार कुछ देशों में राजनैतिक या शासन-तंत्र की भयंकरता के कारण बहुत से लोगों को निर्वासित होना पड़ता है।

किंतु चिड़ियों के प्रवास की दिशा का अध्ययन यह बताता है कि ऐसा करते समय पक्षी अपना सूक्ष्म बुद्धि, विवेक एवं सूझ-बूझ का भी प्रयोग करते हैं। वे जब अक्षांशीय (लॉगीच्यूडनल) पथ पर एक ध्रुव से दूसरे ध्रुव की ओर यात्रा करते हैं, तब ऐसे स्थानों से होकर चलते हैं, जहाँ उन्हें भोजन, घोंसले आदि की सुविधा रहे। लौटते समय भी वे उसका ध्यान रखते हैं। यह केवल अंतःप्रेरणा से ही नहीं हो सकता, इसमें उनकी समझ ही प्रधान होती है। मनुष्य भी इसी प्रकार प्रवास से पूर्व समझ से काम लें यह आवश्यक है।

पक्षी जब उत्तरी गोलार्द्ध से दक्षिणी गोलार्द्ध को चलते हैं, तो यह सीधा (देशांतरीय) प्रवास (वर्टीकल माइग्रेशन) कहलाता है। इसमें भी वही सूझ-बूझ रहती है। कुछ पक्षी जो स्थायी रूप से रहते हैं, पर कुछ ही समय के लिए बाहर जाते हैं, उदाहरण के लिए कौवे, खंजन, पिप्पलीज, मछली राजा (किंग फिशर) आदि को खाना नहीं मिलता, बर्फ जम जाती है, तब कुछ ही दिन बाहर रहना पड़ता है, फिर वे वापिस आ जाते हैं। कुछ चिड़ियाँ होती ही खानाबदोश (बर्ड ऑफ पैसेज) हैं। वे घूमते-फिरते हुए सृष्टि के विभिन्न दृश्यों का आनंद लेती हुई जीवन यापन करती हैं। इसकी मनुष्य से तुलना करने पर लगता है एक ही गाँव, प्रांत और देश को ही अपना समझना मनुष्य जाति की कितनी संकीर्णता है ! यदि

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हम सारे संसार को ही एक परिवार, एक देश मान सके होते तो धरती स्वर्ग बन गयी होती।

डॉ० एलचिन ने बहुत दिन तक चिड़ियों के प्रवासी जीवन का अध्ययन करके लिखा है—पक्षी समय के अनुसार अधिक-से-अधिक अपने रहन-सहन, वेष-भूषा में परिवर्तन भी कर लेते हैं; पर अपनी सभ्यता, संस्कृति और आदर्शों को वे उन स्थानों में भी नहीं भूलते, जहाँ उन्हें प्रवासी जीवन बिताना पड़ता है। हम भारतीय हैं, जिन्होंने कभी 'कृण्वंतोश्विमार्यम्', 'हम सारे विश्व को आर्य (सुसंस्कृत) बनायेंगे' का नारा दिया था, संसार भर में फैल गये थे, लोगों को धार्मिक, सांस्कृतिक उपदेश व शिक्षण देकर उन्हें सभ्य व सुसंस्कृत बनाया था। उनकी सांस्कृतिक निष्ठा रत्ती भर भी न डिगी थी, तभी सारे विश्व को प्रभावित करना संभव हुआ था। आज तो स्थिति बिल्कुल ही उलट गई। लाखों-करोड़ों भारतीय जावा, सुमात्रा, मौरिशस, केन्या, यूगांडा, ट्रिनीडाड, फिलीपाइन्स, नेटाल, डर्बन, मलाया, सिंगापुर आदि में बसे हैं, पर उनकी अपनी न शिक्षा रही न संस्कृति। वेष-भूषा, रहन-सहन, आहार-विहार तक बदल गये। नाम अभी भी भारतीय हैं, पर काम और आचार-विचार तो पाश्चात्यों से भी गये गुजर हो गये। अपनी संस्कृति के प्रति निष्ठा न होना सत्य सनातन धर्म के लिए भारी आघात हुआ। हम अपनी ही निष्ठा से टूट गये तो संसार पथभ्रष्ट क्यों न होता ?

चिड़ियाँ चलने के लिए तैयारी करती हैं, तब अपने पुराने पंख गिराकर नये पंख धारण कर यात्रा का स्वागत करती हैं। पहले वे एक बार परीक्षण उड़ान कर लेती हैं। अकेले नहीं, अनेक चिड़ियाँ एक दिन एक स्थान में नियत समय पर एकत्रित होकर उड़तीं और संगठन व एकता की महत्ता प्रतिपादित करती हैं। वे दिन में भी चलती हैं और सुरक्षा की दृष्टि से रात में भी, पर यात्रा के दिनों में उनकी सभ्यता और शिष्टाचार देखते ही बनता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सबसे आगे कबीले की झुंड की वृद्ध चिड़ियायें चलतीं और मनुष्य जाति को संकेत से समझाती हैं कि वृद्ध शरीर से कितने ही अशक्त क्यों न हो जायें, परंतु वे कभी अनुपयोगी नहीं होते। उनके पास जीवन भर का ज्ञान और अनुभव संग्रहीत रहता है। चिड़ियाँ उनसे महत्त्वपूर्ण लाभ ले सकती हैं, तो मनुष्य जैसा समझदार प्राणी वैसा क्यों नहीं कर सकता ? भारतीय संस्कृति में वृद्धों को, माता-पिता को इतना सम्मान दिया गया है, तभी हम संसार में अपना गौरव स्थापित कर सके हैं और आज जबकि पाश्चात्य सभ्यता के अंधानुकरण व अपनी ही दुर्बलताओं के शिकार बनकर हमने उन्हें आदर देने में कमी कर दी और हम दिग्भ्रांत पथिक के समान इधर-उधर भटकते भी दिखाई दे रहे हैं।

चिड़ियों की समझ इस दृष्टि से मनुष्य की समझ से श्रेष्ठ है। वे जब अपने देश से जाती हैं, तब वृद्धों को आगे रखती हैं। उनके पीछे अर्थात मध्य में छोटे बच्चे होते हैं। सुरक्षा की कितनी सावधानी कि सबसे पीछे युवा पक्षी। पर लौटते समय यह स्थिति बिल्कुल बदल जाती है। वृद्धों के आदेश पर प्रौढ़ पक्षी सबसे आगे चलते हैं, ताकि वे अगली यात्राओं के लिए अनुभव प्राप्त करें, दक्ष हो जायें बीच में वही छोटे बच्चे और सबसे पीछे मार्ग-दर्शन करती हुईं वृद्ध चिड़ियायें। वे रहती भर हैं पीछे, पर रास्ता चलने में थोड़ी-सी भी भूल हो तो वे सुधार देती हैं। घनी अँधेरी रातों में भी वृद्ध पक्षी तारागणों की मदद से उन्हें चलना सिखाते हैं। पक्षी अपने बुजुर्गों के सम्मान का पूरा लाभ लेते हैं, जबकि हम मनुष्यों ने बुजुर्गों का सत्कार न कर अपना भारी अहित किया।

हजारों मील की दूरी तक चले जाते हैं यह पक्षी, पर जब वापस लौटते हैं तो अपनी संस्कृति, बोली, भाषा में किंचित् मात्र परिवर्तन परिलक्षित नहीं होता। आर्कटिक टर्न ११००० मील की यात्रा करती है तो गोल्डेन प्लोवर ७००० मील का प्रवास। वुडकाक, सारस और राबिन पक्षी क्रमशः २५००, २०००, १००० मील तक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

चले जाते हैं। छोटी-छोटी गौरैया और चहचहाने वाली चिड़ियाँ भी ५०० व ३०० मील तक चली जाती हैं और विश्व भ्रमण का आनंद व ज्ञान-लाभ प्राप्त करती हैं।

समुद्र के तट, पर्वत, वादी, घाटियों और नदियों का भ्रमण करते पक्षी होते हैं छोटे, पर अपना दृष्टिकोण विशाल बना लेते हैं। पक्षी-विशेषज्ञों का विश्वास है कि इन्हें पृथ्वी के चुंबकीय क्षेत्र, उसके घूमने से उत्पन्न मैकेनिकल फोर्स आदि का भी पता होता है। मनुष्य ही है, जो कि अपने सीमित ज्ञान पर दंभ दिखाता है। यह पक्षी जो ज्योतिर्विज्ञान तक से परिचित होते हैं, अँधेरी रातों में तारों की मदद से आगे बढ़ते चले जाते हैं, पर उन्हें अपनी श्रेष्ठता का कुछ भी अभिमान नहीं होता। एक छोटे से प्राणी की चहकती-फुदकती जिंदगी जी लेते हैं और साथ ही तरह-तरह के ज्ञान और अनुभव भी अर्जित करते रहते हैं, लेकिन ऐसा कभी नहीं हुआ कि उन्होंने अपनी नैसर्गिक प्रकृति, संस्कृति और विशेषताओं का परित्याग किया हो।

यह तो मनुष्य ही है, जो महत्त्वहीन और निर्मूल्य सुख-साधनों के प्राप्त होते ही अपने आपको भूल बैठता है और अपनी विशेषताओं, क्षमताओं तथा दायित्वों की स्मृति खो देता है। उचित यही है कि जीवन को एक प्रवास एक यात्रा मानते हुए, उसे सफलतापूर्वक संपन्न करने की बात सोची जाए तथा मनुष्य जीवन को सफल व सार्थक बनाया जाए।

❐ ❐

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भाव संवेदनाएँ-आत्म चेतना की प्रतीक

न्यूजीलैंड द्वीप के पास कुक जलडमरूमध्य में कोई ५ मील ऐसा समुद्र है, जिसमें बड़ी-बड़ी मूँगों और पत्थरों वाली टेढ़ी-मेढ़ी चट्टानें हैं। यहीं डालफिन जाति की एक दस फुट लंबी और तीन फुट चौड़ी मछली रहती थी। वह मछली इस खतरनाक स्थान में नाविकों को सही रास्ता बताती थी, जिससे वे दुर्घटनाओं से बच जाते थे। जहाजी इसी कारण प्यार से उसे 'पेलोरस जैक' कहा करते थे।"

"जब तक खतरा रहता मछली आगे-आगे चलती और जहाज पीछे-पीछे। जैसे ही साफ समुद्र आ जाता वह एक बार ऊपर उछलती और गोता लगाकर भाग जाती। नाविक समझ जाते थे, अब कोई खतरा नहीं है। एक बार एक जहाज के किसी अजनबी व्यक्ति ने उस विलक्षण मछली पर गोली दाग दी। गोली लगते ही मछली डुबकी लगाकर भाग गयी और कई वर्ष तक नहीं दिखाई दी। इस बीच कई जहाज वहाँ दुर्घटना ग्रस्त हो गये।"

"कुछ दिन तक विश्राम करने के पश्चात् मछली का घाव ठीक हो गया। इसी बीच न्यूजीलैंड सरकार ने निषेधाज्ञा प्रसारित कर दी कि उस मछली को मारने वाला दंड का अधिकारी होगा। इसके कुछ दिन बाद ही वह मछली फिर दिखाई देने लगी। उसने मनुष्य की कृतघ्नता का बिल्कुल ध्यान न दिया और फिर से परोपकार के व्रत का पालन करने लगी। आश्चर्य यह है कि जैसे ही वह रोटूरा नामक उक्त जहाज को देखती वैसे ही डुबकी लगाकर भाग जाती। जब इस मछली की मृत्यु हुई तो उसकी असाधारण सेवा के लिए न्यूजीलैंडवासियों ने उसका एक भव्य स्मारक बनाया। उसकी एक प्रस्तरमूर्ति प्रतिष्ठित की गई जो अब भी विद्यमान है।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इस मछली का विचित्र वर्णन दिल्ली से प्रकाशित होने वाले—नव भारत टाइम्स के साहित्यिक संस्करण में छपा था। इसी पत्र में कैप्टन पी० जे० प्रसाद द्वारा लिखा हुआ लद्दाख सीमांत का एक और विवरण प्रकाशित हुआ था, जिसमें बताया गया है कि कुछ याकों ने बर्फीले तूफान से सीमा रक्षकों को बचाया था। जैसे ही तेज अंधड़ आता—बताते हैं याक पंक्तिबद्ध होकर खड़े हो जाते और गश्तीदल उनकी ओट में छुप जाता। इस तरह भयंकर, बर्फीले तूफान से बचकर गश्तीदल अपने खेमे तक पहुँच जाता।

यह घटनाएँ सिद्ध करती हैं कि—चेतन स्वरूप आत्मा ही सर्वभूत प्राणियों में विद्यमान है। अपने-अपने कर्मानुसार जीव विभिन्न शरीरों में प्रगट होता है, किंतु जीव-मात्र की आत्मिक स्थिति एक जैसी है, इसलिए कभी किसी जीव को न मारना चाहिए, न सताना चाहिए। उनसे आत्म-विकास की शिक्षा लेनी चाहिए।

विश्व में दो प्रकार के पदार्थ पाये जाते हैं—जड़ और चेतन। वृक्ष, वनस्पति, पौधों, गुल्म-लताओं तक में चैतन्य के चिह्न प्रकट हो रहे हैं, किंतु तमोगुण की अधिकता के कारण वे सब अविकसित प्राणी हैं, कीट-पतंग, वृक्षों की अपेक्षा थोड़ा अधिक विकसित हैं, पशु-पक्षियों का स्वाभाविक ज्ञान कीट-पतंगों से भी अधिक विकसित पाया जाता है। कई बार तो पशु-पक्षियों की विशेषताएँ मनुष्य की बुद्धि और उसके चातुर्य को शर्मिंदा करने लगती हैं। आहार, निद्रा, भय, मैथुन तक में ही नहीं, ज्ञान-विज्ञान, धर्म, बुद्धि-विवेक में भी वे मनुष्य से बढ़े-चढ़े पाये जाते हैं। यद्यपि उनमें आत्म-कल्याण के लिए साधनाएँ करने वाला नैमित्तिक ज्ञान नहीं होता, वह लाभ केवल मनुष्य को ही प्राप्त है। पर यदि सामान्य जीवों की गतिविधियों को देखकर हम यह मान लें कि आत्म-चेतना कर्मानुसार अन्य योनियों में भी जाती है

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

और यदि मनुष्य में धार्मिकता, सच्चाई, ईमानदारी, उत्कृष्टता आदि नहीं हैं तो उसकी स्थिति पशुओं से भी निम्नतर है, तो अवश्य ही आत्मा को पहचानने और जीवन लक्ष्य को प्राप्त करने का भाव जागृत हो सकता है।

● साहस, दया और करुणा

आक्रमण और मृत्यु के भय से जिस तरह मनुष्य कई बार किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो जाते हैं, वैसी ही घबराहट कई जीवों और पक्षियों को भी होती है, उससे पता चलता है कि वे भी जीवन और मृत्यु की शृंखला में जुड़े होते हैं और मोह, आसक्ति, अज्ञान के कारण उन्हें भी मृत्यु से ठीक उसी तरह डर लगता है, जिस तरह मनुष्य को।

अरब, सीरिया, मोसोपोटामिया और अफ्रीका आदि में शुतुरमुर्ग नाम का एक सात-आठ फुट लंबा पक्षी पाया जाता है। शुतुरमुर्ग की मूर्खता प्रसिद्ध है। कोई खतरा दिखाई देने पर वह अपना सिर बालू में छिपा लेता है और समझ लेता है कि खतरा दूर हो गया। उसका गुस्सा भी उतना ही प्रबल होता है, गुस्से में वह भयंकर आक्रमण करता है। कहते हैं उसकी चोंच का प्रहार इतना तीक्ष्ण होता है कि लोहे की चादर में भी छेद हो सकता है।

शुतुरमुर्ग में स्नेह सद्भाव का भी विलक्षण भाव पाया जाता है। पक्षी होने पर भी वह जेबरा और हिरणों के साथ रहता है।

कुछ समय पूर्व सारस पक्षियों के संबंध में कहा जाता है कि सर्दियों में वह उड़कर देशांतर को चला जाता है। यात्रा के समय वह कई छोटे-छोटे पक्षियों को भी अपनी पीठ पर बैठाकर उड़ जाता है। प्रवासी पक्षियों के संबंध में बड़ौदा के गायकवाड़ विश्वविद्यालय के प्राणि-शास्त्र विभाग में खोजबीन करने वाले प्राणिविद् प्रो० जे० सी० जार्ज ने इस विश्वास का उल्लेख किया

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

है। ग्रह न भी हो तो भी सारस का दांपत्य प्रेम विलक्षण माना गया है। नर या मादा को मारकर कोई उसे तब तक नहीं ले जा सकता, जब तक उसी तरह साथी को भी न मार दिया जाये।

पंजाब में करनाल जिले के थानेश्वर नामक स्थान के पास कुछ तालाब हैं। वहाँ सारसों के अनेक जोड़े निवास करते हैं। एक बार एक सारसी पर एक गीदड़ ने आक्रमण कर दिया। सारसी के पैर में जख्म हो गया, जिससे वह पीछे हट गई पर अब गीदड़ ने उसके छोटे बच्चे पर हमला कर दिया। इस बार सारसी की ममता ने प्रचंड रूप धारण किया। घायल होते हुए भी उसने साहस और बुद्धि से काम लिया। उसने चोंच से गीदड़ की आँखों में तीखे प्रहार किये, जिससे भयभीत हो गया। उधर मादा की आवाज सुनकर नर सारस भी आ पहुँचा, उसने भी गीदड़ पर हमला कर दिया, जिससे गीदड़ को भागते ही बना।

साहस ही नहीं, मनुष्येतर जीवों में दया और करुणा भी कम नहीं होती। बुंदेलखंड की एक घटना है, एक गाँव का कोई ५ वर्ष का बालक खेलते-खेलते गाँव के किनारे पर पहुँच गया। वहाँ से खेत प्रारंभ होते थे। उधर से एक विषधर सर्प दौड़ा आ रहा था, सर्प उत्तेजित था, इसलिये उसने उस बच्चे को ही घेर लिया। यह दृश्य वृक्ष की शाखा पर बैठा एक बंदर देख रहा था। उसे बच्चे पर दया हो आई, वह चटपट नीचे उतरा और पीछे से जाकर सर्प को एक तमाचा जड़ा। साँप ने बच्चे को तो छोड़ दिया और बंदर पर झपट पड़ा। बंदर ने साहस और बुद्धि से काम लिया। यह वार भी करता था और प्रतिघात से भी बचता था। यह द्वंद्व-युद्ध एक घंटे चला और अंत में विजय बंदर की ही रही, उसने साँप को कूँच-कूँच कर जान से मार डाला।

गाय बहुत सीधा जानवर है। गायें बहुत कम लड़ती-भिड़ती हैं पर अपने बच्चे, कुनबे और साथियों के प्रति उनमें सामूहिकता और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सहकारिता का कितना अच्छा भाव होता है, उसकी एक बिचित्र घटना ओरछा में घटित हुई। उसे सुनकर मनुष्य की शक्ति और ज्ञान का दंभ मिथ्या प्रतीत होने लगता है। मनुष्य जो करता है, उसमें अपना स्वार्थ प्रधान रहता है, पर गायों ने सबके स्वार्थ में अपना स्वार्थ सन्निहित सिद्ध कर दिखाया।

बात यों हुई कि एक दिन गायों का एक झुंड जंगल में चर रहा था। चरवाहे उन्हें जंगल में छोड़कर घर लौट जाते हैं। अब गायें आई ही थीं कि अचानक एक बाघ ने आक्रमण कर दिया। पहले तो गायें भागीं, पर जैसे ही उन्होंने देखा कि भागने पर भी किसी न किसी की मृत्यु अवश्यंभावी है तो सब गायें रुक गईं। उन्होंने मिलकर एक घेरा बनाया। छोटे-छोटे बछड़ों को बीच में खड़ा कर आक्रमण की राह देखने लगीं। बाघ पहले तो सकपकाया पर उसने गायों को भोला समझकर फिर आक्रमण कर दिया, पर इस बार का आक्रमण महँगा पड़ा। १५-२० गायें सींगों से बाघ पर टूट पड़ीं। बाघ का शरीर क्षत-विक्षत हो गया और उसे भागते ही बन पड़ा।

मौलिक बुद्धि जैसी कोई चीज न होने पर भी मनुष्य को श्रेष्ठ सिद्ध करने के लिए भावनाओं का आधार लिया जा सकता है। मनुष्य में भावनाएँ होती हैं, यही ठीक है, परंतु पशुओं में भी भाव संवेदनाएँ होती हैं और वे मनुष्य से ज्यादा उन्हें अनुभव करते हैं। अंतर है तो इतना ही कि मनुष्य भावनाओं को व्यक्त कर सकता है और पशु-पक्षी भावनाओं को व्यक्त नहीं कर सकते।

भावों की यह अभिव्यक्ति भी मनुष्य अपने परिवार और समाज से ही सीखता है। मनुष्य के संसर्ग में रहने वाले अन्य कई प्राणी, पशु-पक्षी भी अपनी भावनाओं और प्रतिक्रियाओं को प्रभावशाली ढंग से व्यक्त करना सीख जाते हैं। कहा जाता है कि मनुष्य के पास अपने भावों को व्यक्त करने के लिए एक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

समर्थ और समृद्ध भाषा है। अन्य प्राणियों के पास कोई भाषा नहीं है, लेकिन यह एक भ्रम भी हो सकता है कि अन्य प्राणियों के पास भाषा नहीं है। हो तो उन्हें भी देखा जा सकता है। यह बात और है कि मनुष्य उनकी वाणी को सुनता तो है, परंतु समझ नहीं सकता अथवा मनुष्य ने अपनी भाषा का आवश्यकता के अनुसार अधिक विकास कर लिया और अन्य प्राणी उस क्षेत्र में पीछे रह गये, लेकिन यहाँ आकर मनुष्य को मात खा जानी पड़ती है। कोई मनुष्य आज तक पशु-पक्षियों की भाषा में बात करने या समझने में समर्थ नहीं हो सका है, जबकि जानवर उसके भाव, यहाँ तक कि उसकी भाषा को समझने का अभ्यास बहुत जल्दी कर सकते हैं।

मनःशास्त्रवेत्ता पेटरराक ने एक चिंपाजी पाला, जिसे नाम दिया 'कोको'। कोको के संबंध में राक का दावा था कि वह अपनी भावनाओं को भी व्यक्त कर सकता है। कोको ने ५।। वर्ष की आयु में सांकेतिक भाषा के ३०० वाक्य सीख लिये।

कुछ और मनोवैज्ञानिकों ने कोको की परीक्षा ली तो उसने प्रत्येक व्यवहार की प्रतिक्रिया व्यक्त की और हर्ष-उल्लास के साथ खेद व दुःख भी व्यक्त किया।

शरीर, बुद्धि, भावनाएँ उनकी अभिव्यक्ति और भाषा की दृष्टि से मनुष्य का अन्य प्राणियों की तुलना में बढ़ा-चढ़ा होना मात्र एक भ्रम है। यह आभास जरूर होता है कि वह अन्य प्राणियों से बढ़ा-चढ़ा और उन्नत है। संभव है यह भ्रम अन्य प्राणियों में भी हो। जिन आधारों पर मनुष्य की श्रेष्ठता सिद्ध की जाती है, वे तो झूठे हैं ही, परंतु इसका यह अर्थ नहीं है कि वस्तुतः मनुष्य अन्य प्राणियों के समान ही है। निस्संदेह मनुष्य अन्य प्राणियों की तुलना में श्रेष्ठ और परमात्मा का सबसे बड़ा पुत्र है; क्योंकि मनुष्य-जीवन एक अवसर है, जिसमें यह सिद्ध किया जा सकता है कि परमात्मा ने हमें जो वस्तुएँ, जो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विशेषताएँ और जो अधिकार दिये हैं; उनका हम सदुपयोग कर सकते हैं और अपनी प्रामाणिकता, कर्त्तव्यपरायणता के आधार पर और अधिक उच्च स्थिति प्राप्त करने के योग्य सिद्ध कर सकते हैं।

● मैत्री-सद्भाव और कर्त्तव्य भावना

स्वार्थ और आत्म-रक्षा की प्रवृत्ति सभी प्राणियों में पायी जाती है। यह प्रवृत्ति जीवन को प्रेम करने के फलस्वरूप ही विकसित हुई। यह बात दूसरी है कि उन प्रवृत्तियों का विकास कितने परिष्कृत अथवा विकृत रूप में होता है, परंतु यह सच है कि प्रत्येक प्राणी में एक ऐसी चेतन सत्ता विद्यमान है, जो उसे निरंतर ऊँचा उठने की प्रेरणा देती है। स्वार्थों की पूर्ति के साथ-साथ उच्च आदर्शों को जीवन में आत्मसात करने की प्रेरणा देने वाली इस चेतन सत्ता का नाम ही अंतरात्मा है।

मनुष्य समाज में तो कितने ही लोग, उच्च आदर्शों की पूर्ति के लिए अपने तुच्छ स्वार्थों की बलि देते देखे जा सकते हैं। समाज भी ऐसे व्यक्तियों को महामानव, देवात्मा, आदर्श-पुरुष कहकर सम्मानित करता और श्रद्धा से शीश नवाता है। अंतरात्मा के रूप में संबोधित की जाने वाली यह चेतना केवल मनुष्य के पास ही नहीं है वरन् अन्य पशु-पक्षियों में भी, जिनके पास बुद्धि का अभाव है, सोचने-समझने की क्षमता नहीं है, इन आदर्शों के प्रति अगाध प्रेम देखा गया है। अमरीकी लेखक एच० ए० जेज ने पशु-पक्षियों के आपसी व्यवहार का लंबे समय तक अध्ययन किया और अपने निष्कर्षों को "विजडम ऑफ एनिमल्स" नामक पुस्तक में लिखा। इस पुस्तक में एच० ए० जेज ने कितनी ही ऐसी घटनाओं का उल्लेख किया, जो यह प्रमाणित करती हैं कि पशु-पक्षियों में भी नैतिकता तथा आदर्शों

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

के प्रति प्रेम होता है और वे इन आदर्शों को प्राण-पण से निबाहते भी हैं।

एच० ए० जेज ने अपनी पुस्तक 'विजडम ऑफ एनिमल्स' में एक पालतू बिल्ली तथा एक तोते की दोस्ती का उल्लेख किया है। सामान्यतः बिल्ली तोते को देखते ही झपटने की कोशिश करती है, परंतु उक्त पुस्तक में जिस बिल्ली और तोते का उल्लेख किया गया है, वे परस्पर एक-दूसरे को बहुत प्रेम करते थे। घर में जब कोई नहीं होता तो बिल्ली तोते को इस प्रकार खिलाती रहती थी, जैसे कोई बच्चा खिला रहा हो। एक दिन उनकी मालकिन रसोई में कोई चीज पकाने के लिए चूल्हे पर रखकर ऊपर कमरे में चली गई और वहाँ किसी काम में व्यस्त हो गयी। बिल्ली और तोता दोनों ही रसोई में खेलने लगे। खेलते-खेलते तोता पकने के लिए चढ़ाये गये बर्तन में गिर पड़ा। बिल्ली तुरंत ऊपर वाले कमरे में दौड़ी गयी और मालकिन के कपड़े खींचकर, उछलकर व्याकुलता प्रदर्शित करने लगी। मालकिन ने झल्लाकर कहा, क्या बात है ? तो बिल्ली ने उसकी ओर कातर भाव से देखा तथा रसोई की ओर चल पड़ी। पता नहीं उसकी आँखों में क्या भाव थे, कि मालकिन ऊपर वाले कमरे से निकलकर रसोई की ओर बिल्ली के पीछे-पीछे चल दी। वहाँ जाकर उसने देखा कि तोता चूल्हे पर चढ़ाये गये बर्तन में गिर पड़ा है और बुरी तरह छटपटा रहा है। मालकिन ने उसे बाहर निकाला। यह बिल्ली उस समय अपनी मालकिन को बुलाने नहीं जाती तो निश्चित था कि तोते के प्राण निकल गये होते।

पशु अपने सजातीय प्राणियों-परिवार के सदस्यों, बच्चों से तो प्रेम करते ही हैं, उन्हें साथ लिए घूमते और स्नेह का परिचय देते हैं, परंतु दूसरे पशुओं से भी प्रेम संबंध बनाने, स्नेह, सौहार्द्र बढ़ाने और मैत्री करने के उदारहरण बहुत कम देखने को मिलते हैं,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लेकिन मिलते अवश्य हैं। वरमिंघम (ब्रिटेन) में सर सैमुअल गुडबीईयर के यहाँ एक गधा था। उसकी एक घोड़ा से अच्छी दोस्ती हो गयी थी और दोनों बाड़े से निकलकर देर तक घूमा करते थे। गधा को एक बाड़े में रखा जाता था। बाड़े का फाटक अंदर से एक चटखनी से बंद होता था और बाहर से कुंडी द्वारा गधा अपना सिर फाटक के ऊपर तो कर सकता था, किंतु वह बाहरी कुंडी तक नहीं पहुँच सकता था, फिर भी वह अक्सर बाड़े के बाहर खुले में घूमता देखा जाता था। यह एक रहस्य ही था कि बाड़े का फाटक कैसे खुल जाता था ?

एक दिन सर सैमुअल ने देखा कि गधा पहले भीतरी चटखनी को झटके देकर खाँचे से अलग करता और फिर रेंकना शुरू कर देता। उसकी आवाज सुनकर बाहर एक घोड़ा आ जाता। घोड़ा अपनी नाक से धकेलकर कुंडी खोल देता, फिर दोनों साथ-साथ घूमते।

'वेजल' नामक एक जर्मन पत्रिका में एक कुत्ते और बिल्ली की मित्रता का वर्णन छपा है। कुत्ते और बिल्ली जन्मजात शत्रु होते हैं, परंतु यह कुत्ता और बिल्ली साथ-साथ खाते-पीते, उछलते-कूदते और साथ-साथ उठते-बैठते थे। इनके मालिक ने कुत्ते और बिल्ली की मैत्री को परखना चाहा। वह केवल बिल्ली को अपने कमरे में ले गया और उसे खाना दिया। उसने बड़े मजे में खाना खाया। ऐसा लगा कि कुत्ते की अनुपस्थिति बिल्ली को जरा भी नहीं खली है। फिर एक तस्तरी में खाना रखकर वह तस्तरी आलमारी में रख दी गयी। आलमारी में ताला नहीं लगाया गया और बिल्ली को खुला छोड़ दिया गया। बिल्ली तुरंत कमरे से बाहर गई और थोड़ी देर में वह अपने साथी कुत्ते को वहाँ बुलाकर ले आई। दोनों उस अलमारी तक गये। फिर बिल्ली ने धक्के से अलमारी का दरवाजा खोला तथा उछलकर कुत्ते को वह तस्तरी दिखाने लगी। कुत्ते ने तस्तरी देख ली और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उसने पंजों से दाबकर तस्तरी को बाहर निकाल लिया। पहले उसने बिल्ली की ओर भी तस्तरी खिसकाई, परंतु बिल्ली पीछे हट गयी, जैसे वह कह रही हो मैं तो खा चुकी हूँ। कुत्ते ने भी जैसे बिल्ली का आशय समझ लिया और तस्तरी को अपने पंजे में दाबकर सारा खाना खा गया। जब तक कुत्ता खाना खाता रहा, तब तक बिल्ली उस स्थान पर ऐसे बैठी रही जैसे वह पास बैठाकर खाना खिला रही है।

एक-दूसरे के प्रति प्रेम और कोमल भावनाओं का प्रदर्शन तो ठीक है, पशु-पक्षी अपनी मित्रता में अवरोध उत्पन्न करने वाले कारणों को भी दूर करते हैं। दूसरों की इच्छा या अनिच्छा अथवा बहकाने पर जुड़ने-टूटने वाली मित्रता का आधार स्वार्थ ही हो सकता है, क्योंकि मित्रता सच्चे हृदय से की जाती है और बाहरी कारणों से स्थिर बनती अथवा टूटती नहीं है। प्रसिद्ध अंग्रेजी साप्ताहिक 'स्टेट्स मेन' में एक पिल्ले और सूअर की ऐसी ही मित्रता का वर्णन छपा था। वे दोनों साथ-साथ घूमते थे। उनके स्वामी को यह पसंद न था इसलिए उसने पिल्ले के गले में लकड़ी का एक छोटा-सा किंतु वजनदार टुकड़ा बाँध दिया, ताकि वह भाग न सके; किंतु उसने पहले ही दिन देखा कि उस पिल्ले के गले में पड़ी रस्सी कट गई थी और वह सूअर के साथ स्वतंत्र घूम रहा था। दूसरे दिन पिल्ले के गले में चमड़े का मजबूत पट्टा डाला गया और उसमें लकड़ी का टुकड़ा जंजीर से लटकाया गया, लेकिन उस दिन भी पट्टा कट गया और लकड़ी का वह टुकड़ा कहीं गिर पड़ा। पिल्ला अपने पट्टे को स्वयं कदापि नहीं काट सकता था, फिर वह कैसे कट जाता है, यह देखने के लिए निगरानी की गई ? तो पाया गया कि यह काम उसके दोस्त सूअर का ही है।

यह तो हुई सामान्य मैत्री धर्म की बातें। साथ-साथ रहने, उठने-बैठने के कारण आपस में इस तरह की घनिष्ठता को

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्वाभाविक भी कहा जा सकता है; परंतु पशु-पक्षी में कर्त्तव्य भावना, विपत्तिग्रस्तों के प्रति सहयोग, सद्भाव तथा पीड़ित जनों से सहानुभूति और आततायी के प्रति आक्रोश की भावनाएँ भी खूब पाई जाती हैं। युद्ध में घोड़ों के उपयोग की चातुरी, कुत्ते की स्वामिभक्ति और दूसरे घरेलू जानवरों का प्रेम तो आये दिन देखने को मिलता ही है। इस तरह की कई घटनाएँ इतिहास प्रसिद्ध भी हैं। ऐसा नहीं है कि ये पशु इस तरह का विशेष व्यवहार अपने मालिक के साथ ही करते हों। उनके अपने साथियों के प्रति भी उनका व्यवहार कई बार इतना सूझ-बूझ भरा होता है, कि देख सुनकर दंग रह जाना पड़ता है।

कुछ दिन पूर्व अमेरिका के प्रसिद्ध पत्र 'लाइफ' में व्यक्ति की आँखों देखी घटना का वर्णन छपा था। हुआ यह कि एक भेड़ का बच्चा किसी तरह काँटेदार झाड़ी में उलझ गया था। उसने झाड़ी से निकलने की बहुतेरी कोशिश की, परंतु बेचारा अंततः असफल रहा और थककर निराश हो गया। पास ही उसकी माँ भेड़ भी चर रही थी। झाड़ियों में खड़खड़ाहट सुनकर उसे न जाने क्या शंका हुई कि वह वहाँ देखने आयी। सामान्यतः इस प्रकार की आहट पाकर भेड़-बकरियाँ भाग जाती हैं, परंतु वह मादा भेड़ पास आई और अपने बच्चे को झाड़ियों में फँसा देखकर उसे निकालने की कोशिश करने लगी। वह भी विफल ही रही। निराश होने के बाद वह खेतों के पार चर रही दूसरी भेड़ों के पास गई। कुछ ही देर बाद वह एक नर भेड़ के साथ वापस लौटी। मेढ़े ने अपने सींगों से काँटेदार टहनियों को खींचना शुरू किया और कुछ ही देर में मेमना झाड़ियों से मुक्त हो गया। झाड़ियों से निकलने के बाद उसकी माँ और नर मेढ़ा उस मेमना को चाट-चाटकर जिस प्रकार प्रेम प्रदर्शित कर रहे थे, लगता था उसे विपत्ति से छूट जाने के लिए आश्वस्त कर रहे हों और उसका भय मिटा रहे हों।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आततायियों के प्रति रोष-आक्रोश की भावना केवल मनुष्यों में ही नहीं होती, वरन् पशु-पक्षी भी अनीति का डटकर मुकाबला करते हैं। सामान्यतः कमजोर जानवर ताकतवर जानवर से डर जाते हैं और डरकर या तो भाग जाते हैं अथवा आत्मसमर्पण कर देते हैं परंतु कई बार वे गजब की साहसिकता तथा समझदारी का परिचय देते हुए आततायी का डटकर मुकाबला करते हैं। जे० जे० रोमेन्स ने अपनी एक पुस्तक में लिखा है कि डबलिन में उनके मकान की खिड़की के पास अबाबीलों के एक जोड़े ने घोंसला बनाया और उसमें रहने लगे। उन्हें रहते हुए कुछ ही दिन हुए थे कि एक गौरैया ने उनके घोंसले पर कब्जा कर लिया। अबाबील दंपत्ति को यह देखकर बड़ा गुस्सा आया।

उन्होंने गौरैया को घोंसले से निकालने की जी तोड़ कोशिश की, परंतु गौरैया अपने शक्ति मद में आकर घोंसले पर अड्डा जमाये ही रही। अंत में अवाबील दंपत्ति अपने कुछ साथियों को ले आयी। उन्होंने गौरैया को घोंसले से बाहर निकालने की अपेक्षा उसकी उद्दंडता का मजा चखाने का निश्चय कर लिया था। सभी अबाबीलें मिलकर अपनी चोंचों से कीचड़ भरकर लाने लगीं और उससे घोंसला का मुँह बंद कर दिया। गौरैया अब भीतर ही बंद हो गई थी, कुछ दिन बाद जब वहाँ से घौंसला हटाया गया तो गौरैया मरी पाई गई। बेचारी को अपने किये की सजा जीवन से हाथ धोकर भोगनी पड़ी थी।

पशु-पक्षियों द्वारा किया जाने वाला यह विशेष व्यवहार आकस्मिक ही नहीं कहा जा सकता। मानवी बुद्धि की दृष्टि से इस तरह के संबंधों की रीति-नीति नैतिक चेतना के जागरण से ही विकसित होती है। मनुष्य के भीतर भी अपने मित्रों व साथियों के प्रति निर्दोष, निस्वार्थ, त्याग भावना का उदय होता है। बुरे से बुरे और दुष्ट से दुष्ट व्यक्ति में भी कई अवसरों पर विपत्तिग्रस्तों के प्रति करुणा का भाव जाग उठता और कमजोर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

से कमजोर व्यक्ति भी अपने से बलवान आततायी से भिड़ जाने का साहस जुटा लेता है। कहने का अर्थ यह है कि नैतिक चेतना अथवा अंतरात्मा की प्रेरणा सभी प्राणियों में होती है, वह पशु-पक्षी हो या मनुष्य-देवता। यह नैतिक चेतना अथवा अंतरात्मा की प्रेरणा इस बात का प्रतीक है कि किसी भी प्राणी का जन्म और जीवन निपट उसका अपना मात्र ही नहीं है, बल्कि प्रत्येक प्राणी की समष्टिगत उपयोगिता है। प्रकृति ने उसे निजी स्वार्थों को पूरा करने के अलावा समष्टिगत उपयोगिता सिद्ध करने की भी भरपूर प्रेरणा प्रदान की है। मनुष्य को मिले अतिरिक्त साधन और विशेष सुविधाएँ तो इन प्रयोजनों को पूरा करने के लिए विशेष दायित्वों का बोध कराते हैं।

❐ ❐

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आनंद और उन्नति का आधार

अन्य प्राणियों की तुलना में मनुष्य ने बहुत अधिक उन्नति की है। इस उन्नति का मनुष्य की बौद्धिक विशेषता ही प्रधान कारण है, जिसके बल पर वह व्यवस्था, सूझ-बूझ, उपलब्ध साधनों का नियोजन व उपयोग अधिकाधिक कुशलतापूर्वक कर पाने में समर्थ हुआ है। परमात्मा ने मनुष्य को यह संपदा प्रदान करने के लिए मुक्तहस्थ उदारता से काम लिया है और इस संपदा के बाद जिन कारणों से मनुष्य ने उन्नति की है, वह है सामूहिकता तथा सहकार की प्रवृत्ति। साथ-साथ रहने से, मिल-जुलकर काम करने से ही मानवीय सभ्यता और संस्कृति का विकास हो सका है।

मनुष्येतर प्राणियों में से भी जिन प्राणियों में सहयोग व सामूहिकता की प्रवृत्ति पाई जाती है, वे क्षुद्र होते हुए भी सुरक्षित और व्यवस्थित जिंदगी जीते हैं। उनका अस्तित्व भी उतना ही जीवंत बना रहता है और कई प्राणी जो शारीरिक दृष्टि से मनुष्य की तुलना में काफी बढ़े-चढ़े हैं, चतुरता भी उनमें पर्याप्त है, पर वे परस्पर सहयोग करने की वृत्ति से रहित होने के कारण न तो उन्नति ही कर सके और न अपने अस्तित्व को ही सुरक्षित रख सके। सिंह जो किसी जमाने में भारी संख्या में सर्वत्र पाया जाता था, शक्ति की दृष्टि से वह सर्वोपरि कहलाता था, अब धीरे-धीरे अपना अस्तित्व खोता चला जा रहा है। जिस तेजी से उसकी संख्या घट रही है, उसे देखते हुए पशु-विद्या के ज्ञाता यह संभावना मानने लगे हैं कि कहीं सौ, दो सौ वर्षों के अंदर ही सिंह का अस्तित्व इस पृथ्वी पर से पूर्णतया समाप्त न हो जाय। जिन जीवों में परस्पर सहयोग की न सही, साथ-साथ झुंड बनाकर रहने की प्रवृत्ति पाई जाती है, वे इस कठिन समय

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

में भी कम से कम अपने अस्तित्व की रक्षा किये हुए हैं। मनुष्य बंदर को बहुत सताता है। वह उसकी आँखों में खटकता है। फिर भी परस्पर सहकारिता के बल पर वह घुड़की देने की अब भी हिम्मत करता है। कुत्ते परस्पर लड़ते हैं, इसलिए उनका नाम ही तिरस्कार सूचक बन गया। बंदर अब भी पूजे जाते हैं और देवता कहलाते हैं।

जड़ जगत में संगठन की शक्ति को हम आसानी से देख सकते हैं। चींटियों का झुंड जब चिपट जाता है तो बड़े साँप को भी जीवित खा जाता है। टिड्डियों का दल, मनुष्य की रखवाली को व्यर्थ बनाता हुआ सारी फसल को चौपट कर जाता है। हाथियों और बंदरों के झुंड निर्भयतापूर्वक जिधर चाहते हैं, उधर बढ़ते जाते हैं; उनमें से प्रत्येक को यह विश्वास होता है कि कठिन समय आने पर साथियों का सहयोग सहज ही उपलब्ध हो जायेगा। झुंड बाँधकर चरने वाली गायें आक्रमणकारी बाघ की दाल नहीं गलने देतीं।

सूत के एक धागे को कोई बच्चा भी आसानी से तोड़ सकता है, पर जब वे सौ पचास की संख्या में इकट्ठे होकर रस्सी बन जाते हैं, तो बड़े पहलवान के लिए भी उसे तोड़ना कठिन होता है। एक सींक का कोई मूल्य नहीं, उससे किसी प्रयोजन की सिद्धि नहीं होती, पर जब कितनी ही सींकें मिलकर एक बुहारी बन जाती है, तो उससे घरों की सफाई बड़े सुचारु रूप में होती रहती है। छोटी-छोटी पानी की बूंदें जब तक अलग हैं; तब तक उन्हें जमीन सोख लेती है, हवा सुखा देती है; लेकिन जब वे इकट्ठा हो जाती हैं तो नदी, तालाब, समुद्र के रूप में अपनी प्रचंड शक्ति का परिचय देती हैं। जो जमीन अलग-अलग बूँदों को क्षण भर में सोख लेती थी, वही अब तालाब के तल में या किनारे पर पतली कीचड़ के रूप में परास्त पड़ी दिखाई पड़ती है। एक सिपाही कुछ नहीं कर सकता, पर जब उनका पूरा दल सेना के रूप में कहीं चढ़ाई करता है तो सामने वालों के छक्के छूट जाते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कुछ डाकू एक गिरोह बनाकर जब सक्रिय होते हैं तो बड़े प्रदेश की लाखों जनता को आतंकित कर देते हैं। थोड़े से संगठित षड्यंत्रकारी बड़ी से बड़ी सुव्यवस्था को खतरे में डाल देते हैं। थोड़े से गुंडे-बदमाशों की चांडाल चौकड़ी से भले आदमी डरते और दबते रहते हैं। इस प्रभाव में उन व्यक्तियों का मूल्य नहीं, उनकी सामूहिकता ही प्रधान है। ये डाकू, गुंडे, बदमाश, षड्यंत्रकारी शारीरिक और मानसिक दृष्टि से वैसे ही होते हैं जैसे अन्य साधारण नागरिक। उनमें डराने जैसी कोई बहुत बड़ी विशेषता नहीं होती। वे अकेले हों तो उनकी मरम्मत आसानी से हो सकती है पर चूँकि उनका एक गिरोह होता है, यह गिरोहबंदी ही खतरे का, डरने का प्रधान अस्त्र है। देशों और जातियों का इतिहास भी इसी प्रकार का है। इतिहास साक्षी है कि जो लोग संगठित थे, वे उन्नति के मार्ग पर बढ़ते गये और जो असंगठित थे, फूट में ग्रस्त थे; उन्हें अवनति एवं पराजय का मुख देखना पड़ा।

भारत किसी समय में बड़ा गौरवशाली, शक्ति संपन्न एवं उन्नति के शिखर पर पहुँचा हुआ देश था। तब यहाँ के लोग संगठन का महत्त्व समझते थे। एक-दूसरे के दुःख-सुख में साथी ही न थे, वरन् परस्पर सहायता करके एक-दूसरे को आगे बढ़ाने से सुख-संतोष अनुभव करते थे। 'संसार की सारी प्रगति और समृद्धि संगठन के आधार पर अवलंबित है' इस गुरु मंत्र को यहाँ का हर नागरिक जानता था और उसी आदर्श के अनुरूप अपनी सारी योजनाएँ बनाता था। यह प्रवृत्ति जहाँ बढ़ती है, वहाँ स्वर्गीय सुख-शांति का स्वयं ही अवतरण होता है, जैसा कि पूर्व काल में इस देश में सर्वत्र दृष्टिगोचर होता था। धीरे-धीरे जब इस मनोवृत्ति का ह्रास हुआ, लोग व्यक्तिगत लाभ को, स्वार्थपरता को महत्त्व देने लगे। परस्पर ईर्ष्या, द्वेष, शोषण, अपहरण, लूट-खसोट, छल-कपट, फूट-फसाद का बढ़ना भी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्वाभाविक था। यह विष-बीज, जहाँ बोये गये होंगे, वहाँ सत्यानाश के फल ही उगेंगे। असंगठित, फूट-फसाद में ग्रस्त, आपापूती और ईर्ष्या, द्वेष के दलदल मे जब हम फँस गये तो मुट्ठी भर विदेशी आक्रमण चढ़कर दौड़े और इतने विशाल देश पर जादू की तरह कब्जा कर लिया। इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है, असंगठित समाजों में सदा से यही दुर्गति होती आई है।

मनुष्य में सहयोग की भावना ही परस्पर श्रद्धा, अनुशासन, प्रेम और कर्त्तव्यनिष्ठा के भाव भरती है। सहानुभूतिविहीन जीवन कष्ट और उलझन का ही नहीं, हिंसा और बर्बरता का भी जीवन बन जाता है। ऐसा तो असभ्य जंगली जानवर तक नहीं पसंद करते मनुष्य को क्यों पसंद करना चाहिए ? रूसी प्राणी विशेषज्ञ श्री साइबर्ट सोफ मैदानी क्षेत्र में रहने वाले जानवरों का अध्ययन कर रहे थे—तब उनके सामने एक विचित्र घटना घटित हुई। उन्होंने देखा एक सफेद पूँछ वाला उकाब पक्षी आकाश में मँडरा रहा है। आधा घंटे तक वैसे ही मँड़राते रहने के बाद उसने एक प्रकार की ध्वनि की। यह आवाज तेज थी लगता था उसने किसी को दौड़कर आने के लिए पुकारा हो। वह आवाज सुनते ही दूसरे उकाब ने आवाज की ओर दौड़कर उसके पास आ गया। इस तरह दस-बारह उकाब वहाँ एकत्रित हो गये। फिर जाने क्या बात हुई, वे सब गायब हो गये। दोपहर के लगभग उकाबों का पूरा झुड उसी स्थान पर उतरा। साइबर्ट सोफ ने ऐसी पोजीशन ली, जहाँ से उनकी सारी हरकत देखी जा सके। सभी उकाब एक घोड़े की लाश के पास पहुँचे। सबसे पहले बूढ़े उकाबों ने उसका मांस खाया। फिर वे हटकर निगरानी करने लगे और तब दूसरे उकाबों ने मांस खाया। उकाबों की इस सामाजिक भावना ने साइबर्ट सोफ को बहुत प्रभावित किया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बेहरिंग के काफिले ध्रुव प्रदेश में चला करते हैं। प्राकृतिक जीवन के अभ्यस्त यह काफिले वहाँ की सारी कठिनाइयों का मुकाबला बड़ी आसानी से कर लेते हैं; किंतु जो सबसे बड़े आश्चर्य की बात है, वह यह है कि यह काफिले वहाँ की छोटी-छोटी लोमड़ियों से मात खा जाते हैं। उनकी इस आपबीती को सुप्रसिद्ध लेखक स्टेलर ने बेहरिंग के काफिलों का युद्ध कहा है और बताया है कि प्रारंभ में यह काफिले जिस स्थान पर डेरा डालते वहाँ की लोमड़ियाँ आतीं और उनका खाना चुरा ले जातीं। निदान खाने को पत्थरों से ढककर रखा जाने लगा। पत्थर भी इतने वजनदार रखे जाते कि बड़ी से बड़ी लोमड़ी भी उन्हें उठाकर अलग न कर सकती। काफिले वाले बड़े असमंजस में थे कि तब भी उनका खाना चोरी गया मिलता और पत्थर उस स्थान से दूर फेंका मिलता।

ऐसा लगा कि कोई बड़ा जानवर आता है, अतएव ताक की गई। बात बड़ी विचित्र निकली। एक साथ कई लोमड़ियों का झुंड आया। उनमें से एक ऊँची टोकरी पर खड़ी हो गई, एक दूसरी तरफ। यह थी चौकीदार, उनका काम किसी भी संभावित हमले की सूचना अपने साथियों को देना होता है। शेष लोमड़ियाँ आगे बढ़ीं और एक साथ शक्ति लगाकर वजनदार पत्थर को उठाकर अलग कर दिया और खाना चुरा ले गईं।

अब काफिले वालों ने एक के ऊपर एक पत्थर रखकर ऊँचा खंभा उठाया और उसके ऊपर खाना रखा, पर लोमड़ियों से वह तब भी नहीं बच सका। अब लोमड़ियों ने अपनी पीठ पर चढ़ाकर किसी चुस्त लोमड़ी को ऊपर चढ़ा दिया, उसने ऊपर से खाना गिराया। गिरे हुए खाने को सबने उठाया और फिर ऊपर चढ़ी लोमड़ी को उतारा और दूर एकांत में जाकर सारा खाना बाँटकर खा लिया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इस घटना की समीक्षा करते हुए स्टेलर ने लिखा है "यह आश्चर्य की बात है कि लोमड़ी जैसे छोटे जीव ने सहयोग और सहकारिता के महत्त्व को समझा और उसका लाभ उठाया; जबकि मनुष्य जैसा बुद्धिशील प्राणी परस्पर स्पर्द्धा बरतता एवं ईर्ष्या, द्वेष और मनोमालिन्य रखता है। यह वृत्तियाँ उसे आगे बढ़ने से रोकती हैं।" सुख और शांति, समृद्धि और संपन्नता का राजमार्ग यह है कि मनुष्य भी मिल-जुलकर रहना सीखें; अपने हित को दूसरे के हित से जुड़ा हुआ मानकर एक-दूसरे के साथ सहयोग करना सीखें; यही वृत्ति सामाजिक जीवन को व्यवस्थित बना सकती है।

● आनंद और उन्नति का आधार

सहयोग और सामूहिकता के आधार पर निश्चत व सुरक्षित जीवन ही' आनंद तथा उल्लास का आधार बनता है। इतना ही नहीं इन तत्त्वों की महत्ता समझने वाले लोग, देश और जातियाँ अपराजेय होती हैं। मनुष्य जाति की समग्र सुख-समुन्नति साधन में नहीं, भावनाओं के विकास में है। भावनाओं के विकास द्वारा ही कोई मनुष्य अभावपूर्ण जीवन में भी आनंद और उल्लास, हँसी और खुशी प्राप्त कर सकता है।

● बुद्धि का अनुदान औरों को भी

प्रकृति ने विकास और सुरक्षा की व्यवस्था के लिए आवश्यक विभूतियों का वितरण करने में कहीं कोई कृपणता नहीं बरती है। कहा जा सकता है कि बौद्धिक क्षमताएँ और सहयोग-भावना केवल मनुष्यों में ही है, परंतु यह कहना लक्ष्य से मुँह मोड़ना होगा, क्योंकि प्रकृति ने अपनी अन्य संतानों को भी उसी उदारता से ये विभूतियाँ प्रदान कर रखी हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सुप्रसिद्ध जीवशास्त्री बेल्ट एक बार चींटियों के सामाजिक जीवन का अध्ययन कर रहे थे। एकाएक मस्तिष्क में एक कौतूहल जाग्रत् हुआ, यदि इन चींटियों को मकान छोड़ने को विवश किया जाये तब यह क्या करेंगी ? बेल्ट चींटियों की बुद्धि की गहराई और उसकी सूक्ष्मता की माप करना चाहते थे। अतएव चींटियों के एक बिल के पास ऐसा वातावरण उपस्थित किया, जिससे चींटियाँ आतंकित हों। पास की जमीन थपथपाना, पानी छिड़कना, विचित्र शोर करना आदि। चींटियों ने उसी तरह परिस्थिति को गंभीर माना, जिस तरह अतिवृष्टि, तूफान, समुद्री उफान जैसे प्राकृतिक कौतुक मनुष्य को डराने, धमकाने और ठीक-ठिकाने लाने के लिए बड़ी शक्तियाँ करती हैं और मनुष्य उनसे डर जाता है।

जिस स्थान पर बिल था, आधा फुट पास ही वहाँ एक छोटी सी ढाल थी। सर्वेयर चींटियाँ चटपट बाहर निकलीं और उस क्षेत्र में घूमकर तय किया कि ढलान के नीचे का स्थान सुरक्षित है। उनके लौटकर भीतर बिल में जाते ही मजदूर गण सामान लेकर भीतर से निकलने लगे। बाहर आकर चींटियों ने दो दल बनाये, एक दल अपनी महारानी को लेकर नीचे उतर गया और खोजे हुए नये स्थान पर पहुँचाकर बिल के बाहर पंक्तिबद्ध खड़ा हो गया, मानो वे सब किसी विशेष काम की तैयारी करने वाले हों।

सामान ज्यादा हो और दूर की यात्रा हो तो मनुष्य बैलगाड़ी, रेल, मोटर और हवाई जहाज का सहारा लेते हैं। माना कि चींटियों के पास इस तरह के वाहन नहीं हों। यह भी संभव है कि वे आदिम युग के पुरुषों की तरह समझदार हों और यांत्रिक जीवन की अपेक्षा प्राकृतिक जीवन बेहतर मानती हों। अतएव उन्होंने वाहन न रचे हों, पर इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि उनमें परिस्थितियों के विश्लेषण और तदनुरूप क्रिया की क्षमता नहीं होती। चींटियों का जो दूसरा दल ऊपर था, उसने समय और बोझ से बचने के लिए ऊपर से सामान लुढ़काना प्रारंभ किया। नीचे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वाली चींटियाँ उसे सँभालती जा रही थीं और बिल के अंदर पहुँचा रही थीं। ऐसा लगता था जैसे बाढ़ग्रस्त क्षेत्र में हेलीकोप्टर से अन्न के बोरे गिराये जा रहे हों।

अपने गाँव-नगर के निवासियों को हर चींटी भली प्रकार पहचानती है। एक भी बाहर वाली घुस आये, तो उसे तुरंत पहचान लिया जायेगा और मार-कूटकर उसे वापस खदेड़ दिया जायेगा।

एक भी चींटी कभी बेकार नहीं बैठती। उन्हें आराम हराम है। वे समूह बनाकर काम करती हैं और हर दल अपने क्रिया-कलाप में कीर्तिमान स्थापित करने के लिए पूरे उत्साह, धैर्य और संतोष के साथ लगी रहती हैं। मानो कर्म की सुव्यवस्था ही एक मात्र उनकी महत्त्वाकांक्षी हो। गौर से देखें तो प्रतीत होगा कि उनका एक दल एक रास्ते जा रहा है, तो दूसरा दल उसी मार्ग से वापिस लौट रहा है। लौटने वालियों के मुँह में अनाज, कीड़ा, घासफूस, मिट्टी आदि कुछ न कुछ जरूर होगा। यह संग्रह अपने लिए नहीं पूरे परिवार के लिए करती हैं। खाद्य संग्रह, गृह-निर्माण प्रायः इस भाग-दौड़ का उद्देश्य होता है। घायलों और बीमारों की सेवा-सहायता से लेकर अंडे-बच्चों के परिपोषण तक के लिए भी उनकी गतिविधियाँ चलती हैं। बिल में पानी भर जाने या कोई संकट उपस्थित होने पर वे नया स्थान ढूँढ़ने, बनाने और स्थानांतरण के साथ-साथ संग्रहीत माल असबाब ढोने की आपत्तिकालीन व्यवस्था भी बनाती हैं। कहीं चीनी का बड़ा भंडार दीख पड़े या कोई स्वादिष्ट कीड़ा हाथ लग जाय, तो फिर दैनिक कार्यों को बदलकर वे फिर जल्दी-जल्दी उस लाभ से लाभान्वित होने का प्रयत्न करती हैं। माल मिलते ही वे तत्काल उसे खाने नहीं बैठ जातीं, वरन् उसमें वे क्वचित जलपान करके बिल में जमा करने के लिए जुट जाती हैं और सुविधानुसार उसे स्वाद और संतोषपूर्वक खाती हैं।

चींटियों के तीन वर्ग हैं—(१) रानियाँ (२) राजा लोग (३) बाँदियाँ। रानी एक ढेर में चार-पाँच से अधिक नहीं रहतीं। वे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

औसत चींटी से मोटी-तगड़ी होती हैं, उनका कार्य केवल बच्चा उत्पन्न करना होता है। प्रायः सारा समय उनका इसी में व्यतीत होता है। अस्तु बाहर निकलने, घूमने की भी उन्हें फुरसत नहीं होती। नर्सें, दाइयाँ, रसोइया, चौकीदार उनके पास मुस्तैदी से अपनी ड्यूटी पर तैनात रहते हैं।

अंडों को सेने का काम बाँदियाँ करती हैं। प्रसव होते ही वे उन्हें सुरक्षित स्थान पर ले जाती हैं और जब तक बच्चे बड़े न हो जायें, तब तक बाँदियाँ उनका अपने निज के बच्चों जैसा ही लालन-पालन करती हैं। अंडे में से एक नन्हीं सी 'इली' निकलती है। यह जमीन पर पड़ी कुन-मुनाती रहती है। भूखी होने पर मुँह खोलती है तो मौसियाँ तुरंत उनके मुँह में कोमल और सुपाच्य ग्रास रख देती हैं। उपयुक्त समय पर वे इन बच्चों को सहारा देकर घुमाने भी ले जाती हैं।

बाँदियाँ न विवाह करती हैं न बच्चे देने के झंझट में पड़ती हैं। उन्हें नियत कर्त्तव्य पालन में गृहस्थी बसाने से अधिक संतोष रहता है।

राजाओं के पंख उगते हैं। वे बिलों से निकलकर उड़ान भरते हैं। जैसे ही वे उड़े कि पक्षी उन पर झपट पड़ते हैं और बात की बात में उन्हें उदरस्थ कर जाते हैं। कुछ के पंख टूट जाते हैं और भारी होने के कारण घर लौटने में असमर्थ रहकर प्राण गँवाते हैं। जो लौट आते हैं वे अपने पंख नोंचकर फेंक देते हैं और अन्य साथियों की तरह रहने में ही कल्याण मानते हैं। व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षा कितनी महँगी पड़ती है, उसे वे अनुभव द्वारा भली प्रकार सीख लेते हैं और फिर अकेले आकाश छूने की सनक को सदा के लिए त्याग देते हैं।

चींटियाँ सदा एक ही स्थान पर नहीं रहतीं। जब उनका नगर बस जाता है, उनमें निवास, आवास, गोदाम, चिकित्सालय, विश्रामगृह, सड़कें, गलियाँ आदि सभी कुछ बन जाता है और खाने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

के लिए पर्याप्त खाद्य भंडार जमा हो जाता है; तो नर चींटियाँ यह अनुभव करती हैं, कि अब दल में निठल्लापन आ जायेगा और आरामतलबी से श्रमशीलता की आदत घट जायेगी। इस संकट को टालने के लिए तो राजा लोग नये नगर बसाने, नया क्षेत्र ढूँढ़ने के लिए निकल पड़ते हैं और जब उपयुक्त भूमि मिल जाती है तो रानियों को साथ लेकर नई जगह में चले जाते हैं। बाँदियाँ वफादार साथी की तरह उनके पीछे चल पड़ती हैं और नये सिरे से नया नगर बसाने और आवश्यक उपकरण जुटाने में लग जाती हैं, इस प्रकार अमीरी और आरामतलबी से उत्पन्न होने वाले संकटों से वे बचकर अपनी कर्मनिष्ठा बनाये रहती हैं। पुराना नगर छोड़ने और नया देश बसाने का उनका यह क्रम निरंतर चलता ही रहता है, वे एक जगह बहुत समय नहीं रहतीं।

अमेरिका में पाई जाने वाली अट्टा चींटी खेती-बाड़ी भी करती हैं। वह अपनी रुचि के बीज जमा करके, पास की नम जगह में गाढ़ती हैं और उगने वाली फसल की निराई-गुड़ाई करती रहती हैं। जब फसल पकती है तो उसका एक-एक दाना वे अपने बिलों में जमा कर लेती हैं। ये चींटियाँ पास-पड़ौस के किसानों की फसल पर भी चढ़कर पके हुए बीज तोड़ती और ढोकर घर में जमा करने में भी प्रवीण होती हैं।

चींटी ही नहीं दीमक भी अपने आकार-प्रकार को देखते हुए इतनी कर्मशील और दूरदर्शी है कि उसके क्रिया-कलाप से मनुष्य कुछ सीख समझ सकता है और अपनी वैयक्तिक एवं सामाजिक स्थिति में उपयोगी सुधार कर सकता है।

दीमकों में अधिकांश अंधी होती हैं, तो भी उनकी घ्राणशक्ति लगभग आँखों जैसी ही सहायता करती है और वे बिना भटके अपना जीवन-क्रम चलाती रहती हैं। आँखों वाली दीमकें उनकी कठिनाई को समझती हैं और स्वयं हटकर उनके लिए रास्ता देती हैं और समय पर उन्हें अतिरिक्त सहायता पहुँचाती हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दीमकों के बिलों के ऊपर जो मिट्टी का आच्छादन होता है वह इतनी मजबूती और कुशलता से बना होता है कि वर्षा का पानी उसमें प्रवेश करके उनमें निवास करने वाली दीमकों की कोई क्षति नहीं कर पाता। छोटे-मोटे नाले, झरनों के ऊपर से वे ऐसे मजबूत पुल बनाती हैं कि वर्षों तक उस रास्ते से उनका आना-जाना इधर-उधर हो सके। इस प्रकार के जल अवरोध को दूर कर सकने में भी सफल होती हैं। छोटी-सी दीमक की यह गतिविधियाँ लंबे-चौड़े आकार वाले मनुष्य के लिए अनुकरणीय हैं।

सहयोग, संगठन और सहकार की विशेषताओं के अलावा अन्य जीव-जंतुओं में विद्यमान बौद्धिक क्षमतायें इस बात की भी प्रतीक हैं, कि सृष्टि के कण-कण में एक ही चेतन तत्त्व समाया है अन्यथा आकृति, प्रकृति, शक्ति व शरीर संरचना में भिन्न-भिन्न प्रकार के होते हुए भी सभी प्राणियों में व्यवस्था, बुद्धिमत्ता और सूझ-बूझ के तत्त्व समान रूप से विद्यमान होते हैं।

● गरिमा अन्य प्राणियों में भी

इस दृष्टि से ब्राजील की एक चींटी को अद्‌भुत आश्चर्य कहा जा सकता है, जो कृषि पर ही निर्भर रहती है। सामान्य चींटियों की तरह यह दूसरों की कमाई पर निर्भर नहीं रहतीं। यह कुछ पेड़ों से टूटी हुई पत्तियाँ ले आती हैं और उन्हें अपने बिल में रखती हैं। किसान जिस तरह अपने खेतों को अच्छी तरह जोतता, घास-फूस निकालकर बीज बोता है, उसी प्रकार यह चींटियाँ भी इन पत्तों का भली प्रकार निरीक्षण करती हैं, कहीं कोई कीड़ा या रोगाणु तो नहीं हैं। यदि पत्ता अच्छा हुआ तो वे इसमें एक विशेष प्रकार की फफूँद बोती हैं। पैदा की हुई इस फफूँद से ही इनका आहार चलता है। चींटी में स्वावलंबन के साथ गुण-दोष विवेचन की क्षमता आश्चर्यजनक है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

यदि कोई चींटी बँटवारा करना चाहे तो जिम्मेदार चींटियाँ उसके लिए नया बिल ढूँढ़ देती हैं। उसे विदा करते समय उन्हें यह ध्यान रहता है कि कहीं इसे आहार के अभाव में भूखों न मरना पड़े। इसलिए ये फफूँद का एक कण भी उसे देती हैं। इस कण को लेकर चींटी दूसरे बिल में जाती है और वहाँ अपनी कृषि जमाकर सुखपूर्वक रहने लगती हैं। तुच्छ जीव में मनुष्य से बढ़कर विवेक भी कम विस्मय बोधक नहीं।

प्रसिद्ध वैज्ञानिक फ्रिश के शिष्य डॉ० लिंडावर ने मधु-मक्खियों का बहुत दिन तक अध्ययन किया और बताया कि उनकी प्रवृत्तियाँ मानव-जीवन की गतिविधियों से विलक्षण साम्य रखती हैं। जिस प्रकार घर के मुखिया के आदेश पर घर के सब काम व्यवस्थापूर्वक चलते हैं, उसी प्रकार मधु-मक्खियों में एक रानी मक्खी होती है, छत्ते की सारी व्यवस्था का भार उस पर ही होता है। छत्ते के सब निवासी उसके निर्देशों का अच्छी प्रकार पालन करते हैं। इन मक्खियों में विभाग बँटे हुए होते हैं, कुछ मजदूर होती हैं, जिनका काम छत्ते को बनाना, टूट-फूट जोड़ना एवं छत्ते में कोई मर जाये, उसे वहाँ से ले जाकर श्मशान तक पहुँचाना होता है। कुछ सैनिक मक्खियाँ होती हैं, इनका काम है रानी मक्खी और छत्ते की बाहरी आक्रमणकारियों से सुरक्षा। मनुष्यों की फौज में कुछ सिपाही कायर और डरपोक हो सकते हैं, किंतु यह दुश्मन के संघर्ष में अपने प्राणों की भी परवाह नहीं करतीं। ये उनसे मृत्यु पर्यंत लड़ती हैं। कुछ मक्खियों का काम फूलों से पराग लाना और उससे शहद बनाना होता है। इस तरह जिसको जो काम मिला होता है, वह वही काम दत्त-चित्त करती रहती हैं।

छत्ते में दूसरी रानी मक्खी पैदा हो जाती है, तो उसके लिए परिवार न्यारा कर दिया जाता है। रानी मक्खी अपने लिये उपयुक्त स्थान की खोज में चलती है, पर वह एक दिन में नहीं मिल जाता। रानी मूर्ख नहीं होती, वह यद्यपि नन्हा-सा कीट ही है। कुछ समय

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

के लिए वह किसी पेड़ पर बसेरा डाल लेती है और अपने सभासदों को आदेश देती है कि वे ऐसा स्थान ढूँढ़ें जहाँ जल की समुचित मात्रा उपलब्ध हो, पराग के लिए फूल और घना जंगल हो तथा स्थान ऐसा हो जहाँ छत्ते की नींव जमाने में दिक्कत न हो। आमतौर पर यह जहाँ पहले छत्ते लगे होते हैं, उन स्थानों पर ही नया छत्ता बनाते हैं, उससे मोम की दीवार वृक्ष से चिपकाने में सुविधा रहती है।

स्थान के चुनाव में कई बार इनमें मतभेद हो जाता है। यदि दो-चार मक्खियों में ही विरोध रहे तब तो वे स्वयं अपनी भूल मानकर छत्ते में मिल जाती हैं, पर यदि मतभेद इतना हो कि दो दलों में विभक्त होने की स्थिति आ जाये तो रानी मक्खी अपनी समझदारी से काम लेती है, वह जिस पक्ष को उचित मानती है, उसे लेकर नये स्थान में चली जाती है और बाद में अपने विशेष दूत भेजकर अपने बिछुड़े साथियों को भी वहाँ बुला लेती है। इस स्थिति में विरोधी पक्ष चुपचाप चला आता है और अपने दल में सम्मिलित होकर काम करने लगता है। डॉक्टर लिंडावर के अनुसार मक्खियों में इससे भी विलक्षण मानसिक गतिविधियाँ चलती हों तो कोई आश्चर्य नहीं।

यह दो उदाहरण इसलिए दिये गये हैं कि मनुष्य यह न मान ले कि न्याय, नीति, ईमानदारी, विकास आदि की बौद्धिक क्षमतायें केवल उसे ही मिली हैं। जीवों में जीव अति सभ्य संसार में रहने का दावा कर बैठें तो उनकी बात को असत्य सिद्ध करना कठिन हो सकता है। ये उदाहरण इस बात के प्रतीक हैं कि संसार के संपूर्ण जीवों में व्याप्त आत्म-चेतना एक ही है। सबमें एक ही प्रकार की न्यूनाधिक नई-नई प्रवृत्तियाँ पाई जाती हैं। मनुष्य केवल इसलिए अपवाद है कि उसमें प्रत्येक जीवन की संभावनाएँ विलक्षण रूप से भरी गई हैं। वह अपने आप में एक स्वतंत्र सत्ता है, इसलिए उसे यह सोचने, समझने का अवसर मिलता है कि हमारे जन्म का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उद्देश्य क्या है ? और उस उद्देश्य को कैसे सार्थक किया जा सकता है ?

प्रो० जे० बी० एस० हाल्डेन का कथन है—"एक लाख वर्ष पूर्व कोई ऐसा एकाकी मनुष्य का जोड़ा था, जो अकेला एक ही था। उसी से आज के संपूर्ण मनुष्यों का आविर्भाव हुआ है। हम सब मनुष्य दूर के रिश्ते में सगे भाई हैं और सगे भाइयों जैसा व्यवहार ही हमें करना चाहिए" और आगे तत्त्व दर्शन की ओर बढ़ें तो डॉ० हाल्डेन के ही मतानुसार आज से लगभग ७००० लाख वर्ष पूर्व पृथ्वी में कोई एक प्राणी था, चाहे वह प्रोटोजोआ (एक कोषीय जंतु) था या फिर कोई आत्म चेतना संपन्न प्राणी, उसी से सृष्टि के संपूर्ण प्राणियों का आविर्भाव हुआ। इस तरह हमें मात्र मनुष्यों में ही भाई चारे का संबंध नहीं देखना चाहिए वरन् संपूर्ण प्राणियों में एक ही आत्म-चेतना का परिष्कार देखना चाहिए। संपूर्ण प्राणियों के प्रति मैत्री, करुणा और आत्म-भाव तत्त्वदर्शन का वह सिद्धांत है, जो हमें शीघ्र ही ईश्वर से मिला देता है, जब सब अपने ही भाई-बंधु, नाती-पोते, पिता-बाबा, माँ-बहन, बुआ-भतीजे हैं तो किसके साथ छल-कपट, अनीति और अन्याय किया जाये।

अपने परिवार के लिए हम अपनी आजीविका का ६६ प्रतिशत भाग लगाते हैं और थोड़ा-सा अपने लिए रखते हैं, क्योंकि हमें अपने प्रियजनों की सेवा से सुख, संतोष मिलता है। यदि इस दायरे को बढ़ाकर हम प्राणिमात्र के प्रति आत्म-भावना और समता का विस्तार कर लें और उसे समष्टि भाव से निष्ठापूर्वक पूरा करते रहें तो यह निश्चय है कि हमारे सुख-संतोष और आनंद की सीमा भी बढ़ी हुई होगी। प्रेम का पूरा आनंद एक-दो के साथ प्रेम भाव से ही नहीं मिल सकता, उसका जितना अधिक विस्तार कर सकते हैं, अर्थात घृणास्पद से भी यदि प्रेम करने का स्वभाव विकसित कर पायें तो अपने जीवन में बहुत अधिक आनंद और आह्लाद की अनुभूति कर सकते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इस विचारणा का आधार यह है कि संपूर्ण जीव-जगत एक ब्रह्म से स्फुरित हुआ है। इसी का नाम तत्त्व दर्शन है। सनातन धर्म और संस्कृति का विकास इस तत्त्व दर्शन से विकसित होने के कारण ही वह अकाट्य है। हमारे भारतीय धर्म-ग्रंथ कहते हैं— "प्रारंभ में एक ही ब्रह्म था। उसकी इच्छा हुई—'एकोऽहं बहुस्याम:' मैं एक हूँ बहुत हो जाऊँ। उसकी इस इच्छा-शक्ति ही का विस्तार अनेकानेक ब्रह्मांड और अनेक जीव-जंतुओं में दिखाई देता है।" संपूर्ण विविधता में भी वह एक ही अविनाशी अक्षर तत्त्व समाया हुआ है 'बहुनामाहं एकमेव' संसार में जो कुछ दिखाई देता है, उस सबमें एक मैं ही चेतन रूप में व्याप्त हूँ। जब हम इस बात को समझ लेते हैं, तब हमें प्राणियों के साथ व्यवहार के लिए ही एक नया दृष्टिकोण नहीं मिलता वरन् मनुष्य-जीवन की वर्तमान गतिविधियों को भी हम दोषपूर्ण देखने लगते हैं। और यह मानने को विवश होते हैं कि हमारे जीवन में जो अभाव, अशक्ति और अज्ञान है, उसे भौतिक पदार्थों से नहीं दूर किया जा सकता, वरन् आत्मा को विराट परमात्मा बनाकर ही हम कष्टों से मुक्ति और सच्चे आनंद की उपलब्धि कर सकते हैं।

योगवशिष्ठ, गीता आदि ग्रंथों में संपूर्ण जीवों में एक ही शक्ति और चेतन सत्ता के विद्यमान होने के वैज्ञानिक रहस्यों पर विस्तार से प्रकाश डाला है। पैंगलोपनिषद् में ब्रह्म के द्वारा सृष्टि रचना पर बड़ा सूक्ष्म प्रकाश डाला गया है और बताया गया है कि एक ही तत्त्व किस प्रकार विभिन्न जीव और पदार्थों का अस्तित्व धारण करता चला गया। पैंगल ऋषि महर्षि याज्ञवल्क्य के पास जाते हैं और तप करते हैं। १२ वर्ष तक तप करने से जब उनकी आत्मा शुद्ध हो जाती है, तब वे महर्षि से कहते हैं 'परम रहस्य कैवल्य मनुब्रूहीति पप्रच्छ' अर्थात भगवन् ! आप मुझे परम रहस्यकारी 'कैवल्य' का उपदेश करें। महर्षि याज्ञवल्क्य ने उन्हें बताया, "सृष्टि के आदि में केवल सत् ही था। वही नित्य, मुक्त,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अविकारी, सत्य, ज्ञान, आनंद से पूर्ण सनातन एक मात्र अद्वितीय ब्रह्म है, उसी से लाल, श्वेत, कृष्ण गुण वाली प्रकृति उत्पन्न हुई और यह चराचर जगत बन गया।"

शेर बहुत हिंसक जंतु है, किंतु समझ, सौंदर्य और वात्सल्य जैसे गुण उसमें भी विद्यमान हैं। वे अपने पारिवारिक जीवन में बहुत निष्ठावान होते हैं। आजन्म गृहस्थ जीवन की मर्यादाओं का पालन करते हैं और सभी पत्नियाँ एक बार प्रणय सूत्र में आबद्ध होने के पश्चात् अपने पति के साथ संबद्ध बनी रहती हैं। शेर और शेरनी का कदाचित ही कभी तलाक होता है। बच्चों को वे दोनों मिल-जुलकर बड़े लाड़-चाव से पालते हैं। प्रसिद्ध जीवशास्त्री श्री सलीम अली ने अनेक जीवों के अध्ययन के बाद बताया कि ब्रिटेन में पाये जाने वाले अधिकांश छोटे पक्षी एक पत्नी व्रत जीवन-यापन करते हैं। यूरोप में पाया जाने वाला स्टारलिंग जो एक प्रकार से मैना की आकृति का पक्षी है, दिसंबर के महीने में इसके विनाश के दिन होते हैं। कई बार तो आधे स्टारलिंग तक मर जाते हैं। उनमें से कईयों के जोड़े बिछुड चुके होते हैं। इस आघात को सहन करना और प्रेम विहीन जीवन-यापन करना स्टारलिंग के लिए कठिन पड़ता है। इन दिनों उनका बिलखना देखकर भावुक मनुष्यों से भी ऊँची इनकी मनःस्थिति प्रतीत होती है।

हमारे देश में पाया जाने वाला बया पक्षी दांपत्य-जीवन में निष्ठावान नहीं रहता और इस भूल का दंड भुगतता है। वह कई-कई विवाह करके अपने घोंसले में बहुधा कई-कई धर्म पत्नियाँ ले आता है और फिर उसकी पत्नियों में परस्पर द्वेष भाव, मार-पीट, कांट-कलह होती है। उस मार-धाड़ में उसकी भी काफी मरम्मत होती रहती है और बया अपनी भूल पर पछताता रहता है।

यह उदाहरण जहाँ यह बताते हैं कि मनुष्य जैसी बुद्धिशीलता, चतुरता, संसार के सब प्राणियों में होने से वे सब एक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ही जाति के जीव हैं, सब एक आत्मा के अंश हैं और उन्हें एक ही सार्वभौम नियम का पालन कर सुखी रहने और तोड़ने पर दुःख पाने को बाध्य होना पड़ता है।

डॉ० जे० डी० हक्सले चिड़ियों के जीवन के अध्ययन में बड़ी रुचि रखते थे। एक विलायती पक्षी क्रमटो का विवरण देते हुए उन्होंने लिखा—"यह चिड़िया बसंत आगमन पर विवाह की तैयारी करती है। नर एक स्थान पर बैठकर गाना गाता है। वह पेड़ों की टहनियाँ आदि एकत्रित करके रखता है और यह दिखाने का प्रयत्न करता है, मानो उसे उपार्जन, संरक्षण एवं गृहस्थ-निर्माण की कला की समुचित सामर्थ्य उपलब्ध है।" मनुष्य को भी तो विवाह से पूर्व अपनी क्षमता की ऐसी ही परीक्षा कर लेनी चाहिए। यदि उसमें उतनी योग्यता न हो तो विवाह की जिम्मेदारी वहन करने का दुस्साहस नहीं ही करना चाहिए।

मादा क्रीमटो नर के पास से गुजरती है और उसकी योग्यता परख लेती है, तभी उसका प्रणय स्वीकार करती है। कई दिन मादा परखती रहती है, कहीं उसे झूठे प्रलोभन तो नहीं दिये जा रहे हैं। जब पूरा विश्वास हो जाता है, तभी नर-मादा दोनों मिलाकर घोंसला बनाने की तैयारी करते हैं। अंडे सेने का काम भी दोनों मिल-जुलकर बारी-बारी से करते हैं।

ऐसे सैकड़ों उदाहरण हैं, जो यह बताते हैं कि संसार में जो भी विविधता शरीर और प्रकृति की है, चेतना सबमें एक है। मनुष्य की यदि कुछ विशेषता है तो यही कि उसमें विवेक भी है और वह अपनी चेतना को समझने और उसे संपूर्ण प्राणियों की आत्म-चेतना के साथ जोड़ते हुए, विश्व-विराट की अनुभूति की क्षमता से संपन्न है। यदि वह इस उद्देश्य को पूरा कर लेता है, तो इसी नर शरीर से नारायण जैसी पूर्णता में परिणत हो सकता है।

❐ ❐

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वे भी बोलते हैं, कोई समझे तो

भाषा और साहित्य द्वारा अपने विचार अभिव्यक्त करने और अपनी संवेदना से दूसरे साथियों को परिचित कराने की क्षमता सृष्टि के किसी भी जीवधारी को नहीं मिली है। केवल मनुष्य ही ऐसा है, जिसे यह सुविधा प्राप्त हुई है। किसी भी प्राणी को अपने समीपवर्ती या दूरवर्ती किसी अन्य प्राणी से कुछ कहना, बताना हो तो वे न बोलकर बता सकते हैं और न लिखकर। यह विभूति तो परमात्मा ने अपने उत्तराधिकारी राजकुमार मनुष्य को ही दी है।

यह मान्यता तभी तक सही है, जब तक कि मनुष्य अपने इस विशेष रूप से उपलब्ध उपहार का उपयोग मानवेतर जीवों की अपेक्षा उत्कृष्ट दिशा, आत्मशोध, आत्मकल्याण और लोकमंगल के लिए करता है। विचार, चिंतन, मनन और प्रतिपादन की विशेषता मनुष्य को छोड़ कर और अन्य किसी भी प्राणी को प्राप्त नहीं है। यह सारी योग्यताएँ मनुष्य को ही मिली हैं। यदि वह उनका उपयोग अपने स्वार्थ तक ही सीमित न रखकर पुण्य परमार्थ में करता है, तब तो यह ईश्वरीय अनुदान भी सार्थक है। यदि वह केवल लौकिक, भौतिक और इंद्रिय सुखों की पूर्ति तथा विकास में ही इस योग्यता को खर्च करता है, तो यही मानना पड़ेगा कि उसमें और अन्य क्षुद्र कहे जाने वाले जीव-जंतुओं में कोई अंतर नहीं है।

यह बात जीवशास्त्र में अब तक हुई उपलब्धि का अध्ययन करने से भी सिद्ध हो जाती है, क्योंकि मनुष्येतर प्राणियों की भी अपनी भाषा है। वह मूक तो हैं, पर मनुष्य को मिली बौद्धिक क्षमता से उनकी क्षमता कुछ कम नहीं है। वे अपनी इस भाषा का उपयोग करके भी मनुष्य की अपेक्षा कहीं अधिक व्यवस्थित, अनुशासित और सुख-शांति पूर्ण जीवन व्यतीत करते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

● व्यवस्था बुद्धि, जीव-जंतुओं की विलक्षण बुद्धिमत्ता

प्रसिद्ध जीव वैज्ञानिक रोमेन्स को एक बार बड़ा कौतूहल हुआ कि एक खोजी मधुमक्खी सैकड़ों मील दूर जाकर कोई पुष्पोद्यान अथवा जलाशय देखकर आती है। उसकी सूचना वह अन्य मधुमक्खियों को कैसे देती है ? उन्होंने शीशे के छल्ले बनाकर मधुमक्खी के छत्ते में फिट कर दिये। फिर कुछ मधुमक्खियों को विशेष प्रकार के रंगों से रंग दिया। तब कहीं उनकी विचार-विनिमय प्रणाली का अध्ययन करना संभव हुआ।

एक मधुमक्खी उड़ी और किसी दिशा में चली गई। वहाँ उसे ऐसे फूलों के पौधे मिले जो फूले भी थे और जिनमें पराग भी प्रचुर मात्रा में था। उसने कुछ पराग-कण इकट्ठे किये और मुँह में दबाये छत्ते को लौट आई। अन्य मधुमक्खियाँ उसे ऐसे घेरकर खड़ी हो गईं जैसे वह सब समाचार पाने के लिए उतावली हों। अब वह मधुमक्खी नाचने लगी। वह एक गोलार्द्ध में नाचती थी और रह-रहकर नाचने की दिशा बदल देती थी, उससे अन्य मधुमक्खियों ने पता लगा लिया कि फूल और पराग यहाँ से किस दिशा में कितनी दूर पर हैं ? नाच बंद करके उसने अपनी मूँछ सभी साथियों की मूँछ से स्पर्श करा कर कुछ संकेत दिया और फिर वह स्वयं भी अपने काम में जुट गई। यह नहीं कि उसने लोगों को सूचना देना भर पर्याप्त समझा हो। वह तो उसका थोड़ी देर का अपना सामुदायिक कर्त्तव्य था। उसे पूरा करने के बाद भी वह अपना काम करती है, जबकि मनुष्य है कि एक काम मिल गया फिर वह दूसरा काम छूना भी पसंद नहीं करेगा। हमारी बहुमुखी प्रतिभा के द्वार इसीलिए बंद रहते हैं कि हम अपनी क्षमताओं को क्रियान्वित करने में भी लज्जा अनुभव करते हैं।

श्री जगपति चतुर्वेदी ने अपनी पुस्तक "जीव-जंतुओं की बुद्धि" में इन संकेतों को स्पष्ट करते हुए बताया है कि यदि मधुमक्खी धीमे वेग से नाचती है तो उसका अर्थ यह होता है कि

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पराग की मात्रा, जिसकी उसने खोज की है, थोड़ी है। इसलिए वहाँ से थोड़ी मधुमक्खियाँ जाती हैं, पर यदि नाच का वेग तेज है तो वह पराग की मात्रा अधिक होने का सूचक माना जाता है और मधुमक्खियाँ अधिक आ जाती हैं। यदि फूल १०० गज की दूरी पर हैं तो वह गोलार्द्ध में नाचती है, यदि उनकी दूरी २-३ मील है तो वह अंग्रेजी के आठ बनते हैं उस शक्ल में नाचते हुए चक्कर काटती हैं। यह भी है कि वह एक मिनट में जितने बार चक्कर काटती है दूरी का अनुमान उसी से होता है। उदाहरण के लिए यदि वह एक मिनट में २२ बार नाचती है तो फूल ३०० गज दूर होंगे। यदि दूरी ३००० गज है तो चक्करों की संख्या ११ ही होगी। इसी प्रकार वह दिशा भी नाचते हुए दायें-बायें दिशा काटकर व्यक्त करती है। आश्चर्य तो इस बात का है कि यह प्रशिक्षण उन्हें किन्हीं माता-पिता से न मिला होकर जन्मजात अंतःप्रेरणा के रूप में मिलता है और यह बताता है कि अभिव्यक्ति चेतना का नैसर्गिक गुण है। इस गुण का उपयोग वे न केवल आहार जुटाने में वरन् छत्ते में अनुशासन, शत्रुओं से रक्षा एवं पारिवारिक व्यवस्थाएँ जुटाने में करते और बताते हैं कि मनुष्य भी यदि अपनी भाषा, साहित्य, कला का उपयोग तुच्छ भौतिक हितों में ही करता है; तो वह हमसे पिछड़ा है, क्योंकि हम उसकी अपेक्षा कहीं अधिक व्यवस्थित और शांति में हैं।

प्रसिद्ध जीवशास्त्री प्रो० हीथ ने दीमक के जीवन का गहन अध्ययन किया है। उन्होंने "जीव-जंतुओं की दुनिया" पुस्तक में उनके बीच प्रयुक्त होने वाली सांकेतिक भाषा के बड़े गूढ़ रहस्यों का भी पता लगाया। उन्होंने लिखा है कि दीमक जिस किले (बांबी) में रहती है, उसमें कई प्रकार के कमरे होते हैं। राजा-रानी एक विशेष भवन में रहते हैं, शेष सब छोटे-छोटे कमरों में। कोई दीमक भूखी होती है तो वह मजदूर दीमक के सींग को स्पर्श करती है। यही उनका भोजन माँगना है। यदि भोजन माँगने वाला बच्चा है

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

और वह भविष्य में उस किले का राजा बनने वाला हुआ तो उसकी भोजन माँगने की प्रक्रिया कुछ भिन्न रौबदार होगी। मज़दूर दीमक अविलंब अपने मुँह से कोई तरल पदार्थ निकाल देती है, तो उस उत्तराधिकारी राजकुमार के आहार के काम आता है। यदि माँगने वाला कोई मजदूर हुआ, तो मजदूर दीमक अपने पिछले हिस्से से आँतों से खाना निकालकर उसे देगा। यों दीमक की सार्वजनिक जीवन व्यवस्था बड़ी ही सुचारु होती है, तथापि वह एक कीड़ा है और उसकी सारी चेष्टायें खाने-पीने और परिवार के भरण-पोषण, रक्षण तक ही सीमित हैं। मनुष्यों को मिली इन कलाओं का उपयोग भी यदि इन्हीं बातों तक सीमित रहे, तो उसे भी दीमक की तरह का ही एक कीड़ा समझना चाहिए।

चींटी अपने विचार प्रगट करने और एक-दूसरे को संवाद पहुँचाने में चाहे कितनी मूक भाषा का प्रयोग करती हो, उसकी सूक्ष्मता और बुद्धिमत्ता का अनुमान मेजर हैगस्टन के इस प्रयोग से ही लगाया जा सकता है। मेजर हैगस्टन ने एक बार चींटी के बिल के पास खाने का एक छोटा सा टुकड़ा रख दिया, जो उसके अनुमान से एक चींटी नहीं उठा सकती थी। चींटी आई उसने उसे देखा और तुरंत बिल में पहुँची और अपने साथ १० मजदूर चींटियाँ ले आई। ग्यारहों ने उसे उठाया और घर ले गईं, इस बीच उन्होंने गुड़ के ढेले को पतली पेंसिल जैसा बनाकर उसके तीन टुकड़े किये। पहला टुकड़ा आधा इंच का था, दूसरा पौन इंच और तीसरा टुकड़ा लगभग डेढ़ इंच का था। एक चींटी आई उसने तीनों टुकड़ों को देखा, इस बीच और भी कई चींटियाँ आईं और उन टुकड़ों को भिन्न-भिन्न दिशाओं और दूरियों में पड़ा देख गईं।

थोड़ी देर पीछे चींटियों का समूह निकला, जिसमें १६१ चींटियाँ थीं। बिल से निकलते ही उनमें से २६ चींटियाँ पूर्व की ओर चली गईं, जहाँ सबसे छोटा टुकड़ा पड़ा था, शेष में से ४४ दक्षिण की ओर जिधर दूसरा टुकड़ा पड़ा था, ८६ चींटियाँ उधर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गई जिधर सबसे बड़ा टुकड़ा था। तीनों दल बात की बात में तीनों टुकड़े उठा ले गये और मेजर साहब खड़े सोचते रह गये। यदि इन चींटियों में अनुभव करने, सोचने और अपने मन की बात को सांकेतिक रूप से दूसरी चींटियों को समझा देने की योग्यता न होती, तो इतना व्यवस्थित कार्य वे कैसे कर लेतीं ? मनुष्य तो उससे भी सरल और स्पष्ट बुद्धि का स्वामी होकर भी उतनी व्यवस्था से नहीं रह पाता। परलोक की बात तो दूर अपनी बुद्धि का सही उपयोग न करके वह अपनी शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक, सामाजिक अथवा राष्ट्रीय सभी क्षेत्रों में अव्यवस्थाएँ ही फैलाता और अशांति ही बढ़ाता है। यदि अपनी बौद्धिक क्षमता का उपयोग मनुष्य ने मूक पशु-पक्षियों, जीव-जंतुओं की तरह केवल लौकिक हितों के लिए भी व्यवस्थित ढंग से किया होता, तो सार्वजनिक क्षेत्र आज इतना दूषित और उलझा हुआ न होता। मनुष्य-जीवन का दुःख, कष्ट, पीड़ा और कलह-क्लेश का अखाड़ा बना हुआ है वह इस बौद्धिक सामर्थ्य के दुरुपयोग के अतिरिक्त और कुछ नहीं है।

गीध अशुभ पक्षी माना जाता है पर अपनी भावनाएँ, अपने विचार तो वह भी व्यक्त कर लेता है। एक गीध जब कोई मरा हुआ पशु देखता है तो किसी ऊँचे वृक्ष की छत पर बैठकर एक विशेष प्रकार से "चैंव चैंव" की आवाज करके गर्दन घुमाकर संकेत करता है। इस संकेत में मरे पशु की किस्म, स्थान और कितने गीधों के लिए भोजन उपलब्ध है वह सारी बातें कह देता है। इस आवाज को जो भी दूसरा गीध सुनता है, चलने की तैयारी करने से पूर्व उसी तरह का संकेत अपने पीछे वाले गीधों के लिए कर देता है। अपनी जाति के प्रति आत्मीयता का यह भाव मनुष्य में भी आ गया होता तो आज लोग जाति-पाँति, ऊँच-नीच, वर्ग-भेद को लेकर झगड़ते नहीं। गीध एक-एक कर इकट्ठा होने लगते हैं। जितने आवश्यक थे, उतने गीध आ जाने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पर सब प्रथम संकेत देने वाले को संकेत देकर आगे चलने को कहते हैं; क्योंकि उसे उस समय उस पशु के मांस का सबसे नरम भाग खाने का अधिकार होता है।

हम यह सोचते हैं कि अन्य जीव-जंतु हमारी तरह बोल नहीं सकते, तो उनमें विचार करने की क्षमता का अभाव होगा। बुद्धि उनमें भी होती है। बात-चीत वे भी कर लेते हैं। "खग जानै खग ही की भाषा—ताते उमा गुप्त कर राखा" वाली बात है।

ये जीव-जंतु हमें गूँगे, बहरे दिखाई पड़ते हैं पर वस्तुतः वैसा है नहीं। वे आपस में घुल-घुलकर बातें करते हैं, एक-दूसरे के साथ विचार-विनिमय करते हैं और पारस्परिक सहयोग जुटाने में उस संभाषण का प्रयोग करते हैं। यह अलग बात है कि उनके संभाषण उपकरण मनुष्यों से भिन्न हैं और उनका शब्दकोष हमारे उच्चारण विधान से मेल नहीं खाता।

मिशिगन विश्वविद्यालय के कीट विज्ञानी डॉ० व्राडॉक के अनुसार कीड़े-मकोड़े भी परस्पर विचारों का आदान-प्रदान करते हैं; यदि उनमें यह क्षमता न रही होती, तो उनका जीवित रहना ही असंभव हो जाता, पक्षी निरर्थक चह-चहाते मालूम पड़ते हैं पर वस्तुतः वे अपनी प्रसन्नता, व्यथा, योजना, जानकारी आदि की सूचनाएँ अपने साथियों को देते हैं। ध्वनि के साथ-साथ उनकी मनःस्थिति घुली होती है, जिसकी जानकारी उस वर्ग के अन्य पक्षी प्राप्त करते हैं और उससे लाभ उठाते हैं। खतरा किसी एक को मालूम पड़ जाय, तो वह अपनी भाषा में अपने साथियों को सूचित कर देता है; फिर सब मिलकर उसी का उच्चारण करते हैं ताकि न केवल साथियों को आगाही हो जाय, वरन् शिकारी को उनकी सतर्कता एवं आक्रामक संभावना के कारण आक्रमण करने का इरादा ही बदलना पड़े।

छोटे कीड़ों की भाषा नहीं होती, वे अंग स्पर्श से विचारों का आदान-प्रदान करते हैं। यह स्पर्श ऐसे ही निरर्थक नहीं होता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वरन् उसकी एक व्यवस्थित संकेत शृंखला होती है; जिससे उस वर्ग के कीड़े भली प्रकार परिचित होते हैं। एक-दूसरे के किस अंग को किस पकड़ के साथ छुएँ और क्या हलचल करें, इस प्रक्रिया से वे साथियों को अपने मन की बात बता देते हैं। ध्वनि, स्पर्श, दृष्टि और हलचल के माध्यम से छोटे जीवों का आदान-प्रदान चलता है। हम अपने स्तर पर उन्हें मूक कह सकते हैं, पर वस्तुतः बोलते वे भी हैं। उनका उच्चारण इतना मंद होता है कि हमारे कान उन्हें सुन-समझ नहीं सकते; फिर भी वे जिह्वा से न सही शरीर के विभिन्न अंगों की हलचलों या रगड़ से ऐसी क्रमबद्ध ध्वनि उत्पन्न करते हैं, जिसे उनकी भाषा कहा जा सकता है।

बरसात में मेंढ़कों की टर्र-टर्र अकारण नहीं होती, इसमें वे अपनी मानसिक स्थिति का परिचय देते हैं। टिड्डे अपने पंखों को पिछले पैरों से रगड़कर ध्वनि उत्पन्न करते हैं, झींगुर की टाँगें मनुष्य द्वारा बजाये जाने वाले किसी वाद्य यंत्र की तुलना का ध्वनि-प्रवाह निःसृत करती हैं। जर्मन कीट विज्ञानी फेवर ने टिड्डों की भाषा खोजने के लिए योरोप भर के जंगलों की खाक छानी है। उसने टिड्डों के लगभग ४०० ध्वनि-संकेत और चौदह स्तर के प्रणय निवेदन टैप किये हैं। इन ध्वनियों को टैप पर सुनकर भी अन्य कीड़े उस जानकारी के अनुरूप ही अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं। योरोप के ग्राइलस, कंपेस्टस, ग्रावाइमैकुलेटस आदि झींगुर जातियाँ अपने अन्य साथियों की तुलना में अधिक मुखर होती हैं। मादा और नर के स्वरों में अंतर होता है इससे वे लिंग भेद को आसानी से पहचान लेते हैं और तदनुरूप शिष्टाचार बरतते हैं।

मधुमक्खी विशेषज्ञ मार्टिन लिंडेयर ने मधुमक्खियों के आदान-प्रदान के माध्यम को नृत्य माना है। वे अनेक तरह की कलाबाजियों के नृत्य करती हैं और संग्रहीत सूचनाओं की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जानकारी छत्ते के अन्य साथियों को देती हैं। इसी आधार पर उनका झुंड मकरंद प्राप्त करने के लिए उपयुक्त दिशा की जानकारी पाता है और कूच करता है। कुछ मक्खियाँ इस खोज-कला में और सूचना-संवाद देने की कुशलता में बहुत प्रवीण होती हैं, वे प्रायः इसी कार्य को रुचिपूर्वक करती रहती हैं।

प्रो० राबर्ट हिंडे के अनुसार पक्षी ही नहीं, कीड़े भी आँखों के इशारे से अपने बहुत से मनोभाव साथियों को बता देते हैं। यों आँखों की हलचल और चितवन में भी थोड़ा बहुत अंतर पड़ता है पर पुतलियों की संवेदनशीलता में वैसा बहुत कुछ रहता है, जिससे एक-दूसरे की भावनाओं का आदान-प्रदान हो सके। इस दृष्टि से छोटे प्राणी मनुष्यों से पीछे नहीं हैं। यों मनुष्य भी आँखों और पुतलियों के सहारे अपनी गुह्य मनःस्थिति को जाने-अनजाने साथियों पर प्रकट करते रहते हैं।

कार्लवाल फ्रिच ने मधुमक्खी नृत्य की अनेक मुद्राओं के फिल्म लिये हैं और बताया है कि उनकी क्या हलचल, कितनी दूर, किस दिशा में, किस स्तर की, क्या स्थिति है ? इसकी सूचना ठीक प्रकार देती हैं। मधुमक्खियों की इस संकेत भाषा के आधार पर उनने परीक्षा की तो उनका प्रतिपादन शत-प्रतिशत सही निकला।

जुगनू की तरह और भी कई कीड़े अपने शरीर से प्रकाश निकालते हैं। कैल कीड कीड़ा तो रेलवे सिगनलों की तरह लाल, हरी रोशनी जलाता-बुझाता रहता है। यह प्रकाश सदा एक जैसा नहीं चमकता। उसके जलने-बुझने, मंद एवं तीव्र होने में जो बारीक अंतर रहते हैं, उससे वे अपनी जाति वालों से आपसी वार्तालाप करते रहते हैं।

कितने ही जीवों का काम उनकी घ्राण शक्ति से ही चलता है। जीवनोपयोगी कितनी ही जानकारियाँ वे वस्तुओं एवं जीवों के शरीरों से निकलने वाली गंध के आधार पर ही प्राप्त करते हैं। इतनी ही नहीं उनकी विभिन्न शारीरिक, मानसिक परिस्थितियों से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विभिन्न प्रकार की गंधें निकलती हैं, उस वर्ग के प्राणी इन्हें सूँघकर एक-दूसरे की स्थिति का परिचय प्राप्त करते रहते हैं। रति प्रयोजन के लिए उनके शरीरों से विशेष रूप से तीव्र गंध निकलती है। यही वह सूत्र है जो उनकी वंश रक्षा की व्यवस्था जुटाये रहता है। बहुत छोटे अदृश्य कीड़े तो इस गंध के आदान-प्रदान से ही गर्भ धारण कर लेते हैं। ई० ए० विल्सन के अनुसार चींटियाँ अपने शरीर से एक रस निकालती और टपकाती चलती हैं, ताकि अन्य चींटियाँ उनके आह्वान पर विशेष प्रयोजन के लिए उसी रास्ते को सूँघती हुई बढ़ती चली आवें। चींटियों का पंक्तिबद्ध चलना इसी गंध के आधार पर होता है।

गंध के इस स्रवण और उसके माध्यम से पूर्ववाली चींटियों द्वारा छोड़े गये संकेत चिन्हों को चींटियों का संवाद या संदेश प्रेषण और ग्रहण ही कहा जाना चाहिए। यह तो सांकेतिक भाषा हुई। जीव-जंतुओं के स्थिर संवाद की एक अलग ही प्रणाली है। उनकी अपनी भाषा है इसमें कोई संदेह नहीं है।

● संवाद उनमें भी होता है

जैसा कि ऊपर बताया जा चुका है, कीट-पतंग गंध छोड़ते और सूँघते हैं। उनकी वाणी की अपेक्षा घ्राणशक्ति अधिक विकसित होती है। फलतः एक-दूसरे के शरीरों से विभिन्न प्रकार की जो गंध समय-समय पर निकलती रहती है, उनके सहारे वे यह जान लेते हैं कि दूसरे सजातीय किस स्थिति में हैं और वे किस प्रकार के सहयोग की अपेक्षा करते अथवा जानकारी देते हैं।

● जीवों की भाषा—विलक्षणता

जिन्हें वाणी प्राप्त है, वे अपने थोड़े से शब्दों के सहारे ही काम चला लेते हैं। अपने हर्षोल्लास अथवा दुःख-दर्द की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अभिव्यक्ति वे उतने से उच्चारण में ही कर लेते हैं। इससे उनका जी हल्का होता है, उत्साह मिलता है तथा दूसरे साथियों को अपनी ही तरह उत्तेजित करके संवेदना उभारना संभव होता है। इससे उनका स्नेह, सौज़न्य एवं सहयोग निखरता है। चिड़ियाँ जब चहचहाती हैं, उससे उनके शरीर का अंग-संचालन भी होता है। इस उच्चारण और संचालन को देखकर, उनके सजातीय यह पता लगा लेते हैं कि उसका अभिप्राय क्या है ? और उस जानकारी को प्राप्त करने के उपरांत उन्हें क्या करना चाहिए ?

यही बात पशुओं के संबंध में है। उनके शब्द और भी स्पष्ट होते हैं। झींगुर, मच्छर, मक्खियाँ जैसे कीट-पतंग भी शब्दोच्चारण करते हैं। मेंढ़क जैसे छोटे जीव भी कर्णकटु शब्द बोलते हैं। हल्की आवाज तो प्रायः सभी जीवों की होती है। जिह्व अथवा दूसरे अवयवों के सहारे वे ध्वनि करते और अपनी मनःस्थिति का अन्यों को परिचय देते हैं।

हम मनुष्य यदि अन्य प्राणियों की भाषा समझने का प्रयत्न करें, उनकी अभिव्यक्तियों और आवश्यकताओं को अनुभव करें तो निःसंदेह अपने परिवार का अबकी अपेक्षा असंख्य गुना विस्तार हो सकता है और उसी अनुपात से आत्मीयता का क्षेत्र बढ़ सकता है। अभी तो ६०० करोड़ मनुष्यों के ही एक मानव समाज से हमारा परिचय है, उनमें भी भाषा की एकता से ही घनिष्ठता एवं सहयोग का द्वार खुलता है। भाषा की दृष्टि से जिनके बीच आदान-प्रदान का माध्यम अभी नहीं बना है; वे मनुष्य समाज के सदस्य होते हुए भी, एक-दूसरे से अपरिचित जैसी स्थिति में पड़े रहते हैं।

मानवी भाषाओं के बीच एकता के क्षेत्र बढ़ाने के प्रयत्न चल रहे हैं। यदि प्राणियों की भाषा को समझने का क्षेत्र बढ़ सके तो जीवधारियों की दुनिया अब की अपेक्षा बहुत बड़ी हो सकती है। विकसित प्राणी अविकसितों को ऊँचा उठने का सहारा दे सकते हैं

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

और अविकसितों के सहयोग का बहुत बड़ा लाभ मनुष्य जैसे विकासवानों को मिल सकता है। प्रयत्न करने पर और ध्यान देने पर हम जीवधारियों की भाषा समझने में बहुत कुछ प्रगति कर सकते हैं।

बछड़े के रँभाने से पता चलता है कि उसकी जननी गाय उससे दूर चली गई है। चिड़ियों के नन्हें बच्चे भी माँ के दूर जाते ही चीं-चीं कर उठते हैं। पास आने पर पंख फड़-फड़ाकर प्रसन्नता प्रदर्शित करते हैं। कुत्ते का पिल्ला माँ की उपस्थिति में हर्ष-सूचक ध्वनि भिन्न रीति से करता है और दूर जाने पर रोने की आवाज भिन्न रूप से। दोनों स्थितियों में उसका स्वर एवं भंगिमा भिन्न-भिन्न होती है।

इससे स्पष्ट है कि भाव-संप्रेषण के लिए पशु-पक्षी भी विशिष्ट ध्वनि-क्रमों का निश्चित विधि से उच्चारण व प्रयोग करते हैं। यानी उनकी अपनी एक भाषा है। वे अपने वर्ग के जीव की भाषा ही समझते हैं। कुत्ता-कुत्ते की, गाय अपने बछड़ों की, बैल व अन्य गायों की, चिड़ियाँ चिड़ियों की भाषा अच्छी तरह समझने में समर्थ हैं।

बाघ की दहाड़ स्वर 'औं घ्.... ह' अथवा 'ऊं..... घ्.... ह' जैसा होता है। गुर्राहट 'गर्र र्र र्र' जैसी होती है। ऋतुमती शेरनी शेर को बार-बार पुकारती है। शेर उसे सुनकर वहीं से प्रत्युत्तर देता है और दोनों एक-दूसरे के समीप पहुँचते हैं। प्रणयकेलि के समय दोनों बहुत ही तेज आवाज करते हैं, मानो प्रचंड युद्ध हो रहा हो।

बाघ, चीते या तेंदुए बड़ी सतर्क चाल चलते हैं। उनकी पहचान का सर्वोत्तम माध्यम काकड़, चीतल, साँभर और हिरन की उच्च ध्वनियाँ ही हैं। काकड़ की आवाज 'बोक्' जैसी होती है, नर-चीतल भारी, दीर्घ-'सी' ध्वनि से सतर्क करता है, साँभर तीव्र शंख ध्वनि की तरह 'पैंड्ड' की आवाज करता है और श्रोता को

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सहसा चौंका देता है। बाघ, चीता, बघेरा या तेंदुआ की उपस्थिति का सर्वाधिक प्रामाणिक अनुमान इन्हीं आवाजों से होता है। साथ ही उत्तेजित बंदरों की 'खों-खों' या लंगूर की 'खुर्र-खुर्र' भी इन हिंसक प्राणियों की उपस्थिति का संकेत है।

यह हुई वन की 'भाषा'। वन की 'लिपि' को भी समझना आवश्यक है। नरम या आर्द्र मिट्टी पर पशुओं के पद-चिह्न ही यह लिपि है। उनसे वहाँ से गुजरने वाले पशु का वर्ग, आकार, गुजरने का समय तथा दिशा का सूचक होता है। वनवासी इन चिह्नों को पहचानने में प्रवीण होते हैं। पटु शिकारी भी इसमें दक्ष होते हैं। जरा-सी दबी घास या टूटी हुई डालें, सूखी कड़ी भूमि में भी पशु के जाने-आने की दिशा का पता चल जाता है।

वन में पशु-पक्षियों की बोलियों के भी अभिप्राय को समझना आवश्यक है। एक-दूसरे को अपनी उपस्थिति की सूचना देने के लिए अथवा मौज की लहर में हाथी जोरदार स्वर में चिंघाड़ते हैं- इं धा ऽ ऽ र, जबकि भय या उत्तेजना की स्थिति में वे फटी-सी और तीखी ध्वनि करते हैं—'पैं ऽ ऐं ऽ ऐं"। कभी-कभी हाथी 'गुर्र- र्र र्र' ध्वनि से गुर्राते हैं, जो क्रोध का परिचायक है। मानो कोई मोटर-इंजिन चालू किया गया हो।

हाथी कभी-कभी फुफकारते हैं—तेजी से। एक-दो फर्लांग दूर भी फुफकारने पर लगता है, मानो १५-२० फुट दूर से ही ध्वनि आ रही हो।

शहर और नगरों की होने वाली हलचलों का आभास हवा में गूँजने वाले शोर-शराबे से लग जाता है। कार, स्कूटर, ट्रक आदि के सड़क पर से गुजरने से उनकी आवाजों में रहने वाले अंतर से यह पता चलता है कि कौन गुजरा ? ताँगा, इक्का, धकेल, बैलगाड़ी, ऊँट-गाड़ी के आवागमन की बात बिना उन्हें देखे ही मात्र ध्वनि के सहारे जानी जा सकती है। अगल-बगल में बच्चों की उछल-कूद और बड़ों की भगदड़ में जो अंतर होता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

है, उसे कमरे में बैठकर भी बिना देखे जाना जा सकता है। हवा की तेजी, वर्षा की गति आदि की हलचल कान से सुनकर, आँखें मींचे-मींचे भी जानी जा सकती है। हवा में गूँजने वाली ध्वनियों के सहारे हम सहज ही समीपवर्ती वातावरण का अनुमान लगा सकते हैं।

जंगल की भी अपनी भाषा है। वन्य पशु-पक्षियों की उपस्थिति तथा हरकतों का अनुमान उसके संसर्ग से उत्पन्न होने वाली आवाजों के आधार पर सहज ही जाना जा सकता है। वन क्षेत्र के निवासी उनके अभ्यस्त भी होते हैं। शिकारियों को भाषा की अच्छी जानकारी होती है। जंगलों में निवास अथवा काम करने वाले यदि जंगल की भाषा न समझें, तो उनके सामने प्राण संकट खड़ा रहेगा। अस्तु जिस प्रकार शहर, गाँव में रहने वालों को उस क्षेत्र के निवासियों से संपर्क-साधन के लिए स्थानीय भाषा की जानकारी प्राप्त करनी होती है, उसी प्रकार जिनका वन्य प्रदेशों और उनमें रहने वाले प्राणियों से वास्ता पड़ता है, उन्हें "जंगल की भाषा जानना भी आवश्यक होता है।"

ग्रीष्म ऋतु में ताजे पद-चिह्न भी तेज हवा द्वारा धूल से भरकर पुराने लगने लगते हैं और शरद ऋतु में नरम मिट्टी पर छायादार हिस्से में कुछ पुराने निशान भी ताजे जैसे दीखते हैं। अभ्यास से सही पहचान की क्षमता आती है।

बाघ और तेंदुए के पद-चिह्नों का कुत्तों के पद-चिह्नों में साम्य होता है, पर बाघ और तेंदुए के पैरों के चिह्न कुत्ते के पग-चिन्हों से चौगुने से भी ज्यादा बड़े होते हैं। कुत्ते के पद-चिह्नों में पंजों के आगे नाखून के चिह्न दीखते हैं, बाघ-तेंदुए के नाखून चलते समय सिमटकर पंजों की गद्दियों में छिप जाते हैं। अतः उनके निशान नहीं होते। बाघ-तेंदुए के पग-चिह्न गोल से होते हैं, सामने की ओर चार छोटी अँगुलियों के चिह्न तथा पीछे गद्दी का तिकोना-सा निशान होता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हाथी के पग-चिह्न चक्की के पाट से होते हैं। हाथी के पैर के नाखूनों का निशान जिस ओर दीखे, वही उनके जाने की दिशा होती है। घास के पौधे की गिरी हुई या झुकी स्थिति से भी हाथी के जाने-आने की दिशा ज्ञात हो जाती है। टूटी घास के हरे या सूखे होने से गुजरने के समय का अनुमान हो जाता है। युवा हाथी-हथनियों के तलवे साफ और पद-चिह्न भी साफ होते हैं, किंतु प्रौढ़ वृद्ध हाथियों के पद-चिह्नों में उनके पैरों की बिवाइयों का निशान स्पष्ट दीख जाता है।

भालू के पिछले पैरों का निशान मानव पग-चिह्नों की ही तरह, किंतु कुछ कम लंबा होता है। एड़ी और पंजों के बीच की दूरी भी कम होती है। अगले पैरों के निशान लगभग आयताकार होते हैं। भालू के पग-चिह्नों में नाखूनों के निशान भी दीखते हैं।

टूटी शाखाएँ; टूटी या चर्वित घास, पेड़ों की छिली हुई-सी, नीचे गिरी छाल आदि से हाथियों के आने-जाने के बारे में बहुत कुछ पता चल जाता है।

नमकीन मिट्टी वाले स्थान में 'चाटन' के आस-पास छिपकर पशु देखे जा सकते हैं। पशुओं की लीद, मेंगनी इत्यादि से भी उनके बावत कई सूचनाएँ मिल जाती हैं। इसी तरह भालू, चीते, बाघों द्वारा पेड़ों के तनों पर पैना करने के लिए नाखूनों की रगड़ के चिह्नों से भी कई बातें जानी जाती हैं।

जब हाथी किसी शाखा को तोड़ता है, तो 'कड़ाक' या 'करड़ड़' की लंबी खिंचती-सी ध्वनि होती है। ऐसी ध्वनि की शीघ्र-शीघ्र एवं बार-बार आवृत्ति हो तो अनुमान होता है कि वहाँ हाथियों का पूरा समूह है। बंदर जब डाल तोड़ते हैं, तो ध्वनि नीचे से नहीं, पेड़ की ऊँचाई से आती है और वह हल्की तथा छोटी होती है। कुल्हाड़ी से काटी जा रही लकड़ी से 'खट-खट' आवाज आती है और उसमें नियमितता होती है। कठफोड़ा जब

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लकड़ी में चोंच मारता है, तो सर्वथा भिन्न 'खुट-खुट' की ध्वनि होती है।

जैसे जंगल में एक डाल टूटने की ध्वनि होती है—संभव है, यह किसी हाथी ने तोड़ी हो या बंदरों की उछल-कूद से टूटी हो या फिर लकड़हारे ने लकड़ी काटी हो। इसी तरह पेड़ों के हिलने के भी कई कारण संभव हैं—कपि-समूह की क्रीड़ाएँ, चीतल-साँभर आदि का चलना या हाथियों की हलचल।

इन सबकी समुचित जानकारी द्वारा ही चल रही गतिविधियों को समझा जा सकता है और तदनुकूल प्रतिक्रिया व तत्परता संभव है।

पत्तों-पेड़ों के हिलने से आने वाली ध्वनियाँ भी भिन्न-भिन्न होती हैं। हिरण, चीतल जैसे खुर-धारी प्राणियों के चलने से अधिक आवाज निकलती है। कठोर खुरों से पत्ते भी जोर से दबते हैं और अगल-बगल की झाड़ियाँ, पत्तियाँ भी हिलती हैं। हाथी मंदगामी तो होता ही है। उसके तलुए भी नरम होते हैं। इसलिए भूमि पर रखे जाने पर उन पैरों से कोई विशेष ध्वनि नहीं होती, पर उसके शरीर की रगड़ से पेड़-पौधे हिलते खूब हैं।

साँप जब घास-फूँस या शुष्क पत्तों पर चलते हैं तो सरसराहट होती है। गोह के चलने पर भिन्न तरह की ध्वनि होती है। खड़-खड़, खड़-खड़, क्योंकि उसके पाँव छोटे-छोटे होते हैं और दुम जमीन पर घिसटती चलती है।

अन्य प्राणियों की भाषा समझने एवं शब्दों को पहचानने में कठिनाई भी हो सकती है, पर भावों की परख तो और सरल है। भाषा में ध्वनि और शब्दों की भिन्नता रहने से उन्हें समझने में कठिनाई हो सकती है, पर भावाभिव्यक्ति तो सार्वभौम है। संसार के किसी भी कोने में जाया जाय, कष्ट के अवसर पर प्रायः सभी की विपन्न मुखाकृति होगी। सभी की आँखों में से आँसू टपकेंगे और विषाद की दर्द भरी छाया उभर रही होगी। प्रसन्नता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

के समय सर्वत्र हँसी, मुस्कराहट, आँखों में चमक दिखाई देगी। यही बात अन्य भावनाओं के संबंध में है। मुखाकृति से अंतरंग में घुमड़ती हुई शोक, रोष, क्रोध, आवेश, भय, चिंता, निराशा, उत्साह, उल्लास, कामुकता आदि के भाव सहज ही उभरते देखे जा सकते हैं।

भावाभिव्यक्ति की जो स्थिति मनुष्यों की है, वही अन्य प्राणियों के संबंध में भी पाई जाती है। उसमें थोड़ा बहुत ही अंतर होता है। मनुष्य अधिक संवेदनशील है, इसलिए भाषा की सूक्ष्मता की तरह उसे भावों की अभिव्यक्ति की अच्छी तरह करनी आती है। अन्य प्राणी भाषा की तरह भावों के प्रकटीकरण में पीछे हो सकते हैं, पर ध्यानपूर्वक उनके चेहरे को, आँखों तथा होठों को, अन्य अन्नयवों को देखा जाय; तो उनके भीतर काम कर रही भावनाओं, प्रवृत्तियों, आकांक्षाओं एवं संवेदनाओं को बहुत हद तक समझा जा सकता है। इस दिशा में यदि हम प्रयास करें तो मनुष्य परिवार से आगे बढ़कर, प्राणी मात्र में अपनी आत्मीयता विकसित कर सकते हैं और आत्म-विस्तार का अधिक लाभ उपलब्ध कर सकते हैं।

❐ ❐

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बदलती परिस्थितियों में स्वयं भी बदलें

परिस्थितियों के मनुष्य जीवन पर पड़ने वाले जबर्दस्त प्रभाव से इनकार नहीं कर सकते, पर वहाँ परमात्मा ने मनुष्य को ऐसी योग्यतायें भी दी हैं, जिनसे वह अपने आपको परिस्थितियों के अनुरूप ढाल सके। यदि मनुष्य ऐसा नहीं कर सकता, तो दंड भुगतने और असफल पड़े रहने का दोष उसी का है।

वस्तुतः परिस्थितियाँ संसार में कुछ हैं भी नहीं। अपने आपको परिवर्तनों के अनुसार बदलते न रहने की प्रतिक्रिया का नाम ही परिस्थितियाँ हैं। संसार में जितने भी प्राणी हैं, वे प्राकृतिक परिवर्तनों के साथ अपने आपको बदलते रहते हैं। यही कारण है कि वे बिना किन्हीं साधनों के भी मुक्ति, आनंद, स्वास्थ्य और नीरोगिता का जीवन जीते रहते हैं। एक-दूसरे को खा जाने की प्रवृत्ति पशुओं और जंगली जंतुओं की कही जाती है, तथापि आज मनुष्य जितना अशांत और द्वंद्वों में फँसा हुआ है, उतने तो वन्य-पशु भी नहीं हैं, इसका एकमात्र कारण परिस्थितियों के अनुरूप अपने आपको न बदलने का दोष है।

वातावरण परिवर्तनशील है। वस्तुएँ बदलती रहती हैं, किसी भी स्थान के अनुकूल बने रहने का तात्पर्य यह है कि परिस्थितियाँ चाहे जिस दिशा में मुड़ें, हमें उन बदलती हुई परिस्थितियों के साथ बदलने की अथवा परिस्थितियों के अनुसार अपनी शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक प्रणाली को ढालने की क्षमता होनी चाहिए। काम तभी चलेगा, जब हम इतने प्राकृतिक हों कि हमारी प्रत्येक गतिविधि प्राकृतिक परिवर्तनों के साथ बहती चली जायें, यदि हम उसका उल्लंघन करेंगे तो निश्चय ही रोग, शोक, हारी-बीमारी का कष्ट उठायेंगे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ध्रुवीय प्रदेशों में कुछ जंतु जैसे लोमड़ी, रीछ और गिलहरियाँ अपने आपको वहाँ की परिस्थितियों के समरूप रखती हैं। वहाँ वर्ष भर बर्फ जमी रहती है। बर्फ श्वेत होती है, यह जीव भी अपने बालों को श्वेत रखते हैं, इससे यदि कोई बाहरी व्यक्ति इनको ढूँढ़ना चाहे तो ढूँढ़ नहीं सकता। रंग की समरूपता के कारण यह अपने आपको बर्फ की चट्टानों के साथ इस तरह समायोजित कर लेते हैं कि शिकारी इनके पास घूमते रहते हैं, तो भी पहचान नहीं पाते। मनुष्यों को भी ऐसे ही समाज परिवर्तन की आवश्यकता पड़ती है। अन्य स्थानों पर पहुँचकर वह अपने आपको एकाकी अनुभव करके दुःखी अनुभव करता है; पर यदि उसने अन्य प्राणियों से अनुकूलन की विद्या सीखी होती, अर्थात उस वातावरण के अनुरूप अपने आपको ढाल लेने की योग्यता का उपयोग करता तो वह जहाँ भी जाता, वहीं परस्पर प्रेम, विश्वास, एकता और आत्मीयता स्थापित करके प्रसन्नता अनुभव करता।

मरुस्थल में पाई जाने वाली बकरियाँ, हिरण और ऊँट आदि वहाँ की प्रकृति को अक्षरशः ग्रहण कर लेते हैं, जिससे उनके शरीर भी भूरे और लहरियोंदार हो जाते हैं। कोई दूर से यह नहीं जान सकता कि वहाँ कोई खड़ा है क्या, और इस प्रकार वे अपने जीवन को सुरक्षित किये रहते हैं। कई सर्प जिस मिट्टी में रहते हैं, उसी रंग के हो जाते हैं। तितली पौधों-पौधों में जाकर उनके सौरभ और सौंदर्य का आनंद लेती है, इसके लिए वह किसी फूल से बँधती नहीं वरन् अपने आपको सभी फूलों के समान रंग-बिरंगा बना लेती है। टिड्डी जैसे कई कीड़े जो हरी-पत्तियाँ ही खाते हैं, अपने आपको हरा रखते हैं, वह हरे वृक्षों में बैठे रहते हैं, पर बाहर का कोई व्यक्ति उनका पता नहीं लगा सकता।

समुद्री चिड़ियाएँ जैसे फ्लावर्स, भारद्वाज (हार्क), टिटहरी आदि खुले स्थानों पर अंडे देते हैं। टिटहरी, सारस आदि पक्षी पानी के बीच खुले भाग में अंडे देते हैं। यदि वे अंडों का रंग

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अपनी मन-मर्जी से कुछ भी रखते, तो कभी भी कोई हमलावर जानवर आते और उन्हें उसी तरह मारकर खा जाते, जैसे सामाजिक जीवन में संग्रह-वृत्ति वाले धनी लोगों को, जो दूसरे पीड़ित प्रजा वर्ग की सुविधाओं का कभी भी ध्यान नहीं देते, चोर और डकैत लूट ले जाते हैं। सामाजिक जीवन से अपना ताल-मेल न रखकर अपनी खिचड़ी अलग पकाने वाले लोग अपने आप कितना ही अहंकार प्रदर्शित करें; पर भीतर अपनी सुरक्षा के लिए सबसे अधिक डरने वाले दुःखी लोग वे ही होते हैं। जो समाज की परिस्थितियों में बने रहते हैं, वह इन पक्षियों की तरह हैं, जो चौड़े में अंडे देते हैं पर उनका रंग इस तरह का रखते हैं कि जमीं के रंग में और उनके रंग में कोई अंतर दिखाई न दे। चील और बाज की आँखें बड़ी तेज होती हैं, वे ऊपर मँड़राते रहते हैं, पर उन्हें इन अंडों का पता भी नहीं चल पाता। समुद्र में एक चपटी मछली (फ्लैटफिश) पाई जाती है। इसी कोटि का सर्वत्र पाया जाने वाला जंतु गिरगिट है, ये जहाँ भी रहते हैं, अनुकूलन के द्वारा अपनी सुरक्षा बनाये रखते हैं। गिरगिट अपनी ओर किसी दुश्मन को आते देखता है तो वह जिस स्थान पर होता है, उस स्थान का रंग निकालकर उसी में छुप जाता है। दुश्मन समझ नहीं पाता और इधर से उधर निकल जाता है। कई बार वे कोई तीव्र रंग निकालकर दीवाल खड़ी कर देते हैं और आप स्वयं आपको बचाकर निकाल ले जाते हैं। प्रकृति के यह उदाहरण बताते हैं कि संसार में अस्तित्व उन्हीं का सुरक्षित है, जो स्थिति के अनुसार अपने आपको बदल सकते हों।

यह रंग बदलने की कला मनुष्य जीवन में बड़े काम आती है। यदि हम अपने वातावरण का चारों ओर चौकसी से निरीक्षण करते रहें। उदाहरण के लिए आज लोगों में खाँसी, खसरा, कैंसर, तपेदिक आदि रोग बढ़ रहे हैं, हमें देखना चाहिए कौन-सी बुराइयाँ हैं, जो इन्हें जन्म देती हैं। अप्राकृतिक रहन-सहन, आहार-विहार,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

धूम्रपान, आलस्य, असंयम आदि के कारण ही यह बुराइयाँ बढ़ती हैं; यदि हमारी भी परिस्थितियाँ ऐसी ही हैं, तो उनसे सुरक्षा का उपाय यही है, कि हम अपना रंग बदल डालें अर्थात् उन बुराइयों के आवरण को ही उतार फेंकें।

अनुकूलन की इस योग्यता का यह अर्थ नहीं कि यदि हम किसी बुरे समाज में जाते हैं, तो वहाँ की बुराइयों को आत्मसात करना प्रारंभ कर दें। ऐसी परिस्थितियों से बचाव की प्रेरणा 'कालिमा' नामक तितली से ले सकते हैं। इसके पंखों का ऊपरी रंग चमकदार होता है, परंतु सतह का रंग सूखी पत्ती की तरह का होता है। जब कभी वह किसी पौधे पर पंख सिकोड़कर बैठती है तो ऐसा प्रतीत होता है, जैसे यह कोई सूखी पत्ती हो। मनुष्य अपने मूल व्यक्तित्व को इस तरह आकस्मिक काल में छिपाकर अपनी सुरक्षा बनाये रख सकता है, पर जो अपने व्यक्तित्व को बढ़ा-चढ़ा कर दिखाते हैं, शेखी-खोरी करते हैं, वे राह चलते, चाहे जिन मामूली व्यक्तियों के द्वारा ठग लिये जाते हैं।

दंडकीट (हाइड इंसेंट) नामक कीड़ा सूखी टहनी की तरह का होता है, रंग भी उसी तरह का कुछ भूरा-काला-सा होता है, मोटाई भी पतली टहनी के समान ही होती है। इसके पंख ही बड़े होते हैं, पर अपनी इस विशेषता को वह बड़ी चतुराई से छिपाता है, जब किसी टहनी पर बैठता है, तो पंखों को शरीर से इस तरह चिपका लेता है कि दूर से देखने पर ऐसा लगता है, जैसे यह पत्तीदार कोई टहनी ही हो और इस तरह वह अपने आपको दुश्मन से बचा लेता है। ये उदाहरण बताते हैं कि वातावरण समकूलता से व्यक्ति अपनी आत्मरक्षा कर सकता है। इसमें उसे कुछ भी हानि नहीं होती।

बर्फीले क्षेत्रों में पाये जाने वाले रीछों के पास कोई वस्त्र नहीं होते, वे वहाँ के वातावरण को ही अपने में आत्मसात करके सुरक्षित रहते हैं। जिन दिनों बर्फ और कड़ाके की सर्दी पड़ती है,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बेचारे स्वयं भी जकड़कर बर्फ में दब जाते है। छह महीने तक भालू उसी में कुछ खाये-पिये बिना ही पड़ा रहता है। यदि आदमी की तरह उसने भी कृत्रिम जीवन बनाया होता, अधिक कपड़े पहनने और तंग मकानों में रहकर अपने आपको ज्यादा शानदार दिखाने की भूल उसने की होती; असंयमित जीवन बिताया होता, तो एक ही कड़ाके में ढेर हो गया होता। पर प्रकृति माता की गोद में पड़े रहने के कारण, उसमें इतनी क्षमता आ जाती है कि वह छह महीने दबा रहकर भी मरता नहीं; वरन् यह समय उसकी आयु-वृद्धि के काम आता है। छह महीने बाद जब धूप निकलती है, ऊपर की बर्फ पिघलकर बह जाती है, शरीर के रक्त में थोड़ी गर्मी आती है तो रीछ ऐसे ही अँगड़ाई लेकर उठ खड़ा होता है; जैसे रात की नींद लेकर सबेरे वह नई ताजगी प्राप्त कर रहा हो। प्रकृति का घनिष्ठ सान्निध्य हमें भौतिक परिस्थितियों से सदैव ही सुरक्षा प्रदान करता है।

सरलता और सीधापन प्रकृति का स्वभाव है। हम जब अपनी मान-मर्यादा, पद-प्रतिष्ठा, धन-पुत्रों के बनावटी आवरण उतार देते हैं; तो ऐसे ही सीधे, स्वाभाविक, सरल और सौम्य प्रतीत होते हैं, जैसे प्रकृति के दूसरे भोले-भाले प्राणी। कोई कहेगा, ऐसी स्थिति में तो जो आयेगा, हमें वह नष्ट कर डालेगा, बात ऐसी नहीं। प्रकृति हमें परिस्थितियों के अनुरूप संघर्ष के लिए भी उत्साहित करती है। हम उसके लिए तैयार न हों, तब तो एक दिन का जीवित रहना भी कठिन हो जाये। बुराइयों और दुष्प्रवृत्तियों का सामना करने के लिए भयानक आकार (टेरीफाइंग अपियरेन्स) भी रखना आवश्यक है। हरे टिड्डे (ग्रास-होपर्स) दुश्मन को देखते ही अपने पंख फैलाकर भयानक आकृति बना लेते हैं। दुश्मन अचंभे में पड़ जाता है और उसे चुपचाप लौटना ही पड़ता है। जब तक बन पड़ता है बिल्ली आत्म रक्षा के लिए भागती है, पर जब वह यह समझती है कि कुत्तों से बचकर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भाग निकलना संभव नहीं, तब वह अपने दाँत, मूँछें और आँखों को ऐसे तरेरकर खड़ी हो जाती है, कि कुत्तों की सिट्टी गुम हो जाती है और वे आक्रमण करना भूल जाते हैं। प्रकृति का यह गुण हमें बताता है कि यदि साहस और हिम्मत हो, तो मनुष्य अपने से कई गुने बलवान और भयानक व्यक्तियों से भी मोर्चा लेकर उन्हें परास्त कर सकता है। पर साहस बाहर की देन नहीं, मनुष्य को उसकी परिस्थिति के अनुरूप अपने ही भीतर से जाग्रत् करना पड़ता है। यदि परिस्थिति आने पर वह संघर्ष के लिए तैयार नहीं होता, तो कोई भी बुरा व्यक्ति या पशु उसे बंधन से मार सकता है।

शत्रु के विरोधी पक्ष में आ जाने के कारण भी हम अपनी सुरक्षा ही नहीं अनुभव करते, वरन् संसार की बुराइयों के विरुद्ध अपना साहस प्रदर्शित करने का यश भी प्राप्त करते हैं। प्रकृति का यह पक्ष हमें यह बताता है कि विरोधी शक्ति यदि न्यायोचित है, तो कम शक्तिशाली होने पर उसके साथ रहने से बुरे तत्त्वों से रक्षा हो जाती है। हमारे जीवन में सैकड़ों बुराइयाँ होती हैं। हम समझ नहीं पाते, उन्हें कैसे दूर करें, पर जब 'अणुव्रत' सिद्धांत के आधार पर कोई एक छोटी-सी अच्छाई का भी व्रत लेकर उसका निष्ठापूर्वक पालन करने लगते हैं; तो हमारी बुरी आदतों, बुरे तत्त्वों से रक्षा हो जाती है। इंग्लैंड के प्रसिद्ध वैज्ञानिक श्री बेट्स ने दक्षिण अमेरिका में जीव-जंतुओं की बहुत दिन खोज की थी। उन्होंने पीयरिड नामक तितली का वर्णन करते हुए लिखा है—"कुछ पक्षी 'हेलीकोनिड तितली' का शिकार नहीं करते। पर उन्हें पीयरिड का शिकार करना अच्छा लगता है। पीयरिड उनसे अपनी रक्षा करने के लिए विरोधी पक्ष के साथ हो जाती है। यद्यपि हेलीकोनिड में उसकी रक्षा करने की शक्ति नहीं होती, किंतु विरोध के फलस्वरूप ही वह आक्रमणकारी पक्षियों की दुष्टता को निरस्त कर देती है।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अपने आपको परिस्थिति के अनुकूल ढालने की यह सूझ मनुष्य ने भी विकसित की होती, तो वह आज परिस्थितियों का दास न होकर मनचाही परिस्थितियाँ उत्पन्न करने में समर्थ रहा होता। यदि हम अपने दृष्टिकोण में अब भी यह परिवर्तन कर लें, तो भविष्य में अपने जीवन को उन्नत, सफल और सुरक्षित बनाये रख सकते हैं। प्रकृति का यह सिद्धांत सदैव समरस और अकाट्य है।

वैटसिन नकल करने की कला (दि आर्ट ऑफ वैटसिन एडाप्शन) जीव विज्ञान (जूलाजी) का एक बहुचर्चित सिद्धांत है, जिसका अर्थ होता है, सामाजिक बुराइयों से आत्म-रक्षा के लिए अपने आपको बदलना। बुराइयाँ कमजोर मन वालों पर आक्रमण करती हैं। हमें अभ्यास से अपने मन को ऐसा बनाना चाहिए, जिसमें कोई भी अप्रिय परिस्थिति टकराकर ऐसे लौट जाये—जैसे पहाड़ की खाड़ी से समुद्री लहरें।

जर्मन वैज्ञानिक श्री मुलर ने बहुत दिन तक अध्ययन करने के बाद बताया कि वंश परंपरा से कुछ तितलियाँ भिन्न जाति की होती हैं, किंतु वे अपना रंग-रूप और आकार इस तरह बनाती हैं, जैसे वे तितलियाँ हों जो स्वाद में कटु होती हैं और दुश्मन जिन्हें खाना तो दूर पास तक नहीं आते। इस तरह वे कमजोर होने पर भी अपना बचाव कर लेती हैं।

ऐसी ही एक कला 'मुलैरियन' नकल करने की कला (दि आर्ट ऑफ मुलैरियन एडाप्शन) कहते हैं, इसमें समान प्रकृति के लोगों के साथ मिलकर ऐसा संगठन बनाया जाता है, जिससे दुश्मन अपने आप ही पीछा करना छोड़ दे। धर्मशास्त्र में उसे तितीक्षा की संज्ञा दी जाती है। स्वामी विवेकानंद जिन दिनों योगाभ्यास कर रहे थे, उनके मन में कई प्रकार की वासनाएँ भी भड़कती रहती थीं। कई बार यह गंदे विचार इतने तीव्र हो उठते थे, कि उनको हटाना कठिन हो जाता था। विवेकानंद हैरान थे,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

क्या करें तभी उन्हें एक विचित्र दृश्य दिखाई दिया। उन्होंने देखा एक ऐसा कीड़ा है, जो चींटियों को बार-बार पकड़कर खा जाता है। दुश्मन से बचने के लिए इन चींटियों ने एक तरकीब निकाली। पास ही कुछ ऐसी मकड़ियाँ रहती थीं, जिनका आकार और रंग-रूप इन चींटियों की तरह का था। चींटियों ने उनसे मेल-मिलाप कर लिया और उनके साथ ही रहने लगीं। चींटियों और मकड़ियों के पास-पास आ जाने से उनकी संख्या भी अधिक हो गई।

लोभी व्यक्ति को जिस प्रकार हित-अनहित का, अच्छे-बुरे का विवेक नहीं रहता, उसी प्रकार उस कीड़े ने भी चींटियों की बढ़ोत्तरी देखी तो उसकी प्रसन्नता का पारावार न रहा। उसने घात लगाई और टप से चींटी के धोखे में एक मकड़ी को पकड़ लिया। उस मकड़ी का स्वाद इतना जहरीला था कि कीड़े को मूर्च्छा आ गई। होश आने पर वह इतना डर गया कि फिर उसने दुबारा चींटियों को छेड़ने का साहस नहीं किया।

इस दृश्य ने स्वामी विवेकानंद को एक नई सूझ प्रदान की। उन्होंने निश्चय कर लिया कि यदि अब दुबारा कभी मन में दुर्वासनायें उठीं, तो उसे भी ऐसा ही कड़ुवा स्वाद चखायेंगे।

डोनाउस क्राइसीपस नामक तितली, ततैये (वास्प्स) और टिड्डे (हारनेट्स) आदि अपने दुश्मनों से बचने के लिए बहुत चमकीले, भड़कीले, लाल, काले, पीले रंग बदलते, दुर्गंध छोड़कर अपने आपको क्रोधी और जहरीला दिखाने की क्रिया करते हैं। दुश्मन डरकर भाग जाता है। इसी प्रकार मन में उठने वाली बुराइयों को उनके अप्रिय परिणाम दिखाकर डराया और धमकाया जा सकता है, उदाहरण के लिए पढ़ने में मन न लगे तो फेल हो जाने की निराशा का चित्रण, काम न करने पर भूख-प्यास और कपड़े-लत्ते की तंगी का चित्रण, कामवासना

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भड़के तो रोग, बुढ़ापा और दुर्बलता का चित्रण करके उन्हें डरा देना चाहिए।

हेनरी फोर्ड ने इसी सिद्धांत के रचनात्मक अभ्यास से औद्योगिक सफलता अर्जित की थी। उन्होंने अपने एक संस्मरण में लिखा है—"व्यापार के प्रारंभिक दिनों में मुझे बड़ा आलस्य और अनुत्साह रहता, उस समय मैं अच्छे संपन्न भविष्य की कल्पना करता। मेरे बँगले होंगे, कार होगी, दास-दासियाँ होंगे, सुख के सब साधन होंगे तो कितना अच्छा होगा ? इन कल्पनाओं से आलस्य का अंत हो जाता और मैं फिर दुगुने उत्साह से काम करने लगता। इसी तरह बढ़ते-बढ़ते मैं वर्तमान स्थिति तक पहुँचा।"

जीव-जंतु अपने बचाव के लिए इस सिद्धांत का बहुत उपयोग करते हैं, उदाहरण के लिए कटमछली ता सीपिया अपने शरीर की एक थैली में स्याही जैसा एक तरल पदार्थ भरकर रखते हैं। अपने इस संचित संस्कार के कारण वे निर्भय विचरण करते रहते हैं। यदि उन्हें सामने से कोई दुश्मन आता दिखाई दिया तो उस थैली का रंगीन तरल पदार्थ काफी दूर तक उँड़ेलकर पानी को रंगीन करके आप उसी में छिपकर बैठ जायेंगे। शत्रु शिकार को देख नहीं पायेगा या एक ओर खड़ा ताकता रहेगा, मछली अपनी मस्ती से दूसरी ओर निकल जायेगी। जिन लोगों में ऐसे रचनात्मक स्वभाव होते हैं, वे ही संचार में उच्च सफलताएँ प्राप्त करते हैं; जो निराशावादी हर परिस्थिति के फंदे में फँस जाने वाले होते हैं, उन्हें तो छोटे-छोटे आघात ही मारकर नष्ट कर देते हैं।

कछुआ, सीप, घोंघा, मगर आदि अपनी त्वचा के ऊपर सुरक्षात्मक आवरण रखते हैं और जी चाहे जहाँ विचरण करते हैं, उनका बड़े से बड़ा शत्रु भी कुछ नहीं बिगाड़ सकता। संसार में माना विषम परिस्थितियों के अंबार लगे हैं, पर मनस्वी व्यक्तियों के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लिए जैसे परिस्थितियाँ होती ही नहीं। वे मन को इतना मजबूत बना लेते हैं कि चाहे लाभ हो या हानि, सुख हो या दु:ख, यश मिले या अपयश, वे अपने आदर्श-सिद्धांतों ने उन सबको दबाकर मस्ती और निश्चिंतता का जीवन जीते हैं। ऐसे जीवन क्रम की गीता में बड़ी प्रशंसा की गई है। कर्मयोगी के लिए सांसारिक गतिविधियों से बचाव के लिए, ऐसा ही सुरक्षात्मक आवरण रखना नितांत आवश्यक होता है।

संसार ऐसा विलक्षण है कि यहाँ बहुत शक्तिशाली और रूप-गुणशील भी कई बार बुराइयों के आक्रमण की लपेट में आ जाते हैं। इसीलिए कहते हैं, न्याय और आत्मा की आवाज के लिए सबको समान रूप से प्रयत्नशील रहना चाहिए, चाहे वह छोटा हो या बड़ा। दोनों समाज में रहते हैं, दोनों को ही सामाजिक उत्तरदायित्वों का पालन अनिवार्यत: करना चाहिए।

शेर जंगल का राजा होता है, बड़ा शक्तिशाली और एकांतवासी। तो भी कुछ मक्खियाँ और कीड़े उसे ऐसे काटते हैं कि कई बार उसकी जान के ग्राहक ही बन जाते हैं। उत्तरी अमेरिका में एक खूबसूरत पक्षी 'स्कनस्' पाया जाता है। यह अपनी आत्म-रक्षा के लिए अपने शरीर से एक विशेष प्रकार की दुर्गंध निकालकर दुश्मन को भगाते हैं। तात्पर्य यह है कि हमें संघर्ष के क्षणों में उन परिस्थितियों के लिए तैयार रहना चाहिए, जो हमारी आदत के अनुकूल नहीं हों। इसके लिए 'पारक्यूपाइन' की तरह पहले से ही तैयार रहना चाहिए। इस जंतु के शरीर पर छोटे-छोटे काँटे होते हैं। स्याही के शरीर पर भी काँटे होते हैं, साधारणतया वे उसके काम नहीं आते। क्रोध और नाराजी भी मनुष्य के लिए हितकारक नहीं पर जिस तरह आत्म-रक्षा के लिए यह जीव अपने काँटों को तरेर कर उन्हें डराकर भगा देते हैं; उसी तरह मनुष्य को परिस्थितियों में क्रोध और नाराजी भी व्यक्त करना ही चाहिए। उस समय यही हमारे धर्म हो जाते हैं। राष्ट्र-रक्षा, सामाजिक जीवन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

में व्याप्त बुरे तत्त्वों, चाहे वह चोर-डकैत हों अथवा दहेज, रिश्वत लेने वाले, क्रोध और नाराजी के काँटे तरेरने ही चाहिए। यदि प्रजा अपना यह अस्त्र नहीं सँभालती, तो अवांछनीय तत्त्व बढ़ते हैं और समाज पर छाकर सर्वत्र त्रास देते हैं।

एटम बम विनाशकारी है, मानवता के हित में नहीं हैं पर सशस्त्र दुश्मन से बचाव की आवश्यकता आ पड़े, तो प्रकृति यह बताती है कि आत्म-रक्षा के लिए वैज्ञानिक अस्त्रों का भी प्रयोग करना धर्म है। टारपिडो और नारसीन नामक मछलियों में शरीर से विद्युत उत्पन्न करने की क्षमता होती है। साधारणतया वह ऐसा करती नहीं, पर यदि कोई दुश्मन पीछा करे तो ये विद्युत करेंट उत्पन्न कर उन्हें मार भगाती हैं। मनुष्य इन सभी गुणों का सम्मिश्रण है। प्रकृति अपने नन्हे जीवों के द्वारा उसे यह प्रेरणा देती है, कि परिस्थिति के अनुसार मनुष्य को अपनी प्रत्येक क्षमता का प्रयोग कर मानवता की रक्षा के लिए प्रयत्नशील रहना चाहिए।

अमेरिका में 'हागनोज्ड' नामक एक सर्प पाया जाता है, वर्जीनिया में 'अपोसम' नमाक कंगारू पाया जाता है, दोनों में परले सिरे की चतुराई होती है, यह जब अपने शिकारी को देखते हैं तो ऐसे निश्चेष्ट हो जाते हैं, मानो मर गये हों। शिकारी इन्हें मृत समझकर मुड़ता है तो यह पीछे से आक्रमण कर देते हैं। कई बार हमारे सामने भी ऐसी परिस्थितियाँ आती हैं, जब कोई क्षमता काम नहीं देती, उस समय "देखि दिनन को फेर रहिमन चुप ह्वै बैठिए" वाली कहावत के अनुसार चुप पड़ जायें, पर जैसे ही परिस्थिति अनुकूल आये फिर क्रियाशील हो जायें। आत्म-रक्षा, आत्म-विकास और सामाजिक संघर्ष हमारे जीवन की मूलभूत आवश्यकताएँ हैं, उसके लिए भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में भिन्न-भिन्न स्वरूप बनाकर नाटककारिता का परिचय और अभिनय का आनंद लेते हुए जीना चाहिए। ऐसा रंग-बिरंगा जीवन ही सफल और सार्थक होता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

● रहस्यमय मछली के रहस्य

परिस्थितियों के अनुसार स्वयं का जीवनक्रम बदलने और प्रतिकूलताओं में भी जी लेने की सूझबूझ ईल मछली में देखी गयी। वर्षा ऋतु इन मछलियों के लिए प्रतिकूल पड़ती है। इसलिए ये अगस्त के महीने में, वर्षा आरंभ होते ही अपना स्थान छोड़कर अन्यत्र चली जाती है और जनवरी में, जब वर्षा बंद हो जाती है तो वापस अपने स्थान पर लौट आती है। सत्रहवीं शताब्दी में जल-जंतु के शोधकर्त्ता वैज्ञानिक फ्रांसिस्को रेडी ने ईल मछली से संबंधित इन तथ्यों का पता लगाया।

यों सर्प की आकृति वाली इस मछली को सदा से रहस्यमय समझा जाता है। न केवल अपनी आकृति के कारण, वरन् प्रकृति से भी यह विचित्र और रहस्यमय है। ईसा से ३०० वर्ष पूर्व तक़ ईल मछली के बारे में यह दंत कथा प्रचलित थी कि वह एक विशेष जाति के सर्प से विवाह रचती है। पर सत्रहवीं शताब्दी में जल-जंतु शोधकर्त्ता फ्रांसिस्को रेडी ने ईल के बारे में यह विचित्र बात देखी। अगस्त से जनवरी तक यह मछली वर्षा-ऋतु में अपने पूरे परिवार के साथ बाल-बच्चों सहित अन्यत्र चली जाती है। इतने दिन तक वह कहाँ रहती है ? और यकायक बच्चे कहाँ से आ जाते हैं ? यह एक रहस्य ही बना हुआ था, जिसको फ्रान्सिस्को महोदय ने ढूँढ़ निकाला।

ईल की कई जातियाँ हैं। वे इंग्लैंड, आइसलैंड, उत्तरी अमेरिका, ग्रीनलैंड, जापान, आस्ट्रेलिया, आर्कलैंड, न्यूजीलैंड आदि देशों के नदी-तालाबों में पाई जाती हैं। पर जब उसको, ऋतुकाल आता है, तो प्रणय के लिए एवं प्रजनन की प्रक्रियायें संपन्न करने के लिए समुद्र में जाने का रास्ता ढूँढ़ती हैं। नदी, नालों को पार करती हुई वह किसी न किसी प्रकार समुद्र में जा पहुँचती हैं। वहीं वह पत्नी पद ग्रहण करती है और वहीं माता बनती है। यदि उसे समुद्र में जाने का अवसर न मिले तो फिर आजीवन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ब्रह्मचारिणी का कठोर व्रत पालन करके ही जिंदगी काट लेती हैं।

डेनमार्क निवासी एक जंतु वैज्ञानिक जौनेस सिमिट ने पता लगाया कि ईल समुद्र में ही नहीं वरन् एक विशिष्ट स्थान पर ही अपना गृहस्थ बनाती है। जहाँ-तहाँ वह प्रणय प्रजनन नहीं करने लगती। योरोप की ईल को अमेरिका तक पहुँचने की लंबी और कष्ट साध्य यात्रा में कई बार डेढ़ वर्ष या ढाई वर्ष तक लग जाते हैं। यह ठीक समय पर चलती है और ठीक समय पर पहुँचती है। यदि वह समय चूक जाय तो वह एक वर्ष रुकना ही उचित समझती है। समय की पाबंदी और चलने तथा पहुँचने का समय उसे रेलगाड़ी की तरह ही याद रहता है और उसमें वह चूक प्रायः नहीं ही करती।

यह बड़ी कठिन यात्रा है। इसमें उसे अनुकूल आहार न मिलने पर भूखा रहना पड़ता है। समुद्री क्षारों के प्रभाव से उसकी चमड़ी का रंग पलट जाता है। उस पर भी मांसाहारी जल-जंतुओं से प्राण बचें तब वह अपने प्रियतम का घर ढूँढ़ पाती है। उसका विवाह समुद्र की तली में २०० से ४०० मीटर नीचे होता है। वहीं वह अंडे देती है। अंडों से निकलने के बाद जब बच्चे चलने-फिरने लायक हो जाते हैं, तो उनके लालन-पालन का भार पति के कंधों पर नहीं डालती, वरन् अपने इन सब बाल-गोपालों को लेकर वह प्रदेश की ओर चल पड़ती है, जहाँ का अन्न-जल खाकर वह बड़ी हुई थी।

अविकसित समझी जाने वाली ईल मछली मर्यादा पालन और शालीनता के संबंध में विकसित और बुद्धिमान समझे जाने वाले मनुष्य को बहुत कुछ सिखा सकती है। प्रणय और प्रजनन के लिए उपयुक्त पात्र और स्थान का वह चुनाव करती है और उसे क्रीड़ा-कौतुक भर नहीं मानती वरन् उसके लिए कष्ट साध्य तपस्या भी करती है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मातृभूमि का प्यार उसे कितना अधिक है ? लौटकर वहीं आती है और समुद्र जैसे विशाल साधन संपन्न के सहारे रहने की अपेक्षा अपने यहाँ की अन्न-जल प्रदान करने वाली मातृभूमि में ही दुःख-सुख के दिन काटती है। भारत के अन्न-जल से पले, यहीं से शिक्षा पाये लड़के जब अधिक सुविधाओं के लालच में विदेशों के लिए भाग खड़े होते हैं और अपनी योग्यता से मातृभूमि को लाभान्वित करने के समय उसे धोखा देकर चले जाते हैं, तब यही कहना पड़ता है कि इन सुशिक्षितों से तो अशिक्षित 'ईल' हजार गुनी अच्छी है।

मर्यादाओं और नीति नियमों से बँधा शिष्ट शालीन व सभ्य जीवन ही प्रकृति की प्रेरणा है। परिस्थितियों के अनुसार अपने को बदल लेना और प्रगति क्षेत्र में आगे बढ़ते रहने पर ही जीवन सफल और सार्थक होता है। प्रकृति अपने परिवार के प्रत्येक सदस्य को यह शिक्षण देती है।

इन सभी गुणों और शिक्षाओं से ऊपर है स्वायत्तता का गुण। संसार में सामर्थ्यवान लोग ही जीते हैं। "वीर भोग्या वसुंधरा" का उद्घोष सबसे पहले हम भारतीयों ने ही किया था, उसका आधार हमारी समर्थता ही थी। सामर्थ्यवान मनुष्य ही अपने आपको, अपनी बुराइयों को तथा शत्रुओं को जीत सकता है। शेर, चीता, हाथी, मगर, सूअर यह जंगल के बलवान जीव जंगल में स्वच्छंद विचरण करते हैं, उन्हें केवल मनुष्य का ही भय रहता है और किसी का नहीं, क्योंकि उन्हें अपनी सामर्थ्य पर भरोसा होता है। वह अपनी शक्ति से आत्मरक्षा ही नहीं आक्रमण भी कर सकते हैं। इसी प्रकार मनुष्य को भी शक्तिशाली होना चाहिए। पाप और दुष्कर्म से बचे रहने के लिए हम भगवान से तो डरें पर अच्छे उद्देश्य, आदर्श और पार्थिव सुखोपभोग के लिए वर्तमान परिस्थितियों में हमें अपनी आंतरिक सामर्थ्य को इतना स्वायत्त बनाना चाहिए कि आवश्यकता पड़े तो विरोधियों को भी बलपूर्वक भी मार और भगाया जाया जा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सके। जनसंख्या बढ़ाने से नहीं, आंतरिक सामर्थ्य बढ़ाने से ही हम बदली हुई परिस्थितियों में अपने आपको स्थिर और सम्मानित रख सकते हैं, दुर्बलों के लिए तो संसार में पग-पग पर कठिनाइयों के अतिरिक्त कुछ नहीं है।

संसार परिवर्तनशील है। पल-पल पर परिस्थितियाँ बदलती रहती हैं, उनसे हम प्रभावित भी होते रहते हैं। इसीलिये प्रकृति ने हमें वह सारी क्षमतायें दी हैं, जिनका सम्यक उपयोग करके हम सुरक्षित, समाज और समर्थ व्यक्ति व जाति बन सकते हैं। प्रकृति के असंख्य छोटे-छोटे जीव इसी बात की प्रेरणा देते हैं।

❐ ❐

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org